शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 05, पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 31 जनवरी 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

एनडीए में सीट शेयरिंग को लेकर शुरू हुई वार्ता

बिहार में सत्ता का समीकरण बदलने के साथ ही राजग के घटक दलों के बीच सीट बंटवारे अनौपचारिक पहल शुरू हुई

नई दिल्ली

बिहार में सत्ता का समीकरण बदलने के साथ ही राजग के घटक दलों के बीच सीट बंटवारे अनौपचारिक पहल शुरू हो चुकी है। मुख्य रूप से यह काम दोनों बड़े घटक दलों भाजपा और जदयू को करना है। तीन अन्य सहयोगी दलों को भी सम्मानजनक सीटें देनी हैं, ताकि गठबंधन में सहजता बनी रह सके। इस प्रयास में जदयू की लोकसभा सीटें तो कम नहीं होंगी किंतु संतुलन के लिए उसे अन्य राज्यों का विकल्प दिया जा सकता है। उसके अभी 16 सांसद हैं, लेकिन बिहार में तीन कम सीटें देकर दूसरे प्रदेशों से भरपाई की जा सकती है। ध्यान रहे कि 2019 में भाजपा को जीती हुई पांच सीटें जदयू के लिए छोड़नी पड़ी थी।

भाजपा 17-18 सीटों पर लड़ना चाहती है चुनाव

सूत्रों के अनुसार बिहार में पांच दलों के गठबंधन वाले राजग में जदयू-भाजपा और लोजपा (दोनों गुट) के बीच सांसदों की वर्तमान संख्या के अनुरूप सीटों को बांटने की तैयारी है। लोकसभा की 40 सीटों वाले बिहार में भाजपा 17-18 सीटों पर लड़ना चाहती है। प्रदेश में उसके अभी 17 सांसद हैं। लोजपा (चिराग पासवान और पशुपति कुमार पारस की पार्टी) के पास भी छह सांसद हैं। तीनों दलों में सीटों का बंटवारा इसी अनुपात में होगा।

राजग के अहम सहयोगी रालोजपा और हम

किंतु उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी रालोजपा एवं जीतनराम मांझी की पार्टी हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) के पास अभी एक भी सांसद नहीं हैं, लेकिन ये भी राजग के अहम सहयोगी हैं।

गोडसे के वंशज शांति भंग कर रहे: सिद्धारमैया

बेंगलुरु

कर्नाटक के मांड्या जिले में हनुमान ध्वज उतारने के मामले पर जारी हंगामे पर सीएम सिद्धारमैया ने कड़ी नाराजगी जाहिर की है। सीएम ने आरोप लगाया कि नाथूराम गोडसे के वंशज राज्य की शांति को भंग कर रहे हैं। मांड्या जिले के केरागोडु गांव में सोमवार को जिला प्रशासन ने 108 फीट ऊंचे स्तंभ से हनुमान ध्वज उतरवा दी थी, जिसका स्थानीय लोगों ने कड़ा विरोध किया था। भाजपा और जेडीएस इस मुद्दे पर सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रही हैं।

शांति भंग करने वाले गोडसे के वंशजः इस पूरे विवाद पर सीएम सिद्धारमैया ने कहा हमारे बीच ऐसे भी लोग हैं, जो गोडसे की पूजा करते हैं। हालांकि वे महात्मा गांधी की बात करते हैं। शांति भंग करने वाले गोडसे के वंशज हैं। लोगों को समाज में शांति के लिए प्यार और विश्वास के साथ रहना चाहिए। किसी को भी सांप्रदायिक भावनाएं भड़काने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। सीएम सिद्धारमैया ने आरोप लगाया कि राजनीतिक लाभ के लिए शांति भंग करने की कोशिश की जा रही है।

राजनीतिक लाभ हासिल करने की कोशिशः सिद्धारमैया ने दोहराया कि केरागोडु पंचायत ने किसी धार्मिक या राजनीतिक झंडे की नहीं बल्कि राष्ट्रीय ध्वज या कर्नाटक ध्वज को फहराने की ही अनुमति दी गई थी। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया, वे (केरागोडु में कार्यक्रम के आयोजक जिन्होंने भगवा झंडा फहराया था) कार्यक्रम आयोजित करने की अनुमति के लिए अपने लिखित आवेदन के खिलाफ क्यों गए यह राजनीतिक लाभ हासिल करने और समाज में अशांति पैदा करने के लिए किया गया था।

नड्डा ने कुशवाहा को आग्रहपूर्वक राजभवन बुलाया

ऐसा संकेत भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के उस कदम से मिलता है, जब उन्होंने पटना में नई सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में हिस्सा लेने के लिए कुशवाहा को आग्रहपूर्वक राजभवन बुलाया था। काराकाट जा रहे कुशवाहा उस दिन नड्डा का संदेश मिलते ही बीच रास्ते से लौट गए थे। ऐसे में माना जा रहा कि उन्हें दो सीटें मिल सकती हैं। मांझी को एक सीट तो पक्की है। दूसरी के लिए दबाव बना रहे हैं। भाजपा के सामने बड़ी दुविधा लोजपा के दोनों गुटों को लेकर है। चिराग पासवान अपने चाचा पशुपति पारस से खफा हैं। उन्हें अपनाने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं हैं।

एएमयू के अल्पसंख्यक दर्जे को कोर्ट सामाजिक न्याय और बराबरी के आधार पर परखे

नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (एएमयू) के अल्पसंख्यक दर्जे पर सुप्रीम कोर्ट में अपनी बहस पूरी कर ली। केंद्र ने कहा कि एएमयू न तो अल्पसंख्यकों द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय है और न ही उनके द्वारा प्रशासित होता है। केंद्र की ओर से बहस करते हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि कोर्ट को एएमयू के अल्पसंख्यक दर्जे को सामाजिक न्याय और बराबरी के आधार पर परखना चाहिए।

उन्होंने कहा एएमयू की अल्पसंख्यक दर्जा होने की दलील स्वीकारने से एससी, एसटी, पिछड़ा और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग जिसे आरक्षण मिलना चाहिए, उन्हें वहां आरक्षण नहीं मिलेगा और जिनके पास पैसा और सब चीजें होंगी उन्हें सिर्फ धर्म के आधार पर आरक्षण मिलेगा। इसलिए अल्पसंख्यक दर्जे को कड़ी कसौटी पर परखा जाना चाहिए।

कोर्ट को अल्पसंख्यक दर्जे को कड़ाई से परखने की जरूरत

हालांकि, पीठ ने उनकी इस दलील पर कहा कि संविधान का अनुच्छेद 30 (अल्पसंख्यकों को पसंद के संस्थान स्थापित करने और प्रबंधन की स्वतंत्रता) इसका अधिकार देता है। मेहता ने कहा इसीलिए कोर्ट को अल्पसंख्यक दर्जे को कड़ाई से परखने की जरूरत है।

यूपी में इंडिया गठबंधन में टूट का खतरा!

कांग्रेस से बात किए बिना सपा ने घोषित किए अपने 16 प्रत्याशी

लखनऊ

उत्तर प्रदेश में इंडिया गठबंधन को तगड़ा झटका लगा है। समाजवादी पार्टी नेता अखिलेश यादव ने अपने 16 प्रत्याशियों की पहली सूची जारी कर दी है। उन्होंने कांग्रेस को प्रदेश में 11 सीटें दी हैं, लेकिन कांग्रेस नेता लगातार यह कह रहे थे कि प्रदेश में इतनी कम सीटें उन्हें स्वीकार नहीं हैं। वे 20 से कम सीटों पर मानने के लिए तैयार नहीं हैं। लेकिन कांग्रेस से अंतिम बातचीत के पहले ही अपने प्रत्याशियों की सूची जारी कर अखिलेश यादव ने अपनी तरफ से डील फाइनल कर दी है। इससे यूपी में इंडिया गठबंधन में टूट का खतरा बढ़ गया है।

राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा के यूपी में प्रवेश से पहले ही अखिलेश यादव की इस कोशिश को कांग्रेस के लिए तगड़ा झटका माना जा रहा है। इंडिया गठबंधन की ओर से यह प्रचारित किया जा रहा था कि सभी सहयोगी दल मिलकर चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। सभी साथ मिलकर चुनाव प्रचार में उतरने की रणनीति अपनाएंगे।

लेकिन फिलहाल राहुल गांधी की यात्रा के यूपी में प्रवेश से पहले ही अखिलेश यादव ने अपनी सूची जारी कर यह साफ कर दिया है कि समाजवादी पार्टी अपनी रणनीति पर आगे बढ़ने के लिए तैयार है। समाजवादी पार्टी नेता राजेंद्र चौधरी ने कहा कि उनकी पार्टी ने सहयोगी दलों का पूरा सम्मान रखा है।

भाजपा नेता की हत्या: 15 दोषियों को फांसी की सजा

तिरुवनंतपुरम

केरल की एक अदालत ने अलप्पुझा में दो साल पहले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक नेता की हत्या के मामले में प्रतिबंधित इस्लामिक कट्टरपंथी संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) से जुड़े 15 दोषियों को मौत की सजा सुनाई है। भाजपा अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) मोर्चा के नेता के मर्डर केस में कोर्ट ने इन्हें एक हफ्ते पहले ही दोषी करार दिया था। मामले में मावेलिक्कारा की अतिरिक्त जिला सत्र अदालत ने अब सजा का एलान किया है। सजा का एलान अतिरिक्त जिला जज वीजी. श्रीदेवी की तरफ से किया गया। अभियोजन पक्ष ने मामले में दोषियों के लिए अधिकतम सजा की मांग की थी और कहा था कि सभी दोषी प्रशिक्षित हत्यारे हैं।

गुजरात की झांकी को मिला पीपुल्स चॉइस अवॉर्ड

नई दिल्ली

26 जनवरी को गणतंत्र दिवस पर कर्तव्य पथ पर हुई परेड के दौरान गुजरात की झांकी ने 'पीपुल्स चॉइस अवॉर्ड' में पहला स्थान हासिल किया है। साथ ही 'जज चॉइस' में दूसरा स्थान मिला है। गुजरात की झांकी धोर्डो पर्यटन गांव की थीम पर आधारित थी। गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने मंगलवार को ट्वीट कर इसकी जानकारी दी। गुजरात के मुख्यमंत्री की सचिव अवंतिका सिंह औलख ने कहा कि यह गुजरात के लिए गर्व की बात है। सीएम ने हमें लगातार प्रेरित किया और राज्य की

जनता ने भी हमारा साथ दिया। 75वें गणतंत्र दिवस पर परेड के दौरान देश के राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और विभिन्न मंत्रालयों द्वारा कुल 25 झांकियां प्रस्तुत की गईं।

भारत के पश्चिमी सिरे पर गुजरात के कच्छ जिले में स्थित एक छोटा सा गांव धोर्डो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का पर्याय बन गया है। यह सीमावर्ती गांव सुरम्य सफेद रण के प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता है, जो अपने पारंपरिक हस्तशिल्प, लोक संगीत और वार्षिक रण उत्सव का जश्न मनाता है।

गणतंत्र दिवस परेड के मार्चिंग दस्तों में सिख रेजिमेंट को सर्वश्रेष्ठ चुना गया

नई दिल्ली

गणतंत्र दिवस परेड में कर्तव्य पथ पर मार्चिंग दस्तों में सिख रेजिमेंट की टुकड़ी को तीनों सेनाओं के बीच सर्वश्रेष्ठ चुना गया है। मेजर सरबजीत सिंह की अगुवाई में भारतीय थलसेना की सिख रेजिमेंट की एक टुकड़ी ने मार्च किया था। संस्कृति मंत्रालय की झांकी भारतः लोकतंत्र की मां ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। न्यायाधीशों के तीन पैनलों के मूल्यांकन के आधार पर यह फैसला लिया गया है। रेजिमेंट का आदर्श वाक्य निश्चय कर अपनी जीत करूं और युद्ध घोष बोले सो निहाल, सत

श्री अकाल है। इस रेजिमेंट को अब तक 82 युद्ध सम्मान, 16 थिएटर सम्मान, 10 विक्टोरिया क्रॉस, 21 इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट, दो परमवीर चक्र, तीन अशोक चक्र, एक पद्म विभूषण, दो पद्म भूषण, 11 परम विशिष्ट सेवा पदक, 14 महावीर चक्र, 12 कीर्ति चक्र और दो उत्तम विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया जा चुका है। इसके अलावा रेजिमेंट को 72 शौर्य चक्र, एक पद्मश्री, 19 अति विशिष्ट सेवा पदक, आठ वीर चक्र, नौ युद्ध सेवा पदक, 293 सेना पदक, 61 विशिष्ट सेवा पदक और सात अर्जुन पुरस्कार मिले हैं। सिख रेजिमेंट की स्थापना शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह के सिपाहियों ने 1846 में की थी। इसने उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत (ब्रिटिश भारत का एक प्रांत) और प्रथम विश्व युद्ध के दौरान टोफ्रेक (1885), सारागढ़ी (1897), ला बस्सी (1914) और न्यूवे चैपल (1914) जैसी कई लड़ाइयों और अभियानों में अहम भूमिका निभाई है।

सीएम को आफर है, लॉजिस्टिक पार्क बनाने के लिए केंद्र ओर राज्य सरकार मिलकर काम करे : नितिन गडकरी

जबलपुर

केंद्रीय सड़क और राज्य मार्ग मंत्री नितिन गडकरी मंगलवार को जबलपुर पहुंचे उनके साथ मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव प्रहलाद पटेल एवं अन्य मंत्री भी जबलपुर पहुंचे जबलपुर पहुंचने पर मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव ने अगवानी की। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी व मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। कन्या पूजन के बाद कार्यक्रम की शुरूआत की। जबलपुर के वेटरनरी कालेज मैदान में इस दौरान उन्होंने नौ राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की लोकार्पण एवं शिलान्यास किया गया।

यह परियोजना लगभग 2367 करोड़ की हैं, जिसमें लगभग 226 किमी की सड़क बनाई जानी है। इनमें मुख्यतौर पर एनएच 539 के टीकमगढ़-झांसी सड़क पर स्थित जामनी नदी पर पुल का निर्माण, चंदिया घाटी से कटनी बायपास तक 2 लेन सड़क उन्नयन कार्य, एनएच 339 के बमीठा से खजुराहो हिस्से का चार लेन चौड़ीकरण का लोकार्पण किया गया। वहीं गुलगंज बायपास से बरना नदी तक दो लेन सड़क उन्नयन कार्य, बरना नदी से केन नदी तक दो लेन सड़क निर्माण, शहडोल से सगर टोला तक दो लेन सड़क उन्नयन कार्य के साथ एनएच 44 (म.प्र.) के अंतर्गत ललितपुर-सागर-लखनादौन खण्ड में कुल 23 वीयूपीएस, पुल, सर्विस रोड का निर्माण, एनएच 44 के सुकतारा, खुरई और खवासा में तीन फुट ओवर ब्रिज का निर्माण कार्य और बंजारी घाटी एनएस 44 पर 2 ब्लैक स्पॉट का सुधार कार्यों का शिलान्यास किया। नितिन गडकरी ने कहा की पहले मध्य प्रदेश को बीमारी राज्य कहकर बुलाते थे, आज वह प्रदेश विकास कर रहा है।

हिमाचल की कांग्रेस सरकार कर्मचारी विरोधी: भाजपा

शिमला

हिमाचल प्रदेश में विपक्षी दल भाजपा ने कांग्रेस के नेतृत्व वाली सुक्खू सरकार को कर्मचारी विरोधी करार दिया है। भाजपा का कहना है कि प्रदेश सरकार के खिलाफ कर्मचारियों में भारी आक्रोश है और वे सड़कों पर उतरने को मजबूर हैं। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व सांसद सुरेश कश्यप ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि जिस प्रकार से पूरे प्रदेश में कर्मचारी सड़कों पर है

और अपना अधिकार मांग रहा है उसे साफ होता है कि यह सरकार कर्मचारी विरोधी है। प्रदेश में सभी वर्गों के कर्मचारी चाहे वह डॉक्टर, आईपीएस, पीडब्ल्यूडी, पुलिस, आउटसोर्स, एसएमसी, एचआरटीसी, बिजली बोर्ड, पेंशन भोगी, सभी निगम और बोर्ड सभी परेशान और हताश है।

उन्होंने कहा कि पेंशनरों को राज्य स्तरीय पूर्ण राज्यत्व दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू से पूर्ण आशा थी कि पेंशनरों के देय आर्थिक लाभों पर कोई घोषणा होगी, परंतु पेंशनरों को निराशा ही मिल पाई। उम्मीद थी कि पेंशन संशोधन की 80 फीसदी बकाया राशि, ग्रेच्युटी, लीव-एन-कैशमेंट, कम्युटेशन, महंगाई भत्ते की किस्तें, चिकित्सा बिलों के भुगतान के लिए पर्याप्त बजट न मिलना आदि को पूरा करने हेतु कम से कम महंगाई भत्ता की किस्त जारी करने की घोषणा तो हो जाएगी।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री लॉन्च करेंगे एमओई - एआईसीटीई इन्वेस्टर नेटवर्क

नई दिल्ली

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान बुधवार को नई दिल्ली में शिक्षा मंत्रालय (एमओई) - एआईसीटीई इन्वेस्टर नेटवर्क कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। इसमें उच्च शिक्षा सचिव संजय के. मूर्ति, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के अध्यक्ष प्रोफेसर टी.जी. सीताराम, उपाध्यक्ष डॉ अभय जेरे, सदस्य सचिव प्रो. राजीव कुमार और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहेंगे। एमओई - एआईसीटीई इन्वेस्टर नेटवर्क शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एआईसीटीई और शिक्षा मंत्रालय के इनोवेशन सेल (एमआईसी) की संयुक्त पहल है। नेटवर्क का लक्ष्य छात्र या संकाय के नेतृत्व वाले प्रारंभिक चरण के स्टार्टअप को महत्वपूर्ण वित्तीय सहायता, सलाह और रणनीतिक मार्गदर्शन प्रदान करना है।

एंटी टैंक मिसाइल सेमी-एक्टिव मिशन होमिंग के परीक्षण पूरे, उत्पादन की तैयारी

नई दिल्ली

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने 120 मिमी एंटी टैंक मिसाइल सेमी-एक्टिव मिशन होमिंग (एसएएमएचओ) के सभी परीक्षण सफलतापूर्वक पूरे कर लिए हैं। अब इस मिसाइल के उत्पादन की तैयारी है, जिसके बाद उपयोग के लिए भारतीय सेना को दी जाएगी। यह एक बहुउद्देशीय एंटी-आर्मर गाइडेड मिसाइल है, जो टैंकों और कम उड़ान वाले लड़ाकू हेलीकॉप्टरों को मार गिराने की क्षमता रखती है।

इसे आधुनिक बख्तरबंद वाहनों और टैंकों की विस्फोटक प्रतिक्रियाशील कवच सुरक्षा को नष्ट करने के लिए डिजाइन किया गया है। डीआरडीओ ने 120 मिमी एंटी टैंक मिसाइल सेमी-एक्टिव मिशन होमिंग (एसएएमएचओ) को भारतीय सेना के स्वदेशी अर्जुन टैंकों के लिए

अपनी पुणे स्थित आमार्मेंट रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट लैब में विकसित किया है। पहले इस एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल को मूल रूप से अर्जुन की 120 मिमी राइफल वाली बंदूक से फायर करने का इरादा था। बाद में डीआरडीओ ने इसे भारतीय सेना के टी-90 टैंकों के साथ संचालित करने की योजना बनाई है, जिसमें 125 मिमी. स्मूथबोर गन है। उच्च-विस्फोटक एंटी-टैंक टेंडेम-चार्ज वारहेड लगाकर इसे आधुनिक बख्तरबंद वाहनों और टैंकों की विस्फोटक प्रतिक्रियाशील कवच सुरक्षा को नष्ट करने के लिए डिजाइन किया गया है। डीआरडीओ के अनुसार यह एक बहुउद्देश्यीय एंटी-आर्मर गाइडेड मिसाइल है, जिसमें टैंकों और कम उड़ान वाले लड़ाकू हेलीकॉप्टरों को मार गिराने की क्षमता है। इस गन-लॉन्च एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल के विकास की घोषणा 2014 में की गई थी। इसे उच्च ऊर्जा सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला और उपकरण अनुसंधान और विकास प्रतिष्ठान के सहयोग से मिसाइल विकास कार्यक्रम के तहत विकसित किया गया है। इस मिसाइल का उद्देश्य भारतीय सेना में स्वदेशी अर्जुन टैंकों की मारक क्षमता को बढ़ाना है। बहुउद्देश्यीय एंटी-आर्मर गाइडेड मिसाइल का पहला परीक्षण 22 सितंबर, 2020 को निष्क्रिय हथियार वाले अर्जुन टैंक से किया गया था, जिसमें मिसाइल ने 3 किमी. की दूरी पर रखे लक्ष्य को सफलतापूर्वक भेद दिया था। इसके बाद 1 अक्टूबर, 2020 को एक और सफल मिसाइल फायरिंग हुई। डीआरडीओ ने 29 जून, 2022 को न्यूनतम और अधिकतम सीमा से लक्ष्य को भेदने वाली मिसाइल का तीसरा परीक्षण किया। इस बार डीआरडीओ ने एटीजीएम से लॉन्च किए गए टैंक की आयामी बाधाओं को भी हल किया। मिसाइल का चौथा परीक्षण 4 अगस्त, 2022 को हुआ, जिसमें प्रदर्शन स्थिरता की जांच करने के लिए न्यूनतम से अधिकतम सीमा तक लक्ष्य को शामिल किया गया।

खबर संक्षेप

विशाल निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन कल

सहसों। सहसों के कांदी मार्ग स्थित शिवा कोल्ड स्टोरेज में कल एक फरवरी दिन गुरुवार को स्मृतिशेष सेठ लालचन्द्र केसरवानी एवं स्मृतिशेष सेठ शिव पूजन केसरवानी जी के पुण्य तिथि एवं स्मृति में एस पी आर एल उद्योग समूह सहसों प्रयागराज द्वारा आयोजित विशाल नेत्र ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया जाएगा। जिसमें डॉ. आर एन मिश्रा हरी नेत्रालय प्रयागराज की टीम द्वारा निःशुल्क नेत्र परीक्षण, मोतियाबिंद का ऑपरेशन, चश्मा एवं दवा का वितरण किया जाएगा। उक्त जानकारी देते हुए निःशुल्क नेत्र शिविर के व्यवस्थापक एवं जिला कोषाध्यक्ष भाजपा गंगापार आशीष केसरवानी ने क्षेत्र के समस्त जरुरत मंद जनमानस से शिविर में पहुंचकर निःशुल्क जांच, ऑपरेशन आदि का लाभ उठाने का आग्रह किया है।

कुष्ठ रोग के प्रति सचेत करने निकले स्वास्थ्यकर्मी

सीएमओ ने हरी झंडी दिखाकर टीम को किया रवाना

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मंगलवार से कुष्ठ रोग से बचाव व जागरूकता के लिए स्वास्थ्य विभाग की ओर से विशेष अभियान शुरू किया जा रहा है। 13 फरवरी तक चलने वाले स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान का शुभारंभ आज मंगलवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. आशु पांडेय ने हरी झंडी दिखाकर किया।डॉ. आशु पांडेय ने बताया कि इसमें स्वास्थ्यकर्मी ज्यादा से ज्यादा लोगों को कुष्ठ रोग के लक्षण व इलाज के बारे में बताएंगे। इसके लिए जनपद के सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के अधीक्षक व संबंधित स्वास्थ्यकर्मी आदि को प्रशिक्षण भी दिया जा चुका है।

कुष्ठ रोगी से किसी प्रकार का भेद भाव नहीं किया जाना चाहिए - डॉ केबी सिंह

महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर कुष्ठ निवारण दिवस मनाया गया

करछना। महात्मा गांधी जी के पुण्यतिथि के अवसर पर दी लेप्रसी मिशन ट्रस्ट इंडिया के हील प्रोजेक्ट के माध्यम से कुष्ठ निवारण दिवस मनाया गया करछना ब्लॉक स्थित सरदार पटेल महाविद्यालय में मनाया गया। इस कार्यक्रम में जसरा और करछना ब्लॉक से लगभग 150 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि करछना ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी, जिला कुष्ठ अधिकारी प्रयागराज और उनकी टीम, करछना सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डॉ केबी सिंह कुशवाहा,ग्राम प्रधान सोनाई प्रतिनिधि दिनेश श्रीवास्तव, ग्राम प्रधान अंतहिया हिमांशु मिश्रा आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम में गीत संगीत, नुक्कड़ नाटक, भाषण तथा बाल संसद के बच्चों द्वारा कोरियोग्राफी के माध्यम से लोगों को कुष्ठ रोग पर जागरूक किया गया, और आज के दिन के महत्व के विषय पर जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम में कुष्ठ रोग पर विजय प्राप्त किए हुए चैंपियनों द्वारा कुष्ठ रोग पर समस्या और इसे पराजित करने में उनके अनुभवों को सांझा किया गया। कार्यक्रम के अंत में कुष्ठ रोग को अपने क्षेत्र से समाप्त करने और कुष्ठ से प्रभावित व्यक्तियों के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करने का शपथ जिला कुष्ठ अधिकारी द्वारा कराया गया। कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथियों ने संस्था के कार्यों की सराहना की और अपना पूरा योगदान देने का आश्वासन दिया।

बुजुर्ग की जमीन को जालसाज ने लाखों में बेच डाला

मऊआइमा। जालसाजों, फ्राडों की आज के दौर मे कमी नहीं है।एक बुजुर्ग भैया राम की पौने दो बीघा जमीन को गांव का एक अन्य भैयाराम ने आधार में वल्दियत बदल कर खरीदार के दो पुत्रों को गवाह बनाते हुए लाखों की जमीन का बैनामा दूसरे के नाम कर दिया। पुलिस आयुक्त के आदेश पर मऊआइमा पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया गया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम जोगीपुर निवासी भयैराम उम्र लगभग 85 वर्ष पुत्र स्वर्गीय बैजू के नाम गांव में लगभग पैंतीस बिस्वा जमीन को आरोप है कि गांव के एक कथित भयैराम पुत्र सुखीराम ने अपनी वल्दियत बैजू आधार में दर्शा कर अभिलेखों में जालसाजी करके पौने दो बीघा जमीन को लाखों रूपया में उमराव का पूरा खामपुर सदर प्रतापगढ़ निवासियों के हाथ बेचते हुए कथित भयैराम ने खरीदारों के पुत्रों गौतम कुमार और कमल कुमार को गवाह बना डाला। बुजुर्ग भैया राम की जमीन पर 22 दिसम्बर को 2023को जब खरीदार कब्जा लेने आए तो तब सच्चाई का पता चला। आरोप है कि बुजुर्ग भैया राम ने पुलिस आयुक्त ने यहां न्याय की गुहार लगाई। पुलिस आयुक्त के आदेश पर मऊआइमा पुलिस ने कथित भयैराम पुत्र सुखीलाल ग्राम जोगीपुर तथा भोलानाथ, अमरनाथ पुत्रगण लाला, सावित्री देवी पत्नी राम आधार उमराव का पूरा सदर खामपुर प्रतापगढ़ के खिलाफ जालसाजी, फ्राड,कूटरचित करके कागजों में हेराफेरी करने का मुकदमा मऊआइमा पुलिस ने दर्ज कर ली है।

सपाइयों ने चिल्ला गौहानी में लगाया जन चौपाल

लालापुर। क्षेत्र के चिल्ला गौहानी गांव में सपा के कार्यकताओं ने जन चौपाल लगाकर समाजवादी पार्टी की नीतियों के बारे में विस्तार से बताया और ग्रामीणों को समाजवादी पार्टी की सदस्यता भी दिलाई। पूर्व में समाजवादी सरकार के द्वारा चलायी गई समाजवादी पेंशन,लोहिया आवास, फ्री लैपटाप पर भी चर्चा हुई। साथ ही बृजेश यादव ने कहा की भाजपा की वर्तमान सरकार महंगाई,भ्रष्टाचार की जनक बन चुकी है।लोगों को न्याय के लिए दर दर भटकना पड़ रहा है। जन चौपाल में नरेंद्र सिंह, बृजेश यादव सदस्य जिला पंचायत, रमाकान्त यादव,जगदीश यादव, भागीरथी बिंद, बलवीर पटेल, रामधनी पटेल, सुधाकर सिंह, उदयवीर, रामबहोंर सत्यदेव, विजय प्रधान, मानस राज, राजू गौतम आदि लोग उपस्थित रहे।

कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत रोजगार मेले में 210 युवाओं को मिला रोजगार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मंगलवार को उ0प्र0 सरकार की महत्वाकांक्षी योजना कौशल विकास मिशन के अंतर्गत दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के तत्वावधान में जनपद प्रयागराज के एस0एस0 कॉन्वेंट हाईस्कूल समिति, प्रशिक्षण केन्द्र विजय गेस्ट हाउस, विजयनगर हवेलिया झूंसी में विकासखण्ड स्तरीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि महापौर गणेश केसरवानी के द्वारा किया गया। इस मेले में 20 प्रतिष्ठित कम्पनियों द्वारा विभिन्न प्रकार रिक्तियों के सापेक्ष युवाओं का साक्षात्कार के माध्यम से चयन किया गया है। इस मेले में विकास खण्ड के 375 युवाओं ने प्रतिभाग किया व 210 युवाओं कों विभिन्न कंपनी में चयन किया गया। इस अवसर पर, जिला समन्वयक एस0 के0 श्रीवास्तव, डॉ0 आलोक श्रीवास्तव, जिला कौशल प्रबन्धक अभिषेक शुक्ला, जिला कौशल प्रबन्धक अरविन्द चौरसिया, जिला कार्यक्रम प्रबन्धक डी0डी0यू0-जी0के0वाई0 सुभाष सिंह, सहित विभिन्न प्रतिष्ठित कम्पनियों प्रतिनिधिगण व कौशल प्रशिक्षण केन्द्रों के केन्द्र प्रबन्धक के उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

उपचार के दौरान हुई बुजुर्ग व्यक्ति की मौत

प्रयागराज। थाना मुट्ठीगंज की पुलिस को मोतीलाल नेहेरु अस्पताल द्वारा 18-01-24 को सूचना दी गई की आधाअंग गंभीर चोटिल अवस्था में एक बुजुर्ग व्यक्ति को दो छात्रों द्वारा मोतीलाल नेहरू अस्पताल में एडमिट कराया गया। उपचार के दौरान बुजुर्ग व्यक्ति की मृत्यु हो गई। इसकी जानकारी थाना मुट्ठीगंज पुलिस को दी गई पुलिस ने दोनों छात्रों की पूछताछ हालांकि दोनों छात्रों को अज्ञात बुजुर्ग के बारे कोई जानकारी नहीं मानवता दिखाते हुए सड़क के किनारे चोटिल अवस्था में देखकर दोनों छात्रों ने अस्पताल पहुंचाया। चिकित्सक के उपचार के दौरान बुजुर्ग व्यक्ति की मृत्यु हो गई है। इसकी जानकारी थाना मुट्ठीगंज पुलिस ने दी हालांकि अभी तक उस बुजुर्ग व्यक्ति के बारे में कोई पता नहीं चल सका। एस.आई बृजेश कुमार सरोज के नेतृत्व जांच चल रही है उन्होंने बताया की काफी खोजबीन किया जा रहा पर शव की शिनाख्त परिपूर्ण नहीं हो पाई है। सिर्फ यह जानकारी प्राप्त हो पाई है की उस व्यक्ति का नाम महेंद्र पिल्ली पुत्र अज्ञात निवासी पुणे महाराष्ट्र के रूप में हो पाई है। इस मामले में पुलिस जांच पड़ताल कर रही है। अखबार के माध्यम से अगर इस बुजुर्ग के बारे में किसी को पता चले तो मुट्ठीगंज पुलिस को सूचना जरूर दें।

नैनी मिजार्पुर रोड पर अतिक्रमण अभियान चला

नैनी। नैनी मंगलवार को शंकर ढाल से सब्जी मंडी तक अतिक्रमण अभियान चला अपर नगर आयुक्त अरविन्द कुमार राय के नेतृत्य में शंकर ढाल से सब्जी मंडी तक अतिक्मण हटवाया गया तथा काटन मिल वेणिडिंग जोन मे आवंटित वैष्डरों को वेण्डिंग जोन में शिपट कराया गया इस दौरान 6900 रू समन शुल्क भी वसूल किया गया। अभियान के दौरान जनल अधिकारी/ सहायक नगर आयुक्त अखिलेश त्रिपाठी, मुख्य सफाई एव खाय निरीक्षक शान्ती स्वरूप गुप्ता सपफाई एवं खाद्य निरीक्षक चन्द्राकर एवं परिवर्तन दल की टीम की सभी सदस्थ एवं कर्मचारी उपस्थित रहें।

अरैल में युवक ने फांसी लगाकर जान दी

नैनी। नैनी कोतवाली क्षेत्र के अरैल शिवनगर गली नंबर दो देवरख रोड पर रहने वाला प्रवेश कुमार दुर्बे (28) पुत्र उमाकांत दुबे दो भाइयों में छोटा था। सोमवार रात वह खाना खाने के बाद अपने कमरे में सोने चला गया। मंगलवार सुबह कमरे में फंदे से लटकी प्रवेश की लाश मिली। पुलिस को मौके से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। पुलिस के मुताबिक युवक कुछ दिनों से मानसिक रूप से बीमार चल रहा था।

यूपीपीसीएस पवन सोनकर बने अस्सिटेंट लेबर कमिश्नर बधाई देने पहुंचे विधायक बारा

जसरा। विकास खंड जसरा स्थित तातारगंज गांव के पीसीएस पवन सोनकर असिस्टेंट लेबर कमिश्नर पद पर चयनित किए गए हैं। उनके चयनित होने की जानकारी होने पर बारा विधायक डा०वाचस्पती बधाई देने के लिए उनके घर पहुंच गए। सीआरपीएफ में एसआई पद पर कार्यरत छेदीलाल सोनकर के दूसरे नंबर के बेटे पवन कुमार सोनकर के पीसीएस अधिकारी बनने पर क्षेत्र में खुशी का माहौल है। लोग घर पहुंचकर पवन सोनकर को व उनके परिवार को बधाई दे रहे हैं। वहीं मंगलवार को विधायक बारा डा० वाचस्पति तातारगंज उनके घर पहुँचकर पीसीएस अधिकारी पवन सोनकर व चाचा ग्राम प्रधान बृजेश सोनकर को अंगवस्त्रम देकर बधाई दी व घड़ी भेट.की। विधायक बारा शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इसी तरह तरक्की करते हुए आगे चलकर आप आई ए एस अधिकारी बनकर देश की सेवा करें। साथ ही जसरा ब्लॉक प्रमुख अजीत सिंह भी तातरगंज पहुंचकर पवन कुमार को बधाई दिए। बधाई देने के लिए गांव के राजा बाबू पाठक,शिवदयाल सिंह,दयाशंकर द्विवेदी,जय सिंह ,नीरज श्रीवास्तव, सुग्गी लाल सोनकर,राजू सोनकर, ग्राम प्रधान जसरा आशीष सोनकर, विजय बहादुर सिंह,सूर्यभान सिंह,अक्षयवट सिंह,चंद्रमा प्रसाद विश्वकर्मा,छोटू सिंह, उमेश सोनकर,भगत विश्वकर्मा,अशोक विश्वकर्मा ने मिठाई खिलाकर बधाई दी। वहीं ग्राम प्रधान बृजेश सोनकर ने सभी आये गणमान्य लोगों का आभार प्रकट किया।

घर में घुस कर मार पीट जान से मारने की धमकी दो के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा इलाके के छपाई बाग में पुरानी रंजिश को लेकर घर में घुस कर महिला को मार पीट कर लहुलुहान कर दिया गया तथा जान से मारने की धमकी दी गई। महिला ने दो के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम छपाईबाग निवासनीय हाजिरा बानों पत्नी परवेज अली का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर उसके घर में घुस कर उसे मार पीट कर लहूलुहान कर दिया गया और जान से मारने की धमकी दी गई। जख़्मी हाजिरा बानों ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर गुलजार पुत्र स्वर्गीय सिराजुल हसन, मोबीन पुत्र आबिद अली निवासीगण चमरुपुर पठान का पूरा जेठवारा प्रतापगढ़ के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है। मुकदमा दर्ज कर पुलिस जांच पड़ताल कर रही है।

रामायण पाठ एवं भजनों को गाकर पीएम को भक्ति भाव से किया शराबोर

सहसों। कला के क्षेत्र में विश्व क्षितिज पर नित्य नई क्रीतिया गढ रही है अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मानस मर्मग्य सिगरामऊ सहसों प्रयागराज उत्तर प्रदेश के अरुण कुमार दुवेदी ने रामेश्वरम तमिलनाडु में रामायण पाठ एवं भजनों को अपने साथियों के साथ स्वर लहरियों में गाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भक्ति भाव से शराब बोर कर दिया सराबोर कर दिया मानस मर्मज्ञ अरुण कुमार द्विवेदी ने रामेश्वरम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए खास तौर पर आयोजित रामायण पारायण पाठ में अपने कलात्मक प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया था पीएम मोदी ने भक्ति भाव सेओतप्रोत अरुण कुमार द्विवेदी को अंगवस्त्र एवम उपहार सामग्रियां भी भेंट की देशभर से आमंत्रित मात्र 8 राज्यों के कलाकारों में शामिल उक्त समारोह में प्रयागराज उत्तर प्रदेश से अकेले ही थे रामायण पाठ के पश्चात प्रधानमंत्री ने के समक्ष भजन संध्या में स्वरचित भजनों को भी अपने मधुर स्वर संगीत के सुर ताल से साकार कर प्रधानमंत्री मोदी द्वारा प्रशंसा बटोरी उन्होंने सराहना करते हुए कहा बधाई हो आपने बहुत ही अच्छा रामायण का पाठ गया है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा प्रशंसा के शब्दों से अभी बहुत होकर अरुण कुमार द्विवेदी ने कहा कि ऐतिहासिक मंदिर प्रांगण में प्रधानमंत्री मोदी के समक्ष कलात्मक जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है दुनिया भर में विख्यात भारत के चार धाम बद्रीनाथ जगननाथ पुरी द्वारकापुरी और रामेश्वरम है रामेश्वरम का यह मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है कहा जाता है की लंका जाने के लिए रामसेतु निर्माण के पूर्व भगवान श्री राम ने स्वयं यहा शिवलिंग की स्थापना कर भगवान शिव की पूजा अर्चना की थी एवं उनसे आशीर्वचन लिए थे इसीलिए रामेश्वरम के इस पावन धरा धाम पर अवस्थित श्री रामनाथ स्वामी मंदिर का सनातन संस्कृति में अति विशिष्ट महत्व है।

एसएससी क्रिकेट महाकुंभ कुढ़वा फाइनल मैच में बेला की टीम विजेता

जंघई। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी एसएससी क्रिकेट महाकुंभ प्रतियोगिता कुढ़वा द्वारा क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें दर्जनों टीमों ने प्रतिभाग किया और अपने खेल से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया इस दौरान एक सप्ताह क्रिकेट प्रतियोगिता में हजारों दर्शको ने मैच देखा और मैच का आनंद लिया। कार्यक्रम आयोजक कमेटी के अध्यक्ष विकास शुक्ला द्वारा उपस्थित लोगों का स्वागत किया गया एवं अतिथियों द्वारा विजेता उपविजेता टीम को मेडल ट्राफी पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। मुख्य फाइनल मुकाबला मंगलवार को संकटमोचन क्रिकेट क्लब बयांव एवं बेला क्रिकेट क्लब के बीच हुआ। बेला की टीम द्वारा निर्धारित 50 गेंद में 104 बनाया गया उसके जबाव में उतरी संकटमोचन बयांव की टीम निर्धारित ओवर से पहले ही आल आउट हो गई, बेला की टीम फाइनल मैच विजेता रही। विजेता टीम को 11 हजार और ट्राफी और उपविजेता टीम को 7 हजार रुपए एवं ट्राफी दिया गया। मैन ऑफ द सीरीज रेंजर साइकिल गणेश शर्मा, अमित केसरवानी, नवीन केसरवानी द्वारा उपविजेता टीम के कप्तान को दिया गया। प्रतियोगिता में मैन ऑफ द मैच, बेस्ट कप्तान, बेस्ट फिल्डर, बेस्ट बालर कुढ़वा कप दिया गया। क्रिकेट प्रतियोगिता में फाइनल मैच की कॉमेंट्री विकास दुबे एवं जय सिंह गौड़ ने किया। इस अवसर पर आलोक सिंह, जवाहरलाल गौड़, गौरव राजपूत, शशांक मिश्र, कुलदीप मिश्रा, आशीष मिश्रा, अंकित पाल, राहुल सेठ सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

सहसों ब्लॉक में विभिन्न उपकरण हेतु दिव्यांगजन चिन्हांकन शिविर आज

सहसों। प्रदेश सरकार द्वारा चलाए जा रहे दिव्यांगजनो के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों के वितरण हेतु दिव्यांगजन चिन्हांकन शिविर का आयोजन समस्त ब्लॉकों में किया जा रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में विकास खण्ड सहसों के मुख्यालय पर आज 31 जनवरी दिन बुधवार को विभिन्न प्रकार के उपकरणों के वितरण हेतु दिव्यांगजन चिन्हांकन शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें पात्र लाभार्थी आवश्यक प्रपत्र के साथ सुबह 11 बजे ब्लॉक मुख्यालय पर पहुंचकर विभिन्न प्रकार के उपकरण हेतु पंजीकरण करा सकते हैं। उक्त आशय की जानकारी वरिष्ठ लिपिक विजय बहादुर ने दी है।

नगर पंचायत पश्चिम शरीरा में बढ़ते कमीशन खोरी से विकास योजनाएं चौपट

बैरमपुर कौशांबी नगर पंचायत पश्चिम शरीरा में अधिशासी अधिकारी और अध्यक्ष के पति की साठगांठ के चलते विकास योजनाओं में जमकर कमीशन खोरी हो रही है नगर पंचायत के अध्यक्ष अपने अधिकार का प्रयोग नहीं कर पा रही हैं उनके अधिकार छीन लिए गए हैं और उनके पति ही नगर पंचायत के अध्यक्ष बन बैठे हैं सूत्रों की माने तो 35 प्रतिशत से अधिक ठेकेदारों से विकास योजनाओं में कमीशन की वसूली की जा रही है विकास योजनाओं में कमीशन की वसूली के लिए एक कमी को जिम्मेदारी सौंप गई है जिसके माध्यम से अवैध वसूली कराई जाती है योगी सरकार के भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था पर नगर पंचायत पश्चिम शरीरा के अधिकारियों की कमीशन खोरी पूरी व्यवस्था पर भारी पड़ती दिख रही है नगर पंचायत अध्यक्ष के पति और अधिकारियों की साठगांठ के चलते भ्रष्टाचार तेजी से बढ़ रहा है और मानक के अनुसार निर्माण कार्य नहीं कराए जा रहे हैं कुछ वर्षों में करोड़ों की रकम खर्च किए जाने के बाद जमीनी सतह में विकास कार्य नहीं दिखाई पड़ रहे हैं घटिया तरीके से कराए जा रहे निर्माण कार्यों को देखने वालों ने मौन साध लिया है बताया जाता है कि कुछ निर्माण कार्य है जो बनते ही टूटने लगे हैं जो कमीशन खोरी द्वारा कराए गए कार्य के भ्रष्टाचार की पोल खोल रहे हैं नगर पंचायत पश्चिम शरीरा में कमीशन खोरी के चलते हो रहे विकास कार्यों की यदि अधिकारियों ने उच्च स्तरीय जांच कराई तो अध्यक्ष के पति और अधिशासी अधिकारी के कारनामों का उजागर होना तय है।

> नगर पंचायत की अध्यक्ष अपने अधिकार का प्रयोग नहीं कर पा रही हैं उनके अधिकार छीन लिए गए है

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा हाई स्कूल वर्ष 2023 यूपी बोर्ड अनुक्रमांक 1231648326 का अंक पत्र सह प्रमाण पत्र वास्तव में कहीं खो गया है ।

नितेश कुमार कुशवाहा पुत्र राकेश कुमार कुशवाहा निवासी पंवर जसरा प्रयागराज

सूचना

सर्व धारण को सूचित किया जाता है कि मेरे चार बेटे धीरेंद्र प्रताप सिंह, सत्येंद्र प्रताप सिंह, ज्ञानेंद्र राव व योगेंद्र राव हैं। जिनमें से मेरा बेटा ज्ञानेंद्र राव मेरे काहे सुनने में नहीं चलता है । इसलिए मुझसे अलग रहता है। मेरी देखभाल नही करता है। तथा मुझे प्रताड़ित करता है। मैं अपने पुत्र ज्ञानेंद्र राव को बिना जोर दबाव को अपनी चल अचल सम्पत्ति से बेधखल करता हूं।

शपथकर्ता राम लखन पुत्र राम फल निवासी पसियापुर,थाना-सोरांव, जनपद- प्रयागराज ।

पीडीए द्वारा कराए जा रहे विभिन्न कार्यों का कुंभ मेला अधिकारी ने किया निरीक्षण

तैयारी महाकुंभ- 2025

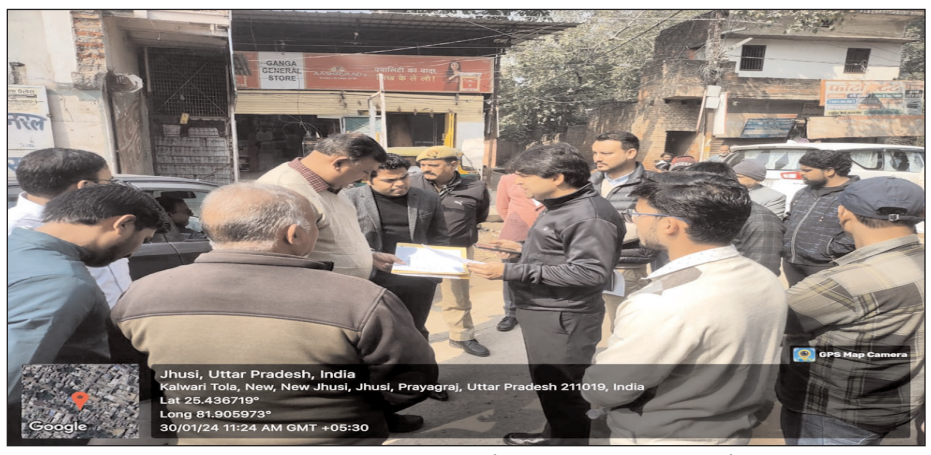

प्रयागराज। महाकुंभ 2025 के दृष्टिगत प्रयागराज विकास प्राधिकरण द्वारा कराए जा रहे विभिन्न कार्यों का निरीक्षण आज मेला अधिकारी, कुंभ मेला, विजय किरन आनंद द्वारा किया गया। उन्होंने प्राधिकरण द्वारा बनाई जा रही 12 सड़कों का निरीक्षण किया तथा वहां पर कार्यों की प्रगति धीमी पाए जाने पर असंतोष व्यक्त किया। कई सड़कों पर ड्रेन का कार्य चल रहा है जिसे उन्होंने मार्च 2024 तक अनिवार्य रूप से समाप्त करते हुए सभी सड़कों का काम भी मई 2024 तक खत्म करने के निर्देश दिए हैं। मेला अधिकारी ने सभी संबंधित अभियंताओं एवं ठेकेदारों को फरवरी 2024 तक के ड्रेनेज, जीएसईबी, एंक्रोचमेंट रिमूवल तथा पेड़ों को हटाने के कार्यों का लक्ष्य दे दिया है। दिए गए लक्ष्य के सापेक्ष काम पूर्ण न होने पर संबंधित ठेकेदारों एवं अभियंताओं का उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी।

12 सड़कें जिनका निरीक्षण किया गया व निम्नवत हैं :

1. झूंसी स्थित कटका तिराहे (नरेश गार्डेन) से झूसी बस स्टैण्ड तिराहे तक सड़क के चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं सौन्दर्गीकरण का कार्य। 2. झूंसी बस स्टैण्ड तिराहे से गंगा नदी तट तक सड़क चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं सौन्दर्याकरण का कार्य। 3. झूंसी क्षेत्र में लोटस अस्पताल से कटका रोड तक सड़क के चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं सौन्दर्याकरण का कार्य। 4. अन्दावा चौराहा से सहसों चौराहा तक डिवाइडर पर ग्रीनरी विकसित करने एवं अनुरक्षण का कार्य। 5. झूंसी स्थित जी०टी० रोड (छतनाग रोड) से छतनाग घाट तक आर०सी०सी० रोड के चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण व सौन्दर्याकरण का कार्य। 6. अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क गेट नं 06 से संगम पेट्रोल पम्प क्रासिंग सोहबतियाबाग तक सड़क के चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण व सौन्दर्याकरण का कार्य। 7. अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क में पॉण्ड एवं बोटिंग का विकास कार्य। 8. स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय से महात्मा गांधी मार्ग तक सड़क चौड़ीकरण का कार्य । 9. मा० उच्च न्यायालय के सामने स्थित उपरिगामी सेतु के दोनों तरफ की सड़क के चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण व सौन्दर्गीकरण का कार्य। 10. इविंग क्रिश्चियन कालेज से नुरुल्ला रोड तक सड़क चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण व सौन्दर्याकरण का कार्य। 11. कोठापार्चा चौराहे से रामभवन चौराहे तक सड़क का चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं सौन्दर्गीकरण। 12. कौठापार्चा चौराहे से थाना कीडगंज होते हुए नये यमुना ब्रिज तक सड़क का चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं सौन्दर्याकरण।

झूंसी पुलिस नहीं कर पा रही है चोरी का खुलासा

महीने भर में दर्जनों कार की बैटरी गायब, कई घरों के टूटे ताले

झूंसी। स्थानी थाना क्षेत्र में चोरों का आतंक इस कदर बढ़ गया है कि चोर आए दिन किसी न किसी मकान, दुकान व कार को निशाना बना रहे हैं। जिसकी वजह से लोगों में पुलिस के प्रति आक्रोश है। स्थानीय लोगो की माने तो माह भर में चोरो ने दो दर्जन से अधिक कार से बैटरी चुरा चुके है। तीन दिन पहले भी आजाद नगर निवासी अरविंद कुमार द्विवेदी की कार की बैटरी चोरो ने बोनट तोड़ कर चुरा ली। बीते 24 जनवरी को आवास विकास कालोनी योजना 3 निवासी अमरेंद्र सिंह के घर का ताला तोड़ चोरो ने एक लाख बीस हजार की नगदी व करीब तीन लाख के जेवरात समेट कर फरार हो गए। लेकिन पुलिस अब तक एक भी चोरी का खुलाशा नही कर पाई है। जिसकी वजह से लोगो मे पुलिस के प्रति आक्रोश है।

महापौर ने किया हरी भरी कचरा प्लांट का निरीक्षण

नैनी। नैनी महापौर ने किया हरी भरी कचरा प्लांट का निरीक्षण महापौर गणेश केसरवानी प्रयागराज ने कचरा प्लांट बसवार हरी भरी का निरीक्षण किया जल्द से जल्द अधिकारियों को निर्देशित किया की कचरा इकट्ठा न होने पाए स्वच्छता अभियान के अंतर्गत तत्काल उसको फिल्टर करके आगे को बढ़ाया जाए इस अवसर पर संजय श्रीवास्तव जिला उपाध्यक्ष भाजपा किसान मोर्चा पूर्व कनिष्ठ ब्लॉक प्रमुख। महापौर गणेश केसरवानी के नेतृत्व वरिष्ठ पार्षद मयंक यादव पार्षद पवन यादव पार्षद संजय भारतीय पार्षद बलराज पार्षद राकेश जयसवाल पार्षद अनूप पासी पार्षद रणविजय सिंह डब्बू महामंत्री उमेश सेन दिव्यांग प्रकोष्ठ सुनील विश्वकर्मा सेक्टर प्रभारी प्रदीप तिवारी भाजपा नेता मोहित अग्रहरि भाजपा कार्यकर्ता शामिल थे।

औद्योगिक क्षेत्र पुलिस ने ट्रांसफार्मर के उपकरण चुराने वाले चोरों के गिरोह का किया भंडाफोड़

नैनी। नैनी औद्योगिक क्षेत्र पुलिस को मिली बड़ी सफलता ट्रांसफार्मर के उपकरण को चुराने वाले चोरों के गिरोह का किया भंडाफोड़। नपफर अभियुक्त गण को गिरफ्तार किया गया। चोरों के कब्जे से घटना में चोरी गये ट्रांसफार्मर के आंतरिक भाग (क्वायल) व चोरी के समानों की बिक्री के नकद 30 हजार रुपए तथा घटना में प्रयुक्त मैजिक वाहन बरामद किया गया। बता दें कि मंगलवार को औद्योगिक क्षेत्र थाना के थानाध्यक्ष महेश मिश्र के नेतृत्व में उपनिरीक्षक अतुल कुमार मिश्र, उपनिरीक्षक चन्द्रपाल सिंह, उपनिरीक्षक हरिओम सिंह, उपनिरीक्षक कमलेश गिरी, उपनिरीक्षक सुमित त्रिपाठी व पुलिस टीम द्वारा 12 जनवरी व 24 जनवरी को अज्ञात चोरों द्वारा ग्राम चटकहना व लवायन कला से ट्रान्सफार्मर को खोल कर उसके अन्दर से क्वाइल व तेल चोरी करने के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर अज्ञात के खिलाफ

चोरी के समान व नगद रुपयों के साथ पुलिस के हत्थे चढ़े चोर

मुकदमा पंजीकृत किया गया। घटना के अनावरण हेतु थाना स्थानीय से टीमें पतारसी सुरागरसी व मुखबिर की सूचना पर सरस्वती हाइटेक सिटी में मवैया की तरफ जाने वाले रास्ते से लगभग दो सौ मीटर पूर्व मिक्सर प्लांट के पास से कुल पांच नफर अभियुक्तगण अजय कुमार निषाद उर्फ मंगल पुत्र राम चन्द्र निषाद निवासी लवायन कला थाना औद्योगिक क्षेत्र, सलमान खान पुत्र पुन्नु खान निवासी बराव थाना करछना, अशफाक अहमद पुत्र कप्तान अली निवासी भारतगंज थाना मांडा, शिशु निषाद उर्फ रोहित पुत्र जंग बहादुर निवासी लवायन कला थाना औद्योगिक क्षेत्र, विकास कुमार पासी उर्फ अनिल पुत्र छोटे लाल निवासी वेलवट थाना औद्योगिक क्षेत्र को समय करीब दो बजे गिरफ्तार किया गया व उनके पास से ट्रान्सफार्मर के आन्तरिक भाग व तेल को बेचने से प्राप्त 30 हजार रुपए बरामद हुए तथा अभियुक्तगणों द्वारा अपने एक अन्य साथी देवराज निषाद जिसे चोरी गये ट्रान्सफार्मर के आन्तरिक माल को बेचा है उसका पता बताया पुलिस वालो द्वारा उचित सतर्कता रखते हुए अभियुक्त सलमान को लेकर चाका नैनी स्थित एक दो मंजिला मकान से अभियुक्त देवराज निषाद पुत्र धर्मराज निषाद निवासी उत्तरी लोकपुर थाना नैनी को समय करीब पौने चार बजे गिरफ्तारी किया गया चोरी के खरीदे हुए माल सहित हिरासत पुलिस में लिया गया। मुकदमा उपरोक्त में गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर अग्रिम विवेचना विभिन्न धाराओं में तथा नियमानुसार विधिक कार्यवाही करते हुये माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गए।

आर के स्कूल आफ नर्सिंग में विश्व कुष्ठ रोग दिवस पर गोष्ठी का आयोजन किया गया

नैनी। नैनी आर0 के0 स्कूल आफ नर्सिंग, नैनी, द्वारा ह्यह्यविश्व कुष्ठ रोग दिवसह्यह्य पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि लेप्रोसी मिशन हास्पिटल नैनी की उप अधीक्षिका डॉ0 अर्चना कुमार रहीं एवं विशिष्ट अतिथि पी0 एच0 डी0 छात्र अल्बर्ट अंशुमान दानी रहे। सर्वप्रथम उक्त अतिथियों का स्वागत प्राचार्या के0 एच0 विक्टोरिया देवी द्वारा पुष्प गुच्छ एवं अंग वस्त्र प्रदान कर किया गया। इसके बाद विशिष्ट अतिथि अल्बर्ट अंशुमान दानी जी ने अपने विचार रखते हुये छात्र-छात्राओं को बताया कि इस रोग के बारे में भारत देश में बहुत सारी भ्रांतियां फैली हुई हैं लोग चिकित्सक के पास न जाकर पहले स्वयं इलाज करते हैं या कोई और विधि पर विश्वास करके इलाज कराते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि रोग गंभीर अवस्था तक पहुंच जाता है। उन्होने कहा कि यह रोग दवाओं से पूरी तरह ठीक हो जाता है इसकी प्रथम खुराक से ही 99 प्रतिशत कीटाणु शिथिल पड़ जाते हैं और मात्र कुछ दिन का इलाज लेने से यह रोग पूरी तरह ठीक हो जाता है। यह रोग साथ रहने से, छूने से नही होता न ही यह वंशानुगत है इसके कीटाणुओ का असर 2 से 10 वर्ष तक की अवधि में हो सकता है। दवाओं के साथ-साथ इस रोग के प्रति जागरूक होना बहुत आवश्यक है तभी यह पूरी तरह से समाप्त हो सकता है। इसके बाद मुख्य अतिथि महोदया ने अपने विचार रखते हुये कहा है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने यह मान लिया है कि यह रोग भारत देश से पूरी तरह समाप्त हो चुका है परन्तु ऐसा नही है अभी देश के अनेक राज्यों में इसके मामले आते रहते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस वर्ष की थीम रखा है बीट लेप्रोसी जिसका मतलब है कुष्ठ रोग को परास्त करो। उन्होने इसके दवाओं एवं इलाज के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। उक्त कार्यक्रम में प्राचार्या के0 एच0 विक्टोरिया देवी एवं शिक्षक शुभम कुमार ने भी अपने विचार रखे। उक्त दिवस पर विभिन्न प्रकार की स्पधार्यें भी आयोजित की गई जिसमे फेस पेंटिंग में प्रथम स्थान पूनम कुमारी एवं तृतीय स्थान विजय लक्ष्मी ए0 एन0 एम0 द्वितीय वर्ष को प्राप्त हुआ। इसी क्रम में ग्रुप क्विज कम्पटीशन में जी0 एन0 एम0 तृतीय वर्ष की सुनैना को, द्वितीय स्थान ए0एन0एम0 द्वितीय वर्ष की अनुराधा को एवं तृतीय स्थान ए0 एन0 एम0 प्रथम वर्ष की पूजा को प्राप्त हुआ। सभी विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान कर छात्राओं का उत्साह वर्धन किया गया। अंत में संस्था के प्रबन्ध निदेशक इं0 आशीष त्रिपाठी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुये धन्यवाद ज्ञापित किया तथा सभी विजयी छात्राओं को शुभकामनायें दी। उक्त कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं के अलावा प्रियंका पुष्कर, रानू श्रीवास, मंदाकिनी वर्मा, सुषमा साकेत, शिवानी सिंह उपस्थित रहीं। उक्त कार्यक्रम का संचालन सची मालवीया ने किया।

4 भवनों पर गृहकर बकाये की कायार्वाही, किया सील

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर विकास विभाग उ0प्र0शासन से प्राप्त निदेर्शों के अनुपालन में नगर निगम प्रयागराज द्वारा गृहकर वसूली अभियान का नेतृत्व कर रहे मुख्य कर निर्धारण अधिकारी श्री पी0के0द्विवेदी की वसूली टीम द्वारा आज दिनांक 30 जनवरी 2024 को कई प्रस्तावित भवनों के बडे. बकायेदारों/भवन स्वामियों के भवन पर कुर्की की कार्यवाही की गयी। जिसके अन्तर्गत जोनल कार्यलय मुटठीगंज क्षेत्र में वसूली टीम द्वारा भवन संख्या-282/251 मालवीय नगर वार्ड 62 स्वामिनी श्रीमती श्रीमनी अग्रवाल, पर रू0-01.53 लाख के बकाया गृहकर न जमा करने पर सीलिंग की कार्यवाही की गयी, गृहकर मद में सभी 15 बडे. बकायेदारो से वसूली के दौरान कुल धनराशि रू0-03.81 लाख प्राप्त हुआ।

जोनल कार्यालय खुल्दाबाद एवं ट्रान्सपोर्ट नगर के अन्तर्गत 11 बडे. बकायेदारों के विरूद्ध सीजर/कुर्की की कार्यवाही करते हुए भवन संख्या-77/63, 129/146 मोहल्ला पुरा मनोहरदास द्वारा सम्पूर्ण धनराशि रू0-01.22 लाख का भुगतान किया गया शेष 08 भवनों द्वारा कुल रू0-01.73 लाख गृहकर के मद में जमा कराया गया। भवन संख्या बी-1526 करैली स्कीम पर गृहकर बकाया अदा न करने के कारण सीजर/कुर्की की कार्यवाही की गयी। गृहकर मद में सभी 14 बडे.बकायेदारो से वसूली के दौरान कुल धनराशि रू0-04.02 लाख प्राप्त हुआ। जोनल कार्यालय जोन 04 अल्लापुर में भवन संख्या 899/666 कृष्णानगर भवन स्वामी श्री दीपक तथा भवन संख्या 915/679ए कृष्णा नगर भवन स्वामी श्री अमित चन्द्र यादव के भवन पर रू0-08.62 लाख के बकाये पर सीलिंग की कार्यवाही की गयी। गृहकर मद में सभी 15 बडे. बकायेदारो से वसूली के दौरान कुल धनराशि रू0-03.41 लाख प्राप्त हुआ तथा जोनल कार्यालय जोन 03 में वसूली टीम द्वारा वसूली गयी धनराशि रू0-02.50 लाख की वसूली की गयी। इस प्रकार सभी जोनों से कुर्की वसूली के दौरान गृहकर में प्राप्त कुल धनराशि रू0-13.74 लाख कैश/चेक के माध्यम से वसूलयावी की गयी।

कार्यवाही के दौरान मुख्य कर निर्धारण अधिकारी पी०के०द्विवेदी के नेतृत्व में कर अधीक्षक अल्लापुर झम्मन सिंह व राजस्व निरीक्षक-2 श्री लक्ष्मण प्रसाद, कर अधीक्षक मुटठीगंज कुलदीप अवस्थी व श्री सुनील शेखर व राजस्व निरीक्षक सौरभ कुमार, कर अधीक्षक कटरा श्रीमती मोनिका रस्तोगी व राजस्व निरीक्षक अमित कुमार, कर अधीक्षक खुल्दाबाद राकेश कुमार व राजस्व निरीक्षक-2 असद आलम, के साथ में नगर निगम प्रर्वतन दल की टीम कार्यवाही में शामिल रहे।

कुष्ठ रोग से ग्रसित लोगों की सरकार की तरफ से मुफ्त है इलाज

प्रयागराज। डॉ. अमृतलाल यादव ने कहा कि कुष्ठ रोग के प्रति लोगों को जागरूक करना है। यह एक रोग है जो माइक्रोबैक्टिरियम लैप्रि नामक बैक्टिरिया के कारण होता है। यह अनुवांशिक रोग नहीं है। इसका इलाज पूरी तरह से संभव है। सभी सरकारी संस्थानों में उपचार की सुविधा मुफ्त है। अभियान के शुभारंभ के मौके पर जिला कुष्ठ रोग अधिकारी डॉ. अमृतलाल यादव, एसीएमओ डॉ. तीरथ लाल, डिप्टी सीएमओ डॉ. रावेंद्र, सिंह, राकेश कुमार जायसवाल आदि रहे।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्रों का हंगामा नारेबाजी करते हुए कैंपस में घुसे स्टूडेंट्स

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अपने साथी की पिटाई से नाराज छात्रों का मंगलवार को भी प्रदर्शन जारी है। सैकड़ों की संख्या में उग्र छात्र मंगलवार को सुरक्षा कर्मियों को धक्का देते हुए गेट के अंदर घुस गए। इस दौरान छात्रों और पुलिस कर्मियों के बीच झड़प भी हुई। नारेबाजी करते हुए छात्र चीफ प्रॉक्टर, एसएसएल हास्टल के असिस्टेंट सुप्रिटेंडेट सहित विवि के चौकी इंचार्ज के खिलाफ कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।छात्रों के गुस्से को देखते हुए कुलपति संगीता श्रीवास्तव ने हास्टल के असिस्टेंट सुप्रिटेंडेट डॉ अतुल नारायण को हटा दिया। जिसके बाद छात्रों ने प्रदर्शन बंद कर दिया है, हालांकि बाकी लोगों पर भी कार्रवाई की मांग कर हे हैं। विवाद की शुरूआत सोमवार से हुई। जब एमए के एक छात्र अभिषेक गुप्ता का 43 सेकेंड का वीडियो सामने आया। जिसमें छात्र ने रोते हुए अपनी आपबीती बताई। छात्र ने बताया कि मुझे प्रॉक्टर और असिस्टेंड प्रोफेसर अतुल नारायणन ने प्राक्टोरियल ऑफिस बुलाकर मेरे साथ मारपीट की। इसके साथ ही मेरे कपड़े उतरवाए, मेरे साथ उन लोगों ने अश्लीलता की। मां-बहन की गालियां दी। मैंने इनके खिलाफ एंटी रैगिंग का मामला भी दर्ज कराया था। लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। मेरे साथ ये लोग कुछ भी कर सकते हैं। मैं बहुत आहत हूं, मैं आत्महत्या कर सकता हूं। यह वीडियो वाट्सएप ग्रुपों में वायरल होते हुए सैकड़ों की संख्या में छात्र विश्वविद्यालय पहुंच नारेबाजी करने लगे। तभी से छात्रों में काफी गुस्सा है।

एबीवीपी ने छात्रों का समर्थन करते हुए की जांच की मांग

(एबीवीपी) ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सहायक कुलानुशासक एवं विश्वविद्यालय पुलिस चौकी इंचार्ज द्वारा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र पर बर्बरतापूर्ण व्यहवार किए जाने की निंदा की है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय इकाई अध्यक्ष शिवम सिंह ने कहा कि "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद पीड़ित छात्र को न्याय दिलाने के लिए आंदोलन कर रही है। शिवम सिंह ने कहा कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बढ़ रही प्रशासनिक अराजकता शैक्षिक परिवेश को दूषित कर रही है। इससे पढ़ाई प्रभावित हो रही है। ऐसी कुत्सित मानसिकता विश्वविद्यालय प्रशासन की उदासीनता का परिचायक है। एबीवीपी विश्वविद्यालय और पुलिस प्रशासन से यह मांग करती है कि इस आपराधिक प्रकरण की त्वरित जांच कर दोषियों पर कठोर प्रशासनिक और विधिक कार्रवाई की जाए।

एसएसएल के छात्रों ने किया था रुपए लेने का विरोध

छात्र नेता सत्यम कुशवाहा ने कहा कि आज से 10 दिन पहले एसएसएल हॉस्टल के छात्रों ने हॉस्टल के असिस्टेंट सुप्रिडेन्ट अतुल नारायण सिंह के ऊपर 500 रुपए मेंटेनेंस के नाम पर लेने का आरोप लगाया था। छात्रों ने इसका ज्ञापन रजिस्ट्रार को भी सौंपा था। इसी बात को लेकर एमए के छात्र अभिषेक गुप्ता को आज बुलाया गया था। सोमवार को जब छात्र अभिषेक वहां पहुंचा तो उसके साथ मारपीट की गई।

हाईकोर्ट का 8 हिंदू-मुस्लिम जोड़ों को सुरक्षा देने से इनकार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सोमवार को 8 हिंदू-मुस्लिम कपल्स को सुरक्षा देने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने कहा कि ये शादियां उत्तर प्रदेश धर्म परिवर्तन निषेध अधिनियम के खिलाफ हैं। विवाह करने से पहले धर्म परिवर्तन की कानूनी प्रक्रिया नहीं अपनाई गई, इसलिए ये विवाह कानून के तहत मान्य नहीं हैं। इसके साथ ही जस्टिस सरल श्रीवास्तव ने मुरादाबाद सहित अन्य जिलों की 8 अलग-अलग याचिकाओं को खारिज कर दिया। हालांकि कोर्ट ने कहा कि अगर याचिकाकर्ता कानूनी प्रक्रिया का पालन करने के बाद विवाह करते हैं, तो वे नए सिरे से सुरक्षा की मांग कर सकते हैं।

8 में से 5 मुस्लिम युवकों ने हिंदू महिलाओं से की थी शादी :

8 जोड़ों में से 5 मुस्लिम युवकों ने हिंदू महिलाओं से और 3 हिंदू युवकों ने मुस्लिम महिलाओं से शादी की थी। कपल्स ने कोर्ट में याचिका दायर कर परिवार से अपनी जान को खतरा बताया था और सुरक्षा की मांग की थी। इसके साथ ही कोर्ट से अनुरोध किया था कि वह परिवार से कहे कि उनके वैवाहिक जीवन में हस्तक्षेप करना बंद कर दें।

क्या है धर्मांतरण विरोधी कानून?

2021 का धर्मांतरण विरोधी कानून धर्मांतरण पर रोक लगाता है। यूपी में अंतर-धार्मिक विवाह करने वाले जोड़ों को शादी से 2 महीने पहले जिला मजिस्ट्रेट को सूचना देनी होती है। कानून के मुताबिक, अगर कोई अपनी मर्जी से दूसरे धर्म को अपनाता है, तो यह अपराध नहीं है, लेकिन यदि किसी को लालच देकर या ब्लैकमेल करके धर्मांतरण करवाया जाता है, तो यह क्राइम है।जबरन धर्म परिवर्तन कराने पर न्यूनतम 15 हजार का जुमार्ना और 1 से 5 साल तक की सजा का प्रावधान है। इसके अलावा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश ने धर्मांतरण विरोधी कानूनों की संवैधानिक वैधता को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है, जिस पर फैसला आना बाकी है।

शहीद दिवस पर सिविल डिफेन्स ने दी श्रृद्धांजलि

सायरन बजते ही थमें कदम, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर दो मिनट का मौन रख दी श्रृद्धांजलि

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पूरे भारत में शहीद दिवस हर वर्ष 30 जनवरी और 23 मार्च को भारत की स्वतंत्रता संग्राम, गौरव, कल्याण और प्रगति के लिए लड़ने वाले शहीदो को श्रद्धांजलि देने के लिए मनाया जाता है।30 जनवरी 1948 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की गोली मार कर हत्या कर दी गयी थी, बापू की पुण्यतिथि को हर साल शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है। जिलाधिकारी/ नियन्त्रक के निदेर्शानुसार सिविल डिफेन्स ने शहर के विभिन्न दस स्थानो पर सायरन ध्वनित 10.59 मिनट तत्पशचात 11बजे से दो मिनट का मौन रख कर कलेक्ट्रेट परिसर,चतुर्थ वाहिनी पी ए सी धूमनगंज, इलाहाबाद हाईकोर्ट अमिताभ बच्चन स्पो कम्प म्योहाल, एम एन आई टी तेलियरगंज,महिला ग्राम इन्टर कालेज,रेलवे स्टेशन प्रयाग,रेलवे स्टेशन रामबाग, पावर हाऊस निरन्जन डाट पुल,अरेवा लिमटेड नैनी श्रृद्धान्जलि दी गयी। इस दौरान ए डी एम सिटी मदन कुमार, हर्ष देव पाण्डे एडीएम प्रशासन आशीष कु श्रीवास्तव रजिट्रार प्रोटोकाल उप नियन्त्रक नरेन्द्र शर्मा, एडीसी राकेश तिवारी एस ओ रवि शंकर द्विवेदी नाजिर अजय श्रीवास्तव मर्कन्डेय राय भोलेश्वर उपाध्या ने कलेक्ट्रेट परिसर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्पान्जलि अर्पित कर श्रृद्धान्जलि दी। महेन्द्र सक्सेना मनोज सिंह शैलेन्द्र कुशवाहा शेख जहांगीर डा० वसीम अहमद ज्ञानेश्वर शर्मा अजय सिंह ने निर्धारित स्थलों पर सायरन ध्वनित कर शहीद दिवस पर श्रृद्धान्जलि दी।

शहीद दिवस पर याद किये गये महात्मा गांधी, कांग्रेसियों ने दी श्रद्धांजलि

कांग्रेस कार्यालय पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देते कांग्रेसी।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय इंदिरा भवन पर आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शहीद दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष डॉ0 लालजी त्रिपाठी ने गांधी जी के जीवन पर विस्तार से चर्चा की।

एक अन्य कार्यक्रम में उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी के निर्देश से भारत जोड़ो यात्रा के तहत जनपद के विभिन्न विकास खंडों में ब्लॉक स्तरीय यात्रा/संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। उक्त क्रम में आज विकास खंड- मान्धाता के मझिगवां में मो0 असलम के आयोजन में जिलाध्यक्ष डॉ0लालजी त्रिपाठी के नेतृत्व में जन संवाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन जिला सचिव लल्लन सिंह एडवोकेट ने किया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष डॉ0 लालजी त्रिपाठी ने कहा कि कांग्रेस द्वारा किये गए कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि महंगाई, बेरोजगारी, व समाज में भय का वातावरण बनाने वालों को करारा जवाब दिया जाय, उन्होंने लोगों का आह्वान करते हुए कहा कि आइये हमसब मिलकर इस जनविरोधी सरकार को उखाड़ फेंकें, तभी संविधान की रक्षा हो सकेगी। डॉ0 त्रिपाठी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को उनके शहादत दिवस पर याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में जिला उपाध्यक्ष (प्रसाशन) डा0वी0के0सिंह, कोषाध्यक्ष वेदांत तिवारी, डॉ0 नीरज त्रिपाठी, सेवादल के जिला उपाध्यक्ष महेंद्र शुक्ल, जिला उपाध्यक्ष राम रतन तिवारी, जिला उपाध्यक्ष सूर्य प्रकाश शुक्ल, डॉ0 अजय सिंह, अभिषेक मिश्र, मो0 असलम, अशोक पाल, राधेश्याम पाल, गेंदा लाल, रियाजुद्दीन, हेलाल अहमद, फुरकान अहमद, रिजवान अहमद, जुनैद अहमद, मो0 माजिद, अब्दुल कादिर, जलील अहमद, मो0अरशद, मो0रंजन, लल्लन खान, तौफीस अहमद, सत्तार खान, अमजद खान, मुजफ्फर खान, अर्शलन खान, जैद खान, शोएब खान सहित अनेक कांग्रेस नेताओं ने विचार व्यक्त किये।

महात्मा गांधी के निर्वाण दिवस पर अर्पित की गयी श्रद्धांजलि

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निर्वाण दिवस पर मंगलवार को तहसील सभागार में अधिकारियों व अधिवक्ताओं ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। संयुक्त अधिवक्ता संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ एसडीएम लालधर सिंह यादव तथा तहसीलदार धीरेन्द्र प्रताप सिंह ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। कार्यक्रम में मौजूद अधिवक्ताओं व अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने प्रिय भजन रामधुनि को गाते हुए उनकी स्मृति को नमन किया। दो मिनट का मौन धारण कर राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। कार्यक्रम की अध्यक्षता संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश व संचालन पूर्व अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने किया। कार्यक्रम का संयोजन करते हुए उपाध्यक्ष लाल विनोद सिंह ने राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की मजबूती का संकल्प ग्रहण कराया। इस मौके पर लेखपाल संघ अध्यक्ष केके सरोज, विपिन शुक्ल, संतोष पाण्डेय, प्रमोद सिंह, घनश्याम मिश्र, सुमित त्रिपाठी, संदीप त्रिपाठी, विनय शुक्ला, शैलेन्द्र सिंह बघेल, शिव नारायण शुक्ल आदि रहे।

वृहद रोजगार मेले में 150 प्रशिक्षणार्थियों का हुआ चयन , रोजगार का अवसर मुहैया कराया गया

अखंड भारत संदेश

रोजगार मेले में उमड़ी प्रशिक्षणार्थियों की भीड़।

प्रतापगढ़। उ0प्र0 कौशल विकास मिशन, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना, आई0टी0आई0 एवं जनपद के अन्य प्रशिक्षित बेरोजगार युवक/युवतियों को रोजगार/स्वरोजगार में नियोजित कराने के उद्देश्य से दीनदयाल उपाध्याय कौशल्य योजना के अन्तर्गत विकास खण्ड स्तरीय वृहद रोजगार मेला विकास खण्ड रामपुर संग्रामगढ़ परिसर में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में प्रभारी खण्ड विकास अधिकारी रामपुर संग्रामगढ़ राशिद अहमद द्वारा दीप प्रज्जवलन के माध्यम से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। तत्पश्चात प्रभारी खण्ड विकास अधिकारी, प्रधानाचार्य सरयू इन्द्रा निजी आईटीआई रामपुर संग्रामगढ़ द्वारा मेला में प्रतिभाग करने वाली कम्पनियों के स्टालों का अवलोकन किया गया। रोजगार मेला में उ0प्र0 कौशल विकास मिशन एवं दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना, आईटीआई एवं जनपद के लगभग 190 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया तथा 175 प्रशिक्षणार्थियों ने साक्षात्कार दिया। नियोक्ता कम्पनी मिन्डा फुरूकावा, फिएम इन्ड्रस्टीज, हीरो बजाज मोटर्स, माइक्रो मैक्स, मदरसन, ब्राइट फ्यूचर हर्बल आयूष द्वारा लगभग 150 प्रशिक्षणार्थियों को चयनित करते हुये उन्हें रोजगार/स्वरोजगार के नये अवसर मुहैया कराया गया।

इस अवसर पर प्रभारी खण्ड विकास अधिकारी ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की सरकार समाज में सबसे आखिर व्यक्ति के उत्थान और विकास के लिये संकल्पित है। गरीबों के उत्थान और युवाओं को रोजगार देने के लिये भारी निवेश को आकर्षित करके रोजगार के नये नेय अवसर उपलब्ध कराये जा रहे है। कार्यक्रम आयोजक नोडल प्रधानाचार्य आईटीआई/जिला समन्वयक उ0प्र0 कौशल विकास मिशन बी0बी0 सिंह ने कहा कि उ0प्र0 कौशल विकास मिशन भारत सरकार व राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी योजना है इस योजना के माध्यम से युवाओं को विभिन्न टेज्डों में प्रशिक्षण प्रदान करते हुये रोजगार पाने और आत्मनिर्भर बनने का मौका दे रही है। अतिथियों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को नियुक्ति पत्र व प्रमाण पत्र का वितरण किया गया। कार्यक्रम आयोजन में वंदना सिंह, मृत्युंजय पाण्डेय जिला कौशल प्रबन्धक, जिला कार्यक्रम प्रबन्धक रवीन्द्र पाण्डेय व नियोक्ता कम्पनियों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

पूरी ईमानदारी व लगन से संचालित करें बोर्ड परीक्षाः डीआईओएस

राजकीय व सहायता प्राप्त विद्यालयों के केन्द्र व्यवस्थापकों का प्रशिक्षण शुरू

प्रशिक्षण देते तिलक इंटर कालेज के प्रधानाचार्य प्रमोद कुमार व मौजूद केन्द्र व्यवस्थापकगण।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला विद्यालय निरीक्षक सरदार सिंह ने शहर के राजकीय इंटर कालेज में आज से शुरू हुए यूपी बोर्ड परीक्षा-2024 में केन्द्र व्यवस्थापकों के प्रशिक्षण में बोलते हुए कहा कि परीक्षा में पूरी ईमानदारी व लगन से कार्य करें जिससे प्रतापगढ़ की शिक्षा जगत में छवि खराब न हो सके।

आज मंगलवार को राजकीय इंटर कालेज के सभागार में राजकीय एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के केन्द्र व्यवस्थापकों का परीक्षा के सम्बन्ध में प्रशिक्षण तिलक इंटर कालेज के प्रधानाचार्य प्रमोद कुमार तिवारी व इंटर कालेज शेखूपुर के प्रधानाचार्य अशोक कुमार ने देते कहा कि स्ट्रांग रुम व पेपर निकासी की संयुक्त जिम्मेदारी केन्द्र व्यवस्थापक, बाहरी केन्द्र व्यवस्थापक व स्टेटिक मजिस्ट्रेट की होगी। कार्यक्रम का संचालन संतोष मिश्रा ने किया। बुधवार को वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के केन्द्र व्यवस्थापकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

ग्यारह फरवरी को होगी अर्न्तजनपदीय वालीवाल प्रतियोगिता

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। रानीगंज कैथौला बाजार स्थित जनक सिंह स्मारक प्राथमिक विद्यालय में आगामी ग्यारह फरवरी को एक दिवसीय अर्न्तजनपदीय वालीवाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। प्रतियोगिता का शुभारंभ ब्लाक प्रमुख इं. अमित प्रताप सिंह पंकज करेंगे। यह जानकारी कार्यक्रम के संचालक प्रवीण सिंह ने दी है। आयोजन समिति के शिवपूजन जायसवाल, राजकुमार सिंह व आलोक सिंह, डब्लू शर्मा, जगतपाल रजक, झबलू श्रीवास्तव, प्रधान बरीबोझ अनिल रजक ने बताया कि इस वालीवाल प्रतियोगिता मे जिले के अलावा पडोसी रायबरेली, गौरीगंज समेत विभिन्न जनपदों की टीमें प्रतिभाग करेंगी।

हत्या के प्रयास के अभियोग में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़/परियावां। थाना मानिकपुर के तरदीपुर नहर सड़क के पास 28 जनवरी 2024 को आरोपीगणों द्वारा एक व्यक्ति के साथ जानलेवा हमले का प्रयास किया गया था। इस सम्बन्ध में प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना मानिकपुर में मु0अ0सं0 17/2024 धारा 147,148,149,307,323,504,506 भादवि0 व 3/25 आर्म्स एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया था।

पुलिस अधीक्षक प्रतापगढ़ श्री सतपाल अंतिल के निर्देशन में जनपद पुलिस द्वारा निरंतर अभियान चलाकर अपराध/अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में जिले के थाना मानिकपुर से व0उ0नि0 शत्रुघन वर्मा मय हमराह उ0नि0 शिशिर पटेल व का0 प्रवीन रावत, का0 विपिन कुमार, का0 संदीप पटेल, म0आ0 वन्दना चैहान, आरक्षी चालक जयनारायण सिंह द्वारा देखभाल क्षेत्र/तलाश वांछित,वारण्टी अभियुक्त/विवेचना के दौरान मुखबिर की सूचना पर अभियोग उपरोक्त से संबंधित अभियुक्त रोहित उर्फ मुन्ना तिवारी फुत्र शिवप्रसाद तिवारी निवासी मऊदारा थाना मानिकपुर जनपद प्रतापगढ़ को करेंटी गंगा पुल के पास से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त रोहित उर्फ मुन्ना तिवारी के पास से घटना में प्रयुक्त एक अदद अवैध तमन्चा .32 बोर व 01 अदद जिन्दा कारतूस 32 बोर बरामद किया गया उक्त बरामदगी के सम्बन्ध में अभियोग उपरोक्त में धारा 3/25 आर्म्स एक्ट की बढ़ोत्तरी की गई। पुलिस टीम में व0उ0नि0 शत्रुघन वर्मा मय हमराह उ0नि0 शिशिर पटेल व का0 प्रवीन रावत, का0 विपिन कुमार, का0 संदीप पटेल, म0आ0 वन्दना चैहान, आरक्षी चालक जयनारायण सिंह थाना मानिकपुर जनपद प्रतापगढ़ शामिल रहे। उधर थाना कोतवाली देहात के उ0नि0 राकेश सिंह भदौरिया मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त के दौरान मु0नं0 5609/01 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट थाना कोतवाली देहात जनपद प्रतापगढ़ से सम्बन्धित वारण्टी अभियुक्त सुबेदार सिंह पुत्र त्रिभवन सिंह निवासी ग्राम विक्रमपुर थाना कोतवाली देहात जनपद प्रतापगढ़ को उसके घर के पास से गिरफ्तार किया गया। उधर थाना नवाबगंज के उ0नि0 सुरेन्द्र सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त के दौरान फौ0मु0नं0 191/2023 धारा 147, 323, 504, 506, 451, 427 भादवि0 थाना नवाबगंज जनपद प्रतापगढ़ से सम्बन्धित वारण्टी अभियुक्त मनोज कुमार पुत्र लल्लू निवासी ग्राम कालाकांकर थाना नवाबगंज जनपद प्रतापगढ़ को उसके घर के पास से गिरफ्तार किया गया।

दो वारण्टी अभियुक्तों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

आचार्य पारसनाथ शुक्ल के निधन पर जताया दुःख

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। डांड़ी सगरा सुन्दरपुर निवासी समाजसेवी संजय शुक्ल के पिता आचार्य पारसनाथ शुक्ल 78 का बीमारी के चलते रविवार को वाराणसी में निधन हो गया। आचार्य पारसनाथ के निधन की जानकारी मिलने पर क्षेत्र के संस्कृत शिक्षकों व सामाजिक संगठनों के लोगों के साथ क्षेत्रीय पत्रकारों ने भी दुख जताया है। शोकसभा मे वरिष्ठ पत्रकार चंद्रशेखर तिवारी, सुरेश चंद्र मिश्र, उमेश तिवारी, अनूप त्रिपाठी, राजीव तिवारी, संजीव तिवारी, अरविन्द दुबे, कुलदीप शुक्ल, संतोष तिवारी, राहुल मिश्र आदि ने पारसनाथ शुक्ल के निधन सामाजिक क्षेत्र के अपूर्णनीय क्षति कहा है। वहीं सगरा सुंदरपुर उद्योग व्यापार मण्डल अध्यक्ष जाकिर अली, संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी, साहित्यकार हरिवंश शुक्ल, डॉ. अनुज नागेन्द्र आदि ने भी संस्कृत विद्वान आचार्य पारसनाथ के निधन को शैक्षिक क्षेत्र में रिक्तता कहा है।

कृषि सर्वे अभियान तथा मतदान केन्द्रों के चिन्हीकरण में लापरवाही अक्षम्यः एसडीएम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय तहसील सभागार में मंगलवार को सामान्य निर्वाचन तथा राजस्व कार्यो को लेकर हुई समीक्षा बैठक में एसडीएम ने मातहतों की नकेल कसी।

एसडीएम लालधर सिंह यादव ने निर्वाचन को लेकर सभी नामित सेक्टर मजिस्टेज्टो को मतदान केन्द्रों का भ्रमण कर क्रिटिकल और वनेर्बुल की पहचान करते हुए वहां प्रबन्धों के बाबत जानकारी तलब की है। एसडीएम ने इन मतदान केन्द्रों पर एमएफ के तहत पानी, बिजली, शौचालय तथा फर्नीचर आदि सुविधाओं की भी उपलब्धता का परीक्षण करने के निर्देश दिये हैं। उन्होनें सेक्टर मजिस्टेज्टों को संवेदनशील व असंवेदनशील बूथों पर एहतियातन आवागमन तथा प्रकाश व्यवस्था के बाबत भी निरीक्षण कर वास्तविकता से अवगत कराने को कहा है। वहीं बैठक में एसडीएम ने कृषि सवेर्कार अभियान को भी सप्ताह भर के भीतर पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिये है। एसडीएम ने आईजीआरएस से जुडे प्रार्थना पत्रों का भी राजस्व निरीक्षकों व लेखपालो को गुणवत्तापूर्वक समयबद्ध निस्तारण कराये जाने के कडे निर्देश दिये। उन्होनें तहसीलदार को निर्वाचन एवं राजस्व सम्बन्धित कार्यो की स्वयं नियमित समीक्षा करने को भी कहा है। बैठक में तहसीलदार धीरेन्द्र प्रताप सिंह, नायब तहसीलदार पंकज, केके तिवारी, केके सरोज, धर्मवीर, सुरेश यादव, प्रदीप सिंह आदि रहे।

उप कृषि निदेशक ने 50 कृषकों के समूह को उप कृषि निदेशक ने किया रवाना

अखंड भारत संदेश

कृषकों के समूह की बस को हरी झण्डी देकर रवाना करते उप कृषि निदेशक।

प्रतापगढ़। मुख्य विकास अधिकारी नवनीत सेहारा के निर्देश के क्रम में सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन योजनान्तर्गत राज्य स्तरीय कृषक भ्रमण हेतु कृषि विभाग परिसर से 50 कृषकों के समूह के बस को उप कृषि निदेषक विनोद कुमार यादव ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

कृषकों को केन्द्रीय औषधीय एवं संगध पौधा संस्थान (सीएमआईआर-सीमैप) में भेजा गया, कृषकों को जन औषधीय एवं संगध पौधों की खेती एवं बाजार वैज्ञानिक-उद्योग-कृषक संवाद, उन्नत पौध सामग्री व प्रकाशनों का विक्रय उन्नय पौध किस्मों व सीमैप उत्पादों का प्रदर्शन, आसवन इकाईयों/प्रसंस्करण का सजीव प्रदर्शन तथा अगरबत्ती व गुलाब जल बनाने का प्रशिक्षण जिसमें किसान मेले में प्रतिभागी किसान औषधीय एवं संगध पौधों के बारे में अनुसंधान एवं विकास के साथ बाजार की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी दी जायेगी। जानकारी प्राप्त करने हेतु जनपद के विकास खण्डों से गोपाल शरण सिंह, अजीत यादव, अशोक कुमार पटेल, राम सूरत पाण्डेय, विजय मौर्या, हरीराम पटेल, गुलाम मोहम्मद, बालकृष्ण, अशोक सिंह, अमित कुमार, रामजी पटेल, अमरनाथ, ओम प्रकाश पटेल आदि कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया जा रहा है, यह कृषक 03 फरवरी 2024 को प्रशिक्षण प्राप्त कर जनपद में वापस आएंगे।

तेज रफ्तार की अनियंत्रित कार दुर्घटनाग्रस्त, युवक की मौत, दो घायल

दुर्घटना में युवक की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शहर में चिलबिला ओवरब्रिज के समीप आज मंगलवार को अपरान्ह में लगभग तीन बजे एक तेज रफ्तार की कार अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई जिससे कार सवार तीन लोग घायल हो गये। सभी घायलों को तुरंत मेडिकल कालेज के अस्पताल लाया गया, जहां इलाज के दौरान घायल युवक पार्थ अग्रवाल पुत्र अतुल अग्रवाल निवासी रंजीतपुर चिलबिला की मौत हो गई।

घटना की सूचना मिलते ही पार्थ अग्रवाल के परिजनों में कोहराम मच गया। कोतवाली पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया है। कार सवार अन्य दोनों घायलों का इलाज किया जा रहा है। लालगंज प्रतिनिधि के अनुसार सांगीपुर थाना क्षेत्र के सुजाखर गांव निवासी मो, मोबीन 22 वर्ष पुत्र मो, जाहिल सोमवार देर रात दीवानगंज बाजार से साइकिल द्वारा घर वापस जाते समय गांव के पास सामने से प्रयागराज से प्राइवेट बस टक्कर मार दिया जिससे साइकिल समेत गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया ससूचना पर परिवार के सदस्यों ने घर ले गए स सुबह अस्पताल ले जाने के पूर्व मौत हो गई स मौत की जानकारी होने पर परिवार में कोहराम मच गया। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। दुर्घटना को लेकर मृतक की पत्नी हीना बानो ने पुलिस को अज्ञात बस चालक के खिलाफ लापरवाहीपूर्वक पति को टक्कर मारने की बात कही है। तहरीर के आधार पर पुलिस ने बस चालक के खिलाफ केस दर्ज किया है।

रामोत्सव में संगीतज्ञ बच्चाबाबू वर्मा ने भजन को दिया सुर, उपलब्धि पर प्रसन्नता

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। श्रीराम नगरी अयोध्या में हो रहे सांस्कृतिक आयोजनों में प्रतापगढ़ की भी सुरसरिता प्रवहमान हुई है। सांगीपुर स्थित गांधी इण्टर कालेज के संगीत शिक्षक डॉ. बच्चाबाबू वर्मा के भजनों की समां अयोध्या के रामोत्सव में सांस्कृतिक मंच पर बंधी दिखी। डॉ. बच्चाबाबू के अयोध्या रामनगरी में रामोत्सव के मंच साझा करने की जानकारी सोमवार को लोगों को यहां हुई तो संगीत प्रेमियों एवं साथी शिक्षकों तथा रामभक्तों मे खुशी छा गयी। उत्तर-प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के द्वारा डॉ. बच्चाबाबू वर्मा को वहां हो रहे रामोत्सव के तहत तेईस जनवरी को भजन संध्या में विशेष आमंत्रण मिला। वहां भव्य रामोत्सव में डॉ. बच्चाबाबू ने जब जिले के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. अनुज नागेन्द्र की रचना जन जन के मन में बसते हैं अपने रघुकुल नंदन राम तो वहां सराहना के सुर भी गूंज उठे। डॉ. बच्चाबाबू वर्मा ने अवध उ×ार प्रदेश के साथ अपने मूल राज्य उत्तरांचल के सांस्कृतिक संगीत के अनूठे संगम को रामोत्सव में सुमधुर आवाज दिया। प्रधानाचार्य डा. अमिताभ शुक्ल, पूर्व प्राचार्य डॉ. डीपी ओझा, पूर्व प्रधानाचार्य सुधाकर पाण्डेय, साहित्यकार महादेव मिश्र बम बम, संगीतज्ञ सशेन्द्र बहादुर सिंह, भागवतभूषण पं. विनय शुक्ल आदि ने डॉ. बच्चाबाबू वर्मा के रामोत्सव में हुई प्रस्तुति को जिले की आध्यात्मिक विशिष्टता की सुनहली पहचान बताया।

चैंपियन ट्रॉफी में आज राजीव प्रताप होंगे मुख्य अतिथि

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी मेला ग्राउंड में चल रहे चैंपियन ट्रॉफी क्रिकेट प्रतियोगिता में आज बुधवार को दो बजे मुख्य अतिथि के रूप में जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष तथा मंगरौरा के लोकप्रिय ब्लॉक प्रमुख राजीव प्रताप सिंह नंदन मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहेंगे। उक्त जानकारी देते हुए पट्टी नगर अध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल ने कहा कि राजीव प्रताप सिंह नंदन भैया हमेशा युवाओं के चाहेते नेता हैं उनकी लोकप्रियता ही उन्हें अलग बनाती है। बुधवार को दो बजे उन्होंने सभी क्रिकेट प्रेमियों तथा नगर वासियों से मेला ग्राउंड पट्टी में मौजूद रहने का आवाहन किया है।

अधिवक्ता की अस्वाभाविक मौत, दी गई श्रद्धांजलि

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। तहसील संयुक्त अधिवक्ता संघ के पूर्व उपाध्यक्ष एवं महामंत्री रहे जगन्नाथपुर निवासी वरिष्ठ अधिवक्ता अजय सिंह (55) का बिषैले जन्तु के काटने से आकस्मिक निधन हो गया। अधिवक्ता की अस्वाभाविक मौत की जानकारी पर साथी अधिवक्ता सोमवार की सुबह उनके आवास पर पहुंचे और शोकाकुल परिजनों को ढांढ़स बंधाया। वहीं मृतक अधिवक्ता की पुत्री की तहरीर पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा करा कर पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। तहरीर में अधिवक्ता की मौत सर्पदंश से होने की आशंका जतायी गयी। इधर साथी अधिवक्ता की मौत की जानकारी तहसील परिसर में पहुंची तो अधिवक्ताओं में मातम छा गया। आम सभा में संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश, उपाध्यक्ष लाल विनोद सिंह, महामंत्री धीरेन्द्र शुक्ल, देवी प्रसाद मिश्र, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, विपिन शुक्ल, संदीप सिंह, घनश्याम मिश्र, अनूप पाण्डेय ने अधिवक्ता अजय सिंह के निधन को संघ की अपूर्णनीय क्षति ठहराया। आम सभा में साथियों ने अजय के निधन पर न्यायिक कार्य से विरत रहने का प्रस्ताव पारित किया। इसके तहत सोमवार को दीवानी एवं तहसील में अदालती कामकाज नही हुआ। इस मौके पर उपाध्यक्ष शैलेन्द्र चतुवेर्दी, राममोहन सिंह, केबी सिंह, दिनेश सिंह, मो. ईसा, हरिशंकर द्विवेदी, विकास मिश्र, दीपक पाण्डेय, केके शुक्ला, सुमित त्रिपाठी, वीरेन्द्र सिंह, शेष तिवारी, कालिका प्रसाद पाण्डेय, राधारमण शुक्ल, हरकेश पटेल, नामवर सिंह, संतोष सिंह, प्रमोद सिंह, शैलेन्द्र सिंह बघेल, लाल राजेन्द्र सिंह, राजेन्द्र मिश्र, शिवाकांत उपाध्याय, टीपी यादव, कमलेश तिवारी आदि अधिवक्ता रहे।

नहीं बदली गई स्टेट बैक परियावां की एटीएम मशीन

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के अंतर्गत पाइकगंज बाजार परियावां मे स्टेट बैंक के बगल लगा बैंक का एटीम मशीन विगत एक महीने से मशीन के खराब होने से ग्राहकों को बैंक बंद रहने पर पैसा निकालने के लिए परेशानी का सामना करना पड़ रहा है जब कि एटीएम-मशीन बदलने के पानी ब्रांच मैनेजर ने अपने उच्च अधिकारियो को अवगत कराया लेकिन अभी तक मशीन बदलकर दूसरी एटीएम-मशीन नही लग सकी। स्थानीय लोगों ने बैंक के उच्च अधिकारियो का ध्यान इस ओर आकृस्ट कराते हुए जल्द से जल्द नयी एटीएम-मशीन लगाने की मांग की है जिससे ग्राहकों को परेशानी से निजात मिल सके मांग करने वालो मे सोम सोनी, अश्वनी कुमार,संजय कुमार, जतिन, अजय, श्रवण सोनी, सुधीर, बबलू, अनिल, गनेश ननके, राजेश, प्रदीप, पप्पू आदि लोगो ने एजीएम का ध्यान इस ओर आकर्षित कराया है।

रोजगार मेला आज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर के सलेम भदारी स्थित पुनीत औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में आज बुधवार को प्रातः दस बजे से उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन तथा राजकीय आईटीआई एवं जिला सेवायोजन कार्यालय के संयुक्त तत्वाधान में विकासखण्ड स्तरीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया। मेले में दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के अन्तर्गत पात्र लाभार्थियों को नियुक्ति पत्र भी प्रदान किया जाएगा।

बाल विवाह बाल श्रम एवं बाल यौन तस्करी से भारत को करना है मुक्त

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति चित्रकूट एवं जिला बाल संरक्षण इकाई के साथ बैठक का आयोजन आज दिनांक 30 जनवरी को विकास भवन सरस हाल मंझनपुर में किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत को बाल विवाह, बाल श्रम एवं बाल यौन तस्करी से मुक्त करना करवाना है जिसके तहत जिले के 80 ग्राम पंचायतो से आगंवानी कार्यकत्री एवं आशा कार्यकत्रीओ ने बैठक में प्रतिभाग किया ' कार्यक्रम में जिले से सुशील कुमार सीडीपीओ अजीत कुमार पीओ यूनिसेफ से अरविन्द पाण्डेय जवाहरलाल यादव बीइओ श्रीमती मालती देवी परामर्शदाता एवं संस्था जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति से परियोजना प्रबंधक मुदित मिश्र और परामर्शदाता राकेश द्विवेदी उपस्थित रहे। सुशील कुमार के द्वारा संस्था के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यो का उल्लेख करते हुए आये हुए सभी प्रतिभागियों से कहा कि उनके क्षेत्र में यदि कही बाल विवाह हो या हो रहा है या बाल श्रम किसी बच्चे से करवाया जा रहा हो तो निःशुल्क नंबर 1098 पर तत्काल सूचना दे और अपने आस पास के समाज को बाल विवाह एवं बाल श्रम से मुक्त बनाने में अपना अहम् योगदान दे ' जिला बाल संरक्षण इकाई से अजीत कुमार आये हुए प्रतिभागियों को बताया कि आज भी समाज कई वर्गों में बाल विवाह करवाया जा रहा है एवं नाबालिग बालको से जिनकी उम्र केवल विकास एवं शिक्षा के लिए है से बाल श्रम करवाया जा रहा है जिस पर अंकुश लगाने के सरकार के द्वारा कई प्रकार के प्रयास किये जा रहे है यद्यपि तमाम प्रयासों के बावजूद भी बहुतायत बाल विवाह एवं बाल श्रम बालको से करवाया जा रहा है अजीत जी बताया कि जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति इस कुप्रथा के खिलाफ अभियान चला रही है जिसमे आप लोग अपना सहयोग लोगो में बाल विवाह एवं बाल श्रम के प्रति जगुरुकता फैला कर सुनिश्चित करे ' कार्यक्रम में आये हुए यूनिसेफ से अरविन्द कुमार पाण्डेय ने बताया की समाज जिस तरह विकाश की ओर अग्रसर हैं उस प्रकार से हम आज भी पुरानी प्रथाओ एवं मानसिकता से उबर नही पा रहे है और जिसके चलते आज भी ऐसा घटित हो रहा हैं। समाज मे ऐसे भी वर्ग हैं जहाँ आर्थिक समस्या को कारण बताया जाता हैं तो कही पर अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होना भी एक अहम कारक के रूप में हैं। उस उम्र जहा पर लड़किया न तो शारीरिक तौर और न ही मानसिक स्तर पर परिपक्व हो पाती हैं उस कम उम्र में लडकियों का विवाह कर दिया जाता हैं । इस स्थिति में लड़की का शारिरिक, मानसिक दोनों स्तर पर शोषण होता हैं ' कार्यक्रम में संस्था के परियोजना प्रबंधक मुदित मिश्र ने आये हुए प्रतिभागियो को बताया कि संस्था किस प्रकार से कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेन्स फाउंडेशन के साथ मिलकर भारत को बाल विवाह से मुक्त बनाने का प्रयास कर रही है ' संस्था जनपद के 3 ब्लाक के 50 ग्राम पंचायत में ग्रामीण स्तर पर , विद्यालय के साथ, छोटे-छोटे जन समूहों के माध्यम से समाज के हर वर्ग तक पहुंच बनाकर बाल विवाह, बाल श्रम एवं बाल तस्करी जैसे मुद्दे पर लोगो को जागरूक एवं मानसिक स्तर पर शाशक्त बनाने का प्रयास कर रही है । बाल विवाह, बाल श्रम, शोषण, तस्करी जैसी बुराई को दूर करने एवं लोगो जागरूक करने के जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति अपने सहयोगी कार्यकर्ताओ के साथ प्रत्येक दिन बाल विवाह, बाल श्रम एवम बाल तस्करी जैसे संवेदनशील मुद्दों के खिलाफ अभियान के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर जहा पर बाल विवाह, बाल श्रम जैसी घटना अभी भी घट रही हैं लोग ऐसा न करें या न कर पाए के लिए इस कार्यक्रम को प्रतिदिन कई गाँवो मे कई स्थानों पर आयोजित किया जाता हैं । संस्था से काउन्सलर राकेश द्विवेदी ने बताया की बाल विवाह एवं बाल श्रम जैसी समस्या केवल अशिक्षा, बेरोजगारी के कारण ही समाज मे यह कुप्रथा का चलन अब भी बरकरार हैं । अभी भी समाज के कुछ वर्ग ऐसे भी हैं जहाँ पर परिवार धन होता हैं इस तरह मे बच्चो की संख्या अधिक होने के कारण उनका आर्थिक स्थिति खराब हो जाती हैं ' इस प्रस्थिति में बालको से बाल श्रम करवाया जा रहा हैं । वास्तव में देखा जाए तो हर समस्या घूमकर शिक्षा पर आती हैं यदि हमारा समाज शिक्षित होगा तो इस प्रकार की समस्याओं का बहुत हद तक निवारण हो सकेगा ' बाल विवाह एक सामाजिक अभिशाप है यदि ऐसा कही हो रहा हैं तो उस नाबालिग किशोर या किशोरी का बचपन, शिक्षा का हनन एवं शारीरिक एवं मानसिक शोषण हीं होता हैं क्योंकि जिस उम्र मे इनको सही शिक्षा एवं उचित पोषण की आवश्यकता होती है उस उम्र मे विवाह करना कानूनन अपराध हैं। यदि ऐसा हमारे आसपास कही हो रहा तो हम सब 1098 निः शुल्क नबर सूचना दे सकते हैं। इस प्रकार के प्रयास से हम सब किशोर एवम किशोरियों के बचपन को बचा सकते है तथा उनके जीवन को नया आयाम देना का प्रयास कर सकते है। इसके लिए समाज का हर तबके को जागरूक एवं शाशक्त बनाना होगा तब जाकर हम सब इस समाज को बाल विवाह, बाल श्रम एवं बाल तस्करी जैसी कुप्रथा से सुरक्षित कर पाएंगे और साथ मे इस पर अकुश लगा पाएंगे। ये प्रयास हमारा दायित्व हैं इसको ध्यान मे रखना पड़ेगा तब जाकर हम सब अपने समाज के नवनिहालो के बचपन को सुरच्छित कर पाएंगे। बैठक के अंत में सीडीपीओ सुशील कुमार के द्वारा आये हुए प्रतिभागियों को सपथ दिलाई गई एवं बाल बाल विवाह न करे या कही पर बाल विवाह हो रहा है तो उसमे भाग न लेकर उसका वहिष्कार करे और उसकी सूचना 1098 पर दे ' जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति एवम कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेन्स फाउंडेशन का एक मात्र लक्ष्य है कि भारत को बाल विवाह, बाल श्रम एवम बाल तस्करी मुक्त भारत बनाना है।

अपर पुलिस अधीक्षक ने ली परेड की सलामी

कौशाम्बी अपर पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी अशोक कुमार वर्मा द्वारा पुलिस लाइन में मंगलवार को परेड की सलामी ली गयी तथा परेड का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा परेड में उपस्थित समस्त पुलिसकर्मियों के टर्नआउट का अवलोकन कर बेहतर टर्नआउट मेंटेन करने हेतु निर्देशित किया गया। पुलिस कर्मियों को फिट रहने हेतु दौड़ लगवाई गई तत्पश्चात अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा बैरिक, कैंटन, जिम, डायल 112 कार्यालय, डीसीआर कार्यालय प्रतिसार निरीक्षक कार्यालय एवं मेस में भोजन की गणवत्ता को चेक किया गया तथा संबंधित को साफ सफाई हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

अवैध तमंचा और कारतूस के साथ युवक गिरफ्तार

कौशाम्बी अपराध करने की योजना में लगे एक युवक को चरवा थाना पुलिस ने अवैध तमंचा और कारतूस के साथ गिरफ्तार किया है पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक वाजिब अली उर्फ उन्नी पुत्र वाजिद अली निवासी कूड़ापुर थाना चरवा तमंचा कारतूस लेकर किसी आपराधिक घटना को अंजाम देने की योजना बना रहा था मुखबिर से चरवा पुलिस को सूचना मिल गई पुलिस ने वाजिव अली को तमंचा कारतूस के साथ गिरफ्तार कर लिया और लिखा पढ़ी करने के बाद अदालत में पेश कर दिया है।

पैसे लेकर गाड़ी देने से दबंग ने किया इन्कार युवक पहुंचा थाने

महगांव कौशांबी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मुजाहिदपुर पल्हना गांव के रहने वाले शिवम् गौतम पुत्र रोशन लाल ने संदीपन घाट थाना प्रभारी को लिखित शिकायती प्रार्थना देकर बताया कि उसने 45 हजार रुपए देकर राकेश चौधरी निवासी चिकवन का पुरवा मुरतगंज की ऑल्टो कार जिसका नम्बर डीएल 8सी 80231 को खरीदी थी। लेकिन जब शिवम् ने गाड़ी को अपने नाम ट्रान्सफर करने की बात कही तो रजिस्ट्रेशन एनओसी देकर गाड़ी ले लिया कहा की तीन दिन बाद गाड़ी ले लेना जब शिवम् गौतम के नाम गाड़ी ट्रांसफर न होने पर अपने पैसों की मांग की तो वहां पर मौजूद कमल सरोज व राकेश चौधरी एक राय होकर भद्दी भद्दी गाली गलौज देते हुए जान से मार डालने की धमकी देते हुए कहा कि दोबारा पैसा मगेगा तो जान से हाथ धो बैठेगा शिवम् गौतम ने लिखित शिकायती पत्र में बताया कि उक्त लोगो ने धमकी दी कि तेरा पैसा अब वापस नहीं होगा हम लोग नेता हैं हमारा तुम कुछ नहीं बिगड़ सकते हो जहा जाना है जाओ। पीड़ित ने मामले की सूचना जब संदीपन घाट थाना प्रभारी को दी तो मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई है।

चौकी इंचार्ज के खिलाफ शिकायती पत्र लेकर सीओ कार्यालय पहुंचा पीड़ित

कौशांबी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के कनैली चौकी इंचार्ज की अवैध वसूली चरम सीमा पर पहुंच गई है। कनैली चौकी इंचार्ज खाकी का सहारा लेकर लगातार अवैध धनादोहन में जुटे हुए हैं इनके कारनामें से क्षेत्र की जनता पूरी तरह से त्रस्त हो गई है। खाकी का सहारा लेकर कनैली चौकी इंचार्ज अवैध धनादोहन कर अकूत संपत्ति अर्जित कर रहे हैं यदि निष्पक्ष जांच हुई तो इनके कारनामें की पोल खुलना तय है। कनैली चौकी इंचार्ज के द्वारा हो रही अवैध वसूली के चलते खाकी के ऊपर बदनुमा दाग लगना स्वाभाविक हो गया है। तीन दिन पूर्व सराय अकिल थाना क्षेत्र के कनैली चौकी अंतर्गत डाड़ी गांव निवासी धनंजय कुमार पुत्र धर्म पाल का ट्रैक्टर ग्राम पंचायत कनैली में हो रहे ग्राम विकास कार्य में लगा हुआ था। ट्रैक्टर में कूड़ा करकट एवं मिट्टी भरकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर गिराया जा रहा था। कूड़ा करकट एवं मिट्टी लादते समय चौकी इंचार्ज और एक सिपाही मौके पर पहुंच गए और ट्रैक्टर ड्राइवर को भद्दी - भद्दी गाली देते हुए कानून का भय दिखाकर ट्रैक्टर मालिक से दस हजार रुपए ले लिए। अब यहां एक सवाल यह उठ रहा है कि यदि ट्रैक्टर का उपयोग नियम कानून के विपरीत हो रहा था तो ट्रैक्टर को सीज कर कार्यवाही करना चाहिए और यदि नियम कानून के विपरीत नही था तो गलत तरीके से कानून का भय दिखाकर ट्रैक्टर मालिक से दस हजार रुपए क्यों लिया गया। चौकी इंचार्ज से पीड़ित व्यक्ति शिकायती पत्र लेकर क्षेत्राधिकारी कार्यालय पहुंचकर न्याय की मांग की है।

महुआ नीम के काट दिया दर्जनों हरे पेड़ जिम्मेदार अधिकारी मौन

आधा दर्जन पिकअप वाहन इलाके में केवल जरायम के धंधे में लगे हैं जिन्हें चिन्हित किए जाने की जरूरत है

इलाके में पूरे वर्ष लकड़ी माफिया सक्रिय रहते हैं और वन विभाग वा पुलिस के साथ लुका छुपी का खेल खेलते हैं

टेढ़ी मोड़ कौशाम्बी कोखराज थाना के अंतर्गत काशिया गांव के पीछे महुआ की बाग में आज सुबह लकड़हारा दो हरे महुआ के पेड़ काट कर उसकी लकड़ी उठा ले गए इसी के साथ एक सप्ताह पहले टेढ़ी मोड़ पुलिस चौकी के अंतर्गत शहजादपुर हिसामपुर परसखी बमरौली में दर्जनों हरे नीम महुआ के पेड़ काटकर लकड़ी माफिया उठा ले गए हैं बीते 15 दिनों से इलाके में लकड़ी माफिया तेजी से सक्रिय है और प्रतिदिन हरे पेड़ों की कटाई हो रही है घूम घूम कर लकड़ी माफिया मजदूरों के साथ पेड़ की कटान में लगे हैं लेकिन उसके बाद भी विभागीय अधिकारियों ने लकड़ी माफियाओं पर रोक नहीं लगाई है बीते 15 दिनों से बेखौफ तरीके से हरे पेड़ो की कटाई जोरों पर चल रही है वैसे तो इलाके में पूरे वर्ष लकड़ी माफिया सक्रिय रहते हैं और वन विभाग वा पुलिस के साथ लुका छुपी का खेल खेलते हैं क्षेत्र के हल्का सिपाही व वन विभाग के अधिकारियों ने चुप्पी साध रक्खी है जिससे लकड़ी माफिया बेखौफ है पिकअप वाहन से प्रतिदिन लकड़िया परिवहन करते देखी जाती है आधा दर्जन पिकअप वाहन इलाके में केवल जरायम के धंधे में लगे हैं जिन्हें चिन्हित किए जाने की जरूरत है लेकिन वन विभाग से लेकर पुलिस को हरे पेड़ की लड़कियां परिवहन होती नहीं दिख रही है जिससे उनकी संलिप्तता से इनकार नहीं किया जा सकता पर्यावरण कैसे सुरक्षित रहेगा इस ओर अधिकारी भी गंभीर नहीं हैं।

किसानो की आय दुगुनी करने के लिए प्रति माह रू 2000 किसान सम्मान निधि भेजी जाए : अजय सोनी

सकिपा की ग्राम उदहिन खुर्द में संपन्न हुई चौपाल

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान मे ग्राम उदहिन खुर्द में 30 जनवरी मंगलवार को चौपाल का आयोजन किया गया। चौपाल में गांव के तमाम लोग शामिल हुए। इस अवसर पर लोगों ने ग्राम उदहिन खुर्द पुलिस चौकी से खनवारी माइनर के पुल तक ग्राम उदहिन खुर्द में जर्जर सड़क की मरम्मत एवं इसी मार्ग में हो रहे जलजमाव का मामला उठाया। इस संबंध में अजय सोनी ने बताया कि जलजमाव की समस्या के समाधान के लिए मेरे द्वारा जिला पंचायत कौशांबी में प्रस्ताव दिया जा चुका है जबकि जर्जर सड़क की मरम्मत के लिए जिला पंचायत कौशांबी एवं लोक निर्माण विभाग में मेरे द्वारा शिकायत की गई है। इस अवसर पर चौपाल के माध्यम से अजय सोनी ने केंद्र सरकार से किसान सम्मान निधि में बढ़ोत्तरी करने एवं प्रति माह रू 2000 किसानो के खाते में भेजने की मांग की है। अजय सोनी के मुताबिक इससे किसानो की आय दुगुनी करने की केंद्र सरकार की मंशा भी फलीभूत होगी और किसान कर्ज के बोझ से मुक्त होंगे। अजय सोनी ने केंद्र सरकार से प्रति माह रू 2000 किसान सम्मान निधि किसानो के खाते में भेजे जाने की मांग की है ताकि किसानो की आय दुगुनी हो सके। इस अवसर पर दादूराम चौधरी, जवाहर लाल मास्टर, प्रकाश राय, चंद्र प्रकाश राय, राजेश विश्वकर्मा, चंद्रशेखर, कमला देवी, सुनीता देवी समेत कई लोग मौजूद रहे।

किसानों ने सिराथू तहसील का किया घेराव, आवारा पशुओं सहित 6 बिंदुओं पर एसडीएम को सौपा ज्ञापन

कौशाम्बी। जिले के सिराथू तहसील मे मंगलवार को भारतीय किसान मजदूर संयुक्त यूनियन के किसानों ने एसडीएम का घेराव किया। किसान गाव मे बाहर घूम रहे आवारा पशुओं से बेहद परेशान है, ककोढ़ा गांव मे बार बार मांग के बाद भी गौशाला न बनाकर आवारा पशुओं को खुली छूट देने पर किसानों ने नाराजगी जताई है। ऐसे में किसान की परंपरागत एवं नकदी फसल आवारा पशु झुंड के झुंड में चर कर खत्म कर दे रहे।आवारा पशुओं से लगातार जूझ रहे किसानों को भारतीय किसान मजदूर संयुक्त यूनियन अराजनैतिक का साथ मिला है। दर्जनों की संख्या में किसानों ने आवारा पशुओं की समस्या को लेकर सिराथू तहसील परिसर मे बैठक की। बैठक में किसानों ने प्रमुखता से फसल की बबार्दी का मुद्दा उठाया। किसान नेता नरेंद्र पाण्डेय ने बताया कि सिराथू तहसील के कसिया ककोढा गाव मे 5 माह पहले की शिकायत के बाद भी गौशाला का निर्माण नहीं कराया गया। जिससे आसपास के गाव के किसान की फसल आवारा पशु नष्ट कर दे रहे है। मजबूरन किसान को रात रात भर जाग कर खेतो की रखवाली करना पड़ रहा है।बैठक मे आवारा पशुओं की समस्या का मुद्दा सामने आने के बाद किसानों ने नारेबाजी करते हुए एसडीएम का घेराव किया है।प्रदर्शन के बाद किसानों ने अपनी 6 सूत्रीय मांग का पत्र एसडीएम को सौपा। किसान नेता ने गौशाला मे पशुओं को सुरक्षित कर फसलों को नष्ट होने के बचाए जाने की मांग उठाई। एसडीएम ने किसानों को डीएम राजेश राय के सामने मांग पत्र रख कर विस्तृत अभियान चलाकर पशुओं को संरक्षित कराये जाने का आश्वासन दिया है।

महात्मा गांधी ने दिलाई थी अंग्रेजो से देश को आजादी : वेद प्रकाश यादव

सकिपा के तत्वावधान में कौशांबी ब्लॉक के मालीपुर महराजगंज में महात्मा गांधी की पुण्यतिथि मनाई गई

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान मे कौशांबी ब्लॉक के ग्राम मालीपुर महराजगंज में पार्टी के पूर्व जिला महासचिव वेद प्रकाश यादव की अगुवाई में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर पार्टी कार्यकताओं ने उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हे याद किया और महात्मा गांधी अमर रहें... अमर रहें... के नारे लगाए। मंगलवार 30 जनवरी को समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान मे कौशांबी ब्लॉक के ग्राम मालीपुर महराजगंज में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर लोगो को उनके जीवन के बारे में बताते हुए पार्टी के पूर्व जिला महासचिव वेद प्रकाश यादव ने कहा कि महात्मा गांधी ने देश को अंग्रेजो से आजादी दिलाई थी। उन्होंने दुनिया को सत्य और अहिंसा का रास्ता दिखाया था। 30 जनवरी साल 1948 में उनकी हत्या हुई थी। देश हमेशा उनका ऋणी और कृतज्ञ रहेगा। इस अवसर पर मक्खन लाल यादव, सत्य प्रकाश यादव, महेंद्र कुमार, अंतिम कुमार, श्यामकली, साधना, हीरामनी आदि मौजूद रहे।

फर्जी संस्था का प्रमाण पत्र देकर युवक से ठगे हजारों रुपए, थाने में शिकायत दर्ज

महगांव कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना में एक अजीबो गरीब मामला सामने आया है जहां एक युवक को फर्जी संस्था का पदाधिकारी का प्रमाण पत्र बनाकर हजारों रुपए ठग लिया गया लेकिन जब युवक ने इसकी सत्यता के बारे में जाना तो उसके पैरो तले जमीन खिसक गई और युवक न्याय के लिए पुलिस के पास गया। जानकारी के अनुसार विक्रम सिंह पुत्र सोहन लाल निवासी ग्राम पठनपुरवा मूरतगंज थाना संदीपन घाट ने थाना प्रभारी को लिखित शिकायती प्रार्थना पत्र देकर बताया कि राकेश चौधरी निवासी ग्राम चिकवन का पुरवा मूरतगंज थाना संदीपन घाट जनपद कौशाम्बी ने उससे 10 हजार रुपए लेकर जनसंख्या समाधान फाउन्डेशन नाम की एक संस्था में जिला उपाध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया गया था जिसका एक प्रमाण पत्र बनाकर दिया गया था जब विक्रम सिंह को जब पता चला की यह फाउंडेशन फर्जी है जिसका कोई महत्व नहीं है तब विक्रम सिंह अपने पैसों की मांग करने लगा तो राकेश चौधरी के द्वारा गाली गलौज व जान से मार डालने की धमकी दी जा रही हैं और उक्त पीड़ित की कहता है की पैसा मांगा तो तुम्हे फर्जी मुकदमा लिखवा कर जेल भेजवा दूंगा साथ ही विक्रम ने बताया की मामले में झगड़ा करवाने व उकसाने में कमल सरोज निवासी सैलानी थाना कोखराज की पूरा सहयोग रहता है। कमल सरोज का कहना है की जब तक हम है राकेश चौधरी का कोई कुछ नहीं कर सकता है इसी तरह गलत काम करते रहेंगे कोई रोक नहीं सकता है जहा जाना है जाए और जितनी शिकायत करनी है करे हालाकि संदीपन घाट पुलिस ने मामले की रिपोर्ट दर्ज कर जांच कर उचित कार्यवाही करने की बात कही है।

प्राचीन मंदिर आने जाने के रास्ते में भरा रहता है पानी

मंदिर तक सड़क का रास्ता न होने से भक्तों को मंदिर आने-जाने में हो रही दिक्कत को दूर करने का प्रयास नेताओं ने नहीं किया

कौशाम्बी। चरवा क्षेत्र के पकसराई में सैकड़ो वर्ष पुरानी आनंदी माता का मंदिर है इस मंदिर की भूमि राजस्व विभाग में 85 नंबर आरजी में आनंदी माता के नाम दर्ज है आस्था के इस केंद्र तक पहुंचाने का रास्ता कठिन है मंदिर तक जाने की सड़क नहीं है रास्ते में पानी भरा रहता है जिससे भक्तों को आने-जाने में दिक्कत होती है कई बार लोगों ने अधिकारियों और नेताओं से मंदिर तक सड़क बनाए जाने इंटरलॉकिंग लगाए जाने पेड़ पौधे लगाए जाने की मांग की लेकिन जनप्रतिनिधि भी नहीं पसीजे और अधिकारी भी नहीं पसीजे है जिससे मंदिर तक जाने का रास्ता नहीं बन सका है आनंदी माता के मंदिर के चारो ओर आज तक कोई तो बाउंड्री वाल का निर्माण नही हुआ है आस्था के इस मंदिर को सुरक्षित करने के लिए नेताओं अधिकारियों ने पहल नहीं की जिससे मंदिर परिसर में चारों तरफ दीवाल का निर्माण नहीं हो सका है रास्ता नहीं बन सके हैं मंदिर के रास्ते में पानी भरा रहता है लेकिन मंदिर की समस्या को दूर करने के लिए खंड विकास अधिकारी ने भी प्रयास नहीं किया है। कई बार मंदिर के पुजारी ने मंदिर तक आने जाने के रास्ते को बनाए जाने की मांग की पानी भरे रास्ते को समतल करने के लिए मिट्टी की मांग की गई लेकिन अधिकारियों की उपेक्षा से वह भी नहीं पूरा हो सका इंटरलॉकिंग कराया जाना तो दूर की बात है जबकि ग्राम पंचायत के बजट से मंदिर तक मिटटी डलवा करके इंटरलॉकिंग का निर्माण करवाया जा सकता है जिससे मंदिर जाने आने वाले भक्तों की दिक्कत दूर हो सकती है मंदिर की व्यवस्था में लगे पुजारी का कहना है कि मंदिर के रास्ते मे इंटरलॉकिंग की आवश्यकता है मंदिर परिसर और रास्ते में पेड़ पौधे लगाए जाएं और मंदिर की शोभा को आगे बढ़ाया जाए मंदिर के पुजारी ने मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार के साथ अधिकारियों को पत्र भेजकर अनुरोध किया है कि इस प्राचीन मंदिर को ध्यान में रखते हुए किसी विभाग से रास्ता का निर्माण और बाउंड्री वाल का निर्माण कराए जाने के साथ-साथ मंदिर परिसर और रास्ते में पेड़ पौधे लगाए जाए अब देखना यह है कि धर्म आस्था की बात करने वाली योगी सरकार में इस प्राचीन मंदिर तक आने जाने का रास्ता बन पाता है या फिर केवल भाषण बाजी तक सब कुछ सीमित रहेगा।

न्यूज झरोखा

राजेश राय बने कौशांबी के जिलाधिकारी

कौशांबी। शासन ने सोमवार की देर रात कौशांबी के जिलाधिकारी सुजीत कुमार का स्थानांतरण कर दिया है उनके स्थान पर शासन ने सचिव होम राजेश रॉय आईएएस को कौशांबी का जिला अधिकारी नियुक्त किया है।

इंटरलॉकिंग सड़क का नगर अध्यक्ष कविता पासी ने किया निरीक्षण

हर्रायपुर कौशाम्बी नगर पालिका परिषद भरवारी अंतर्गत वार्ड नंबर 18 मोतीलाल आजाद नगर में इंटरलॉकिंग सड़क व नाली का निर्माण नगर पालिका के ठेकेदार द्वारा किया जा रहा था लेकिन आसपास के लोगों द्वारा नाली सड़क निर्माण में ब्यवधान डाला जा रहा है अतिक्रमण हटाने के लिए लोग तैयार नहीं थे जिसकी शिकायत लोगों ने नगर पालिका के अध्यक्ष से की लोगों की शिकायत पर नगर अध्यक्ष कविता पासी व लिपिक बबलू गौतम ने मौके पर निरीक्षण किया हुआ और मोहल्ले को लोगों से वार्ता कर सड़क नाली निर्माण के बाधा को समाप्त कराया ठेकेदार को मानक के हिसाब से सड़क बनवाने का निर्देश दिया।

गांधी चबूतरे में कांग्रेसियों ने गाया राष्ट्रगान

कौशाम्बी राहुल गांधी की चल रही भारत जोड़ो नया यात्रा के समर्थन में आज मंझनपुर मुख्यालय में जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा गांधी चबूतरा में "रघुपति राघव राजा राम" का भजन गया गया आज देश में हो रही अन्याय के विरोध में महंगाई तथा भ्रष्टाचार के विरोध में राहुल गांधी भारत जोड़ो न्याय यात्रा कर रहे हैं उसके समर्थन में आज कांग्रेसियों ने गांधी चबूतरे में बैठ करके रघुपति राघव राजा राम भजन गया तथा राहुल जी को समर्थन दिया। आज के कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश कांग्रेस के प्रदेश महासचिव रामकिशन पटेल कौशांबी लोकसभा के प्रभारी राजेश राकेश, प्रदेश सचिव एवं कौशांबी कांग्रेस के प्रभारी राजेश साहनी, जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष आशीष मिश्रा पप्पू , उपाध्यक्ष देवेश श्रीवास्तव, महासचिव कौशलेश द्विवेदी, राज नारायण राज, रामप्रकाश, सचिन शुक्ला, शशि त्रिपाठी महासचिव बरसाती लाल पांडा देव कुमार सोनकर, शाहिद सिद्दीकी, तमजीद अहमद आबिद बेगम, जितेंद्र शर्मा फैसल अली आदि उपस्थित रहे।

ग्राम समाज की भूमि पर हो रहे कब्जे के खिलाफ की गई शिकायत

कल्यानपुर कौशबी। सिराथू तहसील क्षेत्र के ग्राम चकिया, मजरा बिदनपुर ककोढ़ा में ग्राम समाज की भूमि पर अवैध तरीके से कब्जा किया जा रहा है। श्रीराम पटेल पुत्र स्व जीतलाल ने अवैध कब्जा धारकों हनुमान प्रसाद पुत्र स्व० राम नेवाज व रजनीश, मंजीश पुत्रगण हनुमान प्रसाद तथा कुइया पुत्र स्व० बिन्देश्वरी के खिलाफ उप जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर बताया कि उपरोक्त लोग दबंग किस्म के व्यक्ति हैं और दबंगई के बल पर ग्राम सभा की आबादी भूमि पर अवैध कब्जा करने की नीयत से कई ट्रैक्टर मिट्टी डलवा दिया है और मना करने पर लड़ाई - झगड़ा पर आमादा हो गए हैं। उपरोक्त लोगों ने प्रार्थी के खेतो की सिंचाई में उपयोग होने वाली नाली व रास्ते पर भी कब्जा कर लिया है जिससे प्रार्थी की सिंचाई बाधित हो गयी है। प्रार्थी का कहना है कि हनुमान प्रसाद सहित आदि लोगों के द्वारा अपनी भूमिधरी आराजी संख्या- 1263 के सामने स्थित ग्राम सभा की सुरक्षित आबादी की भूमि को हडपकर सरकारी सम्पत्ति को क्षति कर रहे हैं। प्रार्थी श्रीराम पटेल ने उपजिलाधिकारी सिराथू को शिकायती पत्र देकर ग्राम सभा की आबादी भूमि को कब्जा मुक्त कराते हुए लोक सम्पत्ति क्षति नि० अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर कार्यवाही की मांग की है।

जन शिक्षण संस्थान द्वारा पीएम विश्वकर्मा का पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का किया आयोजन

कौशाम्बी जन शिक्षण संस्थान कौशांबी ने पीएम विश्वकर्मा योजना के तहत संस्थान के कार्यालय में प्रशिक्षण के पहले बैच दर्जी टेलर कौशल पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ जिला उद्योग केंद्र कौशांबी के उपायुक्त के के अमर एवं जन शिक्षण संस्थान के निदेशक राजकुमार पांडे ने सरस्वती प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण करते हुए किया तथा शुभारंभ के बाद उपायुक्त के के अमर ने प्रशिक्षण शुरू करने की जन शिक्षण संस्थान कौशांबी को बधाई दी तथा पीएम विश्वकर्मा? योजना के महत्व पर प्रकाश डाला और इस पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों के जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया इस योजना का उद्देश्य कौशल उन्नयन प्रदान करना कारीगरों के कौशल को निखरना और उनकी क्षमताओं को बढ़ाना तथा विभिन्न प्रतिभागियों को पीएम विश्वकर्मा योजनाओं के बारे में विस्तृत पूर्वक बताएं उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला उद्योग केंद्र के असिस्टेंट मैनेजर संदीप नितिन ने भी विभाग की योजनाओं को बताया जन शिक्षण संस्थान के निदेशक राजकुमार पांडे ने उपायुक्त का स्वागत एवं अभिनंदन किया तथा उपायुक्त को बताया कि 42 प्रशिक्षार्थी ने जन शिक्षण संस्थान कौशांबी द्वारा पीएम विश्वकर्मा के तहत पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के कार्यक्रम अधिकारी संजय सिंह सहायक कार्यक्रम अधिकारी विजेंद्र मिश्रा श्रद्धा तिवारी राजू शुक्ला सतीश एवं प्रशिक्षिका स्वाती मिश्रा सुनीता देवी रेखा देवी तथा 42 प्रशिक्षार्थी मौजूद रहे

गरीबों के घर को दबंगों ने गिराया थाने में शिकायत

कोखराज कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के मकदूमपुर काजी नेवादा में ग्रामीणों गरीबों के घर को दबंगों ने जबरिया गिरा दिया है जिससे लोगों में आक्रोश ब्याप्त है ग्राम प्रधान के नेतृत्व में दर्जनों ग्रामीण थाना पहुंचे और दबंगों के खिलाफ शिकायत की है ग्राम सभा की जमीन पर गरीबो के बने मकान को मंगलवार को दबंगों ने जबरिया गिरा दिया घर गिराए जाने का लगातार ग्रामीण विरोध कर रहे थे लेकिन दबंग नहीं माने बताते चले कि गरीबों को यह जमीन ग्राम प्रधान द्वारा पट्टे पर दी गई थी जिस पर ग्रामीणों ने निर्माण किया था दबंग के कारनामे से पीड़ित दर्जनों ग्रामीण थाना पहुंचे घेराव किया नारेबाजी कर न्याय की मांग की और ग्राम प्रधान अटल मौर्या के साथ अजय ज्ञानचंद रोशनी देवी ललित मौर्य लालचंद राजरानी रामचंद्र सुशील सहित दर्जनों ग्रामीण लोगों के साथ थाना पहुँचे ग्रामीणों ने कोखराज थानेदार को तहरीर देकर घर को गिराने वालों के खिलाफ कार्यवाही करने की मांग की है,और ग्रामीणों ने बताया कि अगर हमारी सुनवाई नहीं हुई तो हम सब उच्च अधिकारियों से मिल कर अपनी सिर के ऊपर से छत छीनने वाले पर कार्वाई किए जाने की मांग करेंगे।

संपादक की कलम से

नीतीश ने पाला बदलकर विपक्षी एकता की जड़ें हिला दीं

आखिर बिहार में नीतीश और उनके जदयू ने विपक्ष के गठबंधन आईएनडीआईए से अपना नाता तोड लिया। नीतीश कुमार विपक्षी दलों के गठबंधन इंडिया अलायंस के सूत्राधार रहे हैं। उन्होंने भाजपा के विरुद्ध विपक्ष को एकजुट करने की शुरूआत की। एक दूसरे के धूर विरोधी दलों को एक साथ बैठाया, ऐसे में उनके पलटी मार देने से इस गठबंधन को लेकर भी सवाल खड़े होने लगे हैं। नीतीश को बिहार का पलटू राम कहा जाता है, पलटू राम इस बार पलटीमार कर विपक्ष की एकता की जड़े ही हिला गए। उनके भाजपा के साथ जाने से जनता में साफ संदेश गया कि ये एका सिद्धांत का नही स्वार्थ का था। नीशीथ का प्रयास विपक्ष का प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनने का था। उसमें असफल होने और अपने प्रदेश में हुए घटनाक्रम के कारण वे अपनी मुख्यमंत्री की कुर्सी बचाने के लिए भाजपा के साथ चले गए।

नीतीश कुमार ने खुद विपक्षी दलों को एकजुट करने में पिछले कई माह काफी मेहनत की थी। उन्होंने शुरूआत में ऐसे दलों को कांग्रेस के साथ बिठाने में कामयाबी हासिल की जो राहुल गांधी और उनकी पार्टी को लेकर सवाल उठाते रहे थे। नीतीश कुमार पश्चिम बंगाल में सरकार चला रहीं ममता बनर्जी, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव को साथ लाने में कामयाब रहे। पटना में गठबंधन की पहली बैठक कराने को भी उनकी कामयाबी माना गया। दूसरी बैठक के बाद से ही नीतीश कुमार के असहज होनी की चर्चा शुरू हो गई। तब कांग्रेस फ्रंट फुट पर आती दिखी। रिपोर्टों में दावा किया गया कि गठबंधन संयोजक न बनाए जाने से वो नाखुश हैं। विपक्षी गठबंधन का नाम इंडिया रखने को लेकर भी मीडिया रिपोर्टों में कहा गया कि नीतीश कुमार ने शिकायत की थी कि उनसे सलाह नहीं ली गई। उनका मानना था कि इंडिया में एनडीए आता है, इसलिए ये नाम न रखा जाए, किंतु उनकी नही सुनी गई। हालांकि, नीतीश कुमार ने अपनी नाराजगी की रिपोर्टों को खारिज कर दिया था।

रविवार को बीजेपी के अगुवाई वाले गठबंधन एनडीए के साथ जाने का फैसला करने के बाद खुद नीतीश कुमार ने अपनी असहजता को साफ बयां किया कि ह्यकुछ ठीक नहीं चल रहा था। दरअस्ल यह चाहते थे कि उन्हें गठबंधन का प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया जाए, किंतु 19 दिसंबर को हुई इंडिया गठबंधन की बैठक कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का नाम प्रधानमंत्री पद के लिए सुझाए जाने पर उन्होंने कोई प्रतिक्रिया तो नही दी किंतु उनका गठबंधन से मन उचटने लगा। उन्हें लगने लगा कि कांग्रेस विपक्षी गठबंधन पर हावी होना चाहती है। राहुल की भारत न्याय यात्रा ने इस विद्रोह में आग में घी का काम किया। कायदे से यात्रा उन प्रदेशों में निकलनी चाहिए थी, जहां कांग्रेस की सरकार हैं। बिपक्षी दलों के सरकार वाले प्रदेश में स्थानीय दल की मर्जी से उसे साथ लेकर ये यात्रा की जानी चाहिए थी।किंतु ऐसा नही हुआ। बंगाल में यात्रा पहुंचने पर ममता बनर्जी को लगा कि उन्हें कमजोर करने के लिए उनके प्रदेश से यात्रा निकाली जा रही है। जरा-जरासी बात पर नाराज होने वाली ममता इस यात्रा के बंगाल में आते ही उछल गईं। उन्हें लगा कि राहुल और कांग्रेस इसके माध्यम से उन्हें कमजोर करना चाहते है। सो उन्होंने बंगाल में अकेले अपने बूते पर पूरे प्रदेश में चुनाव लडने की घोषणा कर दी। यात्रा बिहार में भी आनी थी। बिहार में नीतीश को अपने सहयोगी रहे लालू यादव के रवैये से लगा कि वह उनकी पार्टी में तोड़फोड़ करना चाहते हैं। दरअस्ल नीतीश कुमार के इस पलट के पीछे उनकी पार्टी में चल रही राजनीति थी। नीतीश कुमार को पिछले महीने इसकी भनक तब लगी जब पार्टी के कुछ विधायकों ने पार्टी लाइन से हटकर मीटिंग की थी। इसके साथ ही नीतीश ने तेजी दिखाते हुए ललन सिंह को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद से हटा दिया था तथा खुद पार्टी के अधयक्ष बन गए थे। तभी से कयास लगाए जा रहे थे कि उनकी पार्टी में सब कुछ सही नहीं चल रहा है और उनके और लालू यादव के रास्ते अलग होने वाले हैं। लालू यादव नीतीश पर दबाव दिए थे कि वे तेजस्वी को मुख्य मंत्री बनाएं। नीतीश कुमार ने रविवार को बिहार के महागठबंधन से अलग होकर बीजेपी की अगुवाई वाले एनडीए का हाथ थाम लिया। दोनों ने मिलकर सरकार बना ली। शपथ भी हो गई। ये भी तै हो गया कि जदयू और भाजपा मिलकर बिहार में लोकसभा चुनाव लड़ेंगे। बीजेपी का प्रयास था कि वह विपक्ष की एकता तोड़ सके, सो वह उसमें कामयाब हो गई। उसने बड़ा सोच समझकर ये निर्णय लिया। भाजपा को नीशीथ के साथ लेने से लोकसभा चुनाव में बिहार में फायदा ही होगा नुकसान नही। दूसरे विपक्ष में टूट करके वह इस टूट का फायदा उठाने में लग गई है। उसने प्रचार शुरू कर दिया कि ये स्वार्थ का गठबंधन है। बिहार में सत्ता परिवर्तन के तुरंत बाद बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि ह्यइंडी अलायंसह्ण सैद्धांतिक रूप से असफल हो चुका है। नड्डा ने पत्रकारों से कहा, हम पहले भी कह चुके हैं कि इंडिया अलायंस अवित्र, गैरवैज्ञानिक है और यह ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा। और भारत जोड़ो यात्रा जो बेनतीजा समाप्त हुई और अभी की इनकी अन्याय यात्रा और भारत तोड़ो यात्रा और इंडी अलांयस है, यह सैद्धांतिक तौर पर विफल हो चुका है।

आत्मनिर्भर,स्वतंत्र राष्ट्र सुनहरे और स्वाभिमानी भविष्य को जन्म देता है

"पराधीन सपने हूं सुख नाही"यह लोकोक्ति हर स्वाभिमानी आदमी और स्वतंत्रता प्रेमी व्यक्ति को याद रहती है। स्वावलंबन या आत्मनिर्भरता ही मनुष्य को स्वाधीन बनाने की प्रेरणा देती है। आत्मनिर्भरता की स्थिति में व्यक्ति अपनी इच्छाओं को अपनी सुविधा अनुसार पूरा कर सकता है, इसके लिए दूसरों की तरफ मुंह ताकने की जरूरत नहीं पड़ती है। आत्मनिर्भरता केवल मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप से ही जरूरी नहीं है, बल्कि राष्ट्र के लिए भी अति आवश्यक है ।एक स्वतंत्र राष्ट्र अपनी जनता को अपनी क्षमता के अनुसार सारी सुविधाएं तथा अन्य जीवन उपयोगी साधन उपलब्ध करा सकता है। भारत स्वतंत्रता के बाद हरित क्रांति सातवें दशक के प्रारंभ के बाद ही खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बन सका, इसके साथ ही भारत में खुशहाली की स्वाभाविक तौर पर वृद्धि हुई, पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी कहा था कि "एक राष्ट्र की शक्ति उसकी आत्मनिर्भरता में है दूसरों से उधार लेकर काम चलाने में नहीं",पाकिस्तान की स्थिति बिल्कुल ऐसी ही है वह अभी तक स्वतंत्रता के बाद से 75 वर्ष के बाद भी संपूर्ण रूप से आत्मनिर्भर नहीं हो पाया है, वह कर्जे से डूब गया है और अपने देश में खर्चा चलाने के लिए पूरी दुनिया से उधार मांगते हुए घूम रहा है। पाकिस्तान आत्मनिर्भर नहीं होने का एवं उधार की जिंदगी जीने का एक बहुत बड़ा उदाहरण है। जबकि भारत देश विज्ञान, टेक्नोलॉजी, मेडिकल साइंस,इंजीनियरिंग और कृषि सेवा, खनिज,स्पेस रिसर्च में पूर्णता आत्मनिर्भर होकर विकसित देशों के बराबर खड़ा हुआ है। यह देशवासियों और देश के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। आत्मनिर्भरता या स्वावलंबन किसी भी देश की प्रगति विकास तथा और उसके नागरिकों की जिंदगी की जिजीविषा है जिससे वह संघर्ष कर आगे बढ़ता है। इतिहास गवाह है कि किसी भी महान लेखक को महान बनने तक निरंतर मेहनत कर किताबें लिखने का का श्रम करना पड़ा एवं आत्मनिर्भरता की स्थिति में विचार कर अपने विचारों को लिपिबद्ध करना पड़ा तब जाकर वह महानता की श्रेणी को प्राप्त कर सका। इसी तरह कोई छात्र अपने जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता है तो उसे स्वयं परीक्षा में शामिल होना पड़ेगा एवं परीक्षा में मनोवांछित सफलता प्राप्त कर उसे स्वयं अध्ययन करना होगा। इसी प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में भी मनुष्य को आत्मनिर्भर होकर मेहनत कर दीक्षित सफलता प्राप्त करनी पड़ेगी।

हमारा देश भारत भी आजादी के बाद से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रेषित हुआ आज स्थिति यह है कि वह विश्व में विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आ खड़ा हुआ है। तमाम महापुरुषों के जीवन से भी हमें आत्मनिर्भरता तथा स्वावलंबन की शिक्षा मिलती रहती है ।महात्मा गांधी अपना कार्य स्वयं किया करते थे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी "दैव दैव आलसी" पुकारा है, तब जाकर उनकी जिंदगी पटरी पर आई और हमें परिश्रम कर आत्म निर्भर होने की शिक्षा प्रदान की थी। दूसरों पर निर्भरता हमें दूसरों का अनुसरण करने के लिए मजबूर करती है। दूसरों पर निर्भर होने से हमें के अनुरूप ही जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ता है। पराधीनता हमारा आत्मविश्वास सृजनशीलता सोचने की शक्ति को नष्ट कर देती है। गुलामी एक अभिशाप होती है, आत्मनिर्भरता की कमी हमें किंकर्तव्यविमूढ़ बना देती है।

साझेदारी के शिखर पर भारत–फ्रांस

अरविंद जयतिलक (वरिष्ठ पत्रकार)

75 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की भारत यात्रा ने दोनों देशों के रिश्ते को मिठास से भर दिया है। राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की भारत की यह तीसरी यात्रा है। इससे पहले वे वर्ष 2018 में भी गणतंत्र दिवस के मुख्य अतिथि बने थे। दोनों देशों के बीच कितना मधुर संबंध है, वह इसी से समझा जा सकता है कि 1976 से लेकर अब तक 5 बार फ्रांस के राष्ट्रपति गणतंत्र दिवस की शोभा बढ़ा चुके हैं। इस समय दोनों देश रणनीतिक साझेदारी की 25 वीं वर्षगांठ मना रहे हैं।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के बीच कई विषयों पर सहमति बनी है जो दोनों देशों के लिए बेहद फायदेमंद है। फ्रांस की ओर से भारतीय छात्रों के शेंगेन वीजा की वैधता 5 साल का एलान किया गया है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले भारतीय छात्रों को फ्रांस में तीन महीने से लेकर केवल एक साल तक ही रहने की अनुमति थी। दोनों देशों के बीच पढ़ाई से लेकर रोजगार के मसले पर बातचीत हुई। दोनों देश युवा पेशेवर योजना की घोषणा की है जिसके तहत 18 वर्ष से 35 वर्ष के युवाओं को एकदूसरे के देश में कमाई के रास्ते खुलेंगे। इसके अलावा दोनों देशों के बीच डिफेंस स्पेस पार्टनरशिप, सैटेलाइट लांच के लिए नए स्पेस इंडियन लिमिटेड और एरियन स्पेस के बीच एमओयू हुए हैं। टाटा और एयरबस स्थानीय कंपनी के साथ मिलकर 125 हेलीकॉप्टर बनाएंगे। दोनों देशों के बीच विज्ञान, तकनीक, स्वास्थ्य सेवा सहयोग, कृषि समेत पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एंड रिफ्राम्स के मसले पर भी सकारात्मक चर्चा हुई। राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने ओलंपिक खेलों की मेजबानी के लिए भारत के इरादे का समर्थन किया है। गौर करें तो मौजूदा समय में दोनों देशों के संबंध शिखर पर हैं। याद होगा जब गत वर्ष भारतीय प्रधानमंत्री फ्रांस के बैस्टील डे परेड प्रोग्राम में गेस्ट ऑफ आनर्स के तौर पर शामिल हुए तो उन्होंने फ्रांस के साथ रिश्ते को संदर्भित करते हुए कहा कि दोनों के साझा मकसद हैं। आतंक की लड़ाई में भारत फ्रांस के साथ है। दोनों देश 25 वर्ष की भरोसे की मजबूत नींव पर अपने कर्तव्यों की निर्वहन कर रहे हैं। रक्षा सहयोग दोनों देशों के संबंधों का आधार है। प्रधानमंत्री मोदी ने फ्रांस को ह्यमेक इन इंडियाह्ण और आत्मनिर्भर भारत का महत्वपूर्ण साझीदार बताते हुए सुनिश्चित किया कि दोनों देश पनडुब्बी हो या नौसैनिक विमान सभी क्षेत्र में कंधा जोड़ आगे बढ़ने को तैयार हैं। तब दोनों देश ह्यभारत-फ्रांस हिंद-प्रशांत रोडमैपह्ण जारी करते हुए रणनीतिक रुप से महत्वपूर्ण हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक संतुलित और स्थिर व्यवस्था बनाने पर सहमति जाहिर की।

गौरतलब है कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रीयूनियन द्वीप, न्यूकैलेडोनिया और फ्रेंच पोलिनेशिया जैसे क्षेत्रों में व्यापक उपस्थिति है। इस पहल से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती दादागिरी पर रोक लगेगी। दोनों देशों के बीच कितना मधुर संबंध है इसी से समझा जा सकता है कि फ्रांस ने पधानमंत्री मोदी को अपने देश का सर्वोच्च सम्मान ह्यग्रैंड क्रॉस ऑफ द लीजन ऑफ द ऑनरह्ण से सम्मानित किया।

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों भी बेहद उत्साहित दिखे और उन्होंने कहा कि विश्व इतिहास में एक दिग्गज, भविष्य में एक निर्णायक भूमिका निभाने वाला, रणनीतिक साझेदार एक मित्र का स्वागत करने पर उन्हें गर्व है। याद होगा जब 1998 में भारत ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किया तब उससे नाराज होकर दुनिया के ताकतवर मुल्क भारत पर प्रतिबंध थोपा। तब फ्रांस ने भारत के साथ कंधा जोड़ते हुए रणनीतिक समझौते को व्यापक आयाम दिया। फ्रांस लगातार भारतीय सेना को लडाकू जेट व पनडुब्बियों समेत साजो-सामान की आपूर्ति कर रहा है।

गौर करें तो 2018 के बाद से फ्रांस भारत का दूसरा सबसे बड़ा रक्षा आपूर्तिकर्ता देश बन चुका है। मौजूदा समय में भारत अपनी कुल रक्षा आयात का तकरीबन 29 फीसदी फ्रांस से करता है। दोनों देशों के बीच बढ़ती निकटता ने कारोबारी, रणनीतिक और सामरिक कुटनीति को नए क्षितिज पर पहुंचा दिया है। दोनों देश एकदूसरे के सैनिक अड्डे का इस्तेमाल और वहां अपने युद्धपोत रखने के अलावा उर्जा, तस्करी, आव्रजन, शिक्षा, रेलवे, पर्यावरण, परमाणु, आतंकवाद और अंतरिक्ष मामलों में मिलकर काम कर रहे हैं। फ्रांस आत्मनिर्भर भारत मुहिम का साझीदार बनने के साथ-साथ 2025 तक बीस हजार भारतीय छात्रों को अपने यहां पढ़ाई का सुअवसर उपलब्ध कराने का एलान पहले ही कर चुका है। दोनों देशों के बीच यूपीआई को लेकर भी सहमति बन चुकी है।

विगत 25 वर्षों के दरम्यान दोनों देशों के बीच साझेदारी और समझदारी का ही परिणाम है कि आज भारत में विदेशी निवेश के लिहाज से फ्रांस तीसरा सबसे बड़ा निवेशक देश बन चुका है। भारत में 1000 से अधिक फ्रांस की कंपनियां काम कर रही हैं और सभी कंपनियों का संयुक्त टर्नओवर तकरीबन 30 अरब डॉलर से अधिक है। विगत ढ़ाई दशकों में भारत-फ्रांस संबंध को एक नया आयाम मिला है और दोनों देश राजनीतिक, आर्थिक व सामरिक संबंधों में बेहतरी के लिए गंभीर प्रयास किए हैं । फ्रांस के नेतृत्व के दृष्टिकोण में बदलाव के साथ-साथ कुछ द्विपक्षीय बाध्यताओं ने भी दोनों देशों को एक दूसरे के निकट लाया है। यह तथ्य है कि चीन युद्ध के बाद भारत न केवल महाशक्तियों अपितु अफ्रीका व एशियाई देशों से भी अलग-थलग पड़ गया था। भारत को एक ऐसे देश के प्रति आकृष्ट होना स्वाभाविक था जिससे उसका कोई क्षेत्रीय विवाद न रहा हो। इसके अलावा 1962 में भारत व फ्रांस के बीच क्षेत्रों के हस्तांतरण संबंधी संधि के अनुमोदन ने दोनों देशों के संबंधों में मिठास घोला। तथ्य यह भी कि फ्रांस सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारतीय प्रयास का समर्थन करने वाले प्रथम देशों में से एक था। वह आज भी अपने पुराने रुख पर कायम है।

दरअसल दोनों देशों के राजनीतिक नेतृत्व में कई द्विपक्षीय तथा अंतर्राष्ट्रीय विषयों के संबंध में समान सोच है। हालांकि विदेश नीति के विरोधी अभिमुखन के कारण दोनों देशों ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के मुद्दों पर कई बार विरोधी रुख भी अपनाए हैं। मसलन हिंद-चीन क्षेत्र की स्वतंत्रता मुद्दे पर जहां भारत ने दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र की आजादी की बात पर बल दिया, वहीं फ्रांस लगातार औपनिवेशिक स्थिति बनाए रखने का पक्षधर रहा। दोनों देशों ने मोरक्को, तुनीसिया और अल्जीरिया की उपनिवेशिक स्थिति पर विरोधात्मक विचार प्रकट किए। 1956 में मिस्र द्वारा स्वेज नहर के राष्ट्रीयकरण के मुद्दे पर भी भारत ने बहुत सशक्त रुप से फ्रांस व ब्रिटेन के संयुक्त प्रयास का विरोध किया। इस संयुक्त हस्तक्षेप के विरोध में भारत ने मिस्र का साथ दिया। 1958 में डी गॉल के फ्रांस के सत्ता संभालने के बाद दोनों देशों के संबंधों में बदलाव आना शुरू हो गया। 1959 में दोनों देशों के बीच आर्थिक एवं सांस्कृतिक सहयोग विकसित करने की संधि पर हस्ताक्षर किए गए। आर्थिक संबंधों में सुधार के कारण दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने की कोशिश की तथा व्यापार के उचित आदान-प्रदान हेतु एक संयुक्त आयोग की स्थापना की।

1973 में फ्रांस के तत्कालीन अर्थव्यवस्था एवं वित्तमंत्री वेलेरी जिसकार्ड जो बाद में फ्रांस के राष्ट्रपति भी बने, की पहल पर ह्यभारत-फ्रांस अध्ययन समूहह्ण की स्थापना हुई। इस समूह की पहली बैठक फरवरी 1974 में फ्रांस में हुई तथा दूसरी बैठक मार्च 1975 में नई दिल्ली में हुई। इस समूह की सलाह पर दोनों देशों के मध्य समुद्री तेल उत्खनन, शक्ति उत्पादन व वितरण, कोयला उत्खनन व प्रयोग तथा तीसरे देश में संयुक्त उद्यम स्थापित करने संबंधित कई अहम समझौते पर हस्ताक्षर हुए। सबसे महत्वपूर्ण बात जो दोनों देशों के व्यापार में अहम है वह यह कि 1994 के बाद व्यापार संतुलन हमेशा भारत के पक्ष में बना हुआ है। सामरिक लिहाज से भी दोनों देशों के बीच परंपरागत जुड़ाव है। 1976 में फ्रांस ने भारत में मिराज एफ-1 लड़ाकू विमानों के उत्पादन हेतु उद्यम लगाने की पेशकश की। भारत की कंपनी हिंदुस्तान एरोनोटिक्स लिमिटेड बंगलौर के साथ एक बहुकार्यात्मकता व एक इंजन पर आधारित हल्का हेलीकॉप्टर बनाने का समझौता किया। निःसंदेह इस पहल से भारत की सामरिक शक्ति मजबूत हुई है और रिश्ते परवान चढ़े हैं।

सशक्त भारत का आधार है कानूनों का सरलीकरण

सुप्रीम कोर्ट की हीरक जयन्ती एक अवसर है भारतीय न्याय प्रणाली की कमियां पर मंथन करते हुए उसे अधिक चुस्त, त्वरित एवं सहज सुलभ बनाना। मतलब यह सुनिश्चित करने से है कि सभी नागरिकों के लिये न्याय सहज सुलभ महसूस हो, वह आसानी से मिले, जटिल प्रक्रियाओं से मुक्त होकर सस्ता हो। इस दृष्टि से यह अकल्पित उपलब्धियों से भरा-पूरा अवसर भारत न्याय प्रक्रिया को एक नई शक्ति, नई ताजगी, और नया परिवेश देने वाला साबित हो रहा है। क्योंकि आजादी के अमृतकाल में पहुंचने तक भारत की न्याय प्रणाली अनेक कंटिली झाड़ियों में उलझी रही है। भारतीय न्यायिक व्यवस्था का छिद्रान्वेषण करें तो हम पाते हैं कि न्यायाधीशों की कमी, न्याय व्यवस्था की खामियाँ और लचर बुनियादी ढाँचा जैसे कई कारणों से न्यायालयों में लंबित मुकदमों की संख्या बढ़ती जा रही है तो वहीं दूसरी ओर न्यायाधीशों व न्यायिक कर्मचारियों पर काम का बोझ बढ़ता जा रहा है। न्याय में देरी अन्याय कहलाती है लेकिन देश की न्यायिक व्यवस्था को यह विडंबना तेजी से घेरती जा रही है।

सुप्रीम कोर्ट की 75वं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सरकार द्वारा न्यायिक व्यवस्था को प्रभावी, आधुनिक, तकनीकी बनाने के लिये उठाये कदमों की चर्चा की। उन्होंने अप्रासंगिक हो चुके कानूनों को बदलने एवं आधुनिक अपेक्षाओं के नये कानून बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। जैसाकि खुद प्रधानमंत्री ने जिक्र किया औपनिवेशिक दौर के पुराने पड़ चुके कानूनों की जगह भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, भारतीय न्याय संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम जैसे नए कानून लाना बड़ा कदम है। हालांकि ये कानून अभी लागू नहीं हुए हैं और इनसे जुड़े कुछ पहलुओं पर पुनर्विचार की जरूरत भी महसूस की जा रही है, लेकिन फिर भी इस कदम की अहमियत को कम करके नहीं आंका जा सकता। इस कार्यक्रम में उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों में भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश, केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, अटॉर्नी जनरल वेंकटरमणी और सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता शामिल थे। अनेक कानूनविद् यहां उपस्थित थे।

सुप्रीम कोर्ट की पहली बैठक 28 जनवरी, 1950 को हुई थी, देश की न्याय प्रणाली सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्देशित होती है। इसी बात का उल्लेख करते हुए मोदी ने कहा कि यह सुनिश्चित करना हमारा काम है कि न्याय की पहुंच इस देश के हर कोने एवं हर नागरिक तक पहुंचे। इसी सोच के साथ ई-कोर्ट के तीसरे चरण को मंजूरी दी गई। पिछले साल केंद्रीय बजट में, सरकार ने ई-कोर्ट परियोजना के तीसरे चरण के लिए 7,000 करोड़ रुपये के आवंटन की घोषणा की थी - जो कि 1,670 करोड़ रुपये के पिछले आवंटन से चार गुना अधिक है। मोदी सरकार भारत की न्याय प्रणाली के आधुनिकीकरण के लिये हरसंभव सहयोग दे रही है। निश्चित ही जहां सरकार वर्तमान संदर्भ के अनुरूप कानूनों का आधुनिकीकरण कर रही है वहीं साधन-सुविधाओं को सुलभ कराने में तत्पर है। नये कानून एवं नयी आधुनिक अदालतें कल के भारत को और मजबूत करेगी। नये भारत एवं सशक्त भारत को निर्मित करने में इनकी सर्वाधिक सार्थक भूमिका होगी। सरकार अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी या स्थानीय भाषाओं में न्याय-प्रक्रिया को संचालित करने के लिये भी प्रतिबद्ध है। न्याय की सुलभता की ओर इशारा करते हुए मोदी ने पहले कही गई उस बात को दोहराया कि आदेश सरल भाषा में देने की जरूरत है। उन्होंने इस बात पर संतोष जताया कि सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद शुरू हो गया है और उम्मीद जताई कि देश की अन्य अदालतें भी इसका अनुसरण करेंगी। टेक्नोलॉजी के बढ़ते महत्व पर उन्होंने कहा, ह्लन्याय की सुगमता में टेक्नोलॉजी किस प्रकार सहायक हो सकती है, यह आज इस कार्यक्रम से ही पता चल रहा है। मेरा संबोधन अभी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से अनुवादित किया जा रहा है और लोगों द्वारा सुना जा रहा है। शुरूआत में कुछ रुकावटें आ सकती हैं, लेकिन हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं कि तकनीक कितने बड़े काम कर सकती है। इसी तरह, हमारी अदालतें हमारे नागरिकों के जीवन को आसान बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकती हैं।

सुप्रीम कोर्ट से अन्य हितधारकों की क्षमता निर्माण की दिशा में काम करना जरूरी है। सरकार ने सरकारी कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण का काम शुरू कर दिया है। निश्चित तौर पर एक मजबूत न्यायपालिका विकसित भारत की नींव के रूप में काम करेगी। मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि जन विश्वास विधेयक न्यायपालिका पर अनावश्यक बोझ को कम करने के लिए उठाया गया कदम है। एक सशक्त न्यायिक प्रणाली विकसित भारत का एक हिस्सा है। सरकार एक भरोसेमंद न्याय व्यवस्था बनाने के लिए लगातार काम कर रही है और कई फैसले ले रही है। जन विश्वास विधेयक इसी दिशा में एक कदम है। सुप्रीम कोर्ट की अगुआई में पिछले कुछ समय से न्यायपालिका में डिजिटाइजेशन पर खासा जोर दिया जा रहा है। इसी क्रम में ईकोर्ट्स मिशन के तीसरे फेज को भी मंजूरी मिल गई है, जिसमें कोर्ट के रिकॉर्ड्स के डिजिटाइजेशन समेत कई और क्षेत्रों में तकनीक का इस्तेमाल बढ़ाने का इरादा है।

ह्यईज ऑफ जस्टिसह्ण से जुड़े कुछ अन्य बेहद अहम पहलू हैं, जिन पर ध्यान देने की जरूरत है। सबसे बड़ा मसला है अदालतों में लंबित पड़े मुकदमों का। 2023 में पेंडिंग केसों की संख्या 5 करोड़ को पार कर गई। इनमें 1,69,000 मुकदमे ऐसे हैं, जो 30 साल से भी ज्यादा समय से हाईकोर्टों और जिला कोर्टों में लंबित हैं। वर्तमान में 10 लाख लोगों पर सिर्फ 18 न्यायाधीश ही है। ऐसे में किसी भी न्यायपालिका से समय पर न्याय देने की उम्मीद करना उचित नहीं हो सकता है। विधि आयोग की सिफारिश के अनुसार इन पदों की संख्या में वृद्धि किया जाना चाहिये। सुप्रीम कोर्ट में जजों के खाली पद भरने का काम हुआ है, लेकिन हाईकोर्टों में अभी भी काफी पद खाली पड़े हैं। डिपार्टमेंट ऑफ जस्टिस की वेबसाइट पर उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक देश के सभी 25 हाईकोर्टों में जजों के कुल 1,114 पद मंजूर हैं, लेकिन इन कोर्टों की मौजूदा न्यायाधीशों की संख्या 784 है यानी हाईकोर्टों में जजों के 330 पद खाली हैं।

न्याय प्रणाली में आमूल-चूल-परिवर्तन, परिवर्द्धन जरूरी है और उसे अधिक प्रभावी बनाने की अपेक्षा है। इसके लिये यह भी जरूरी है कि विशेष श्रेणी के मामलों के समाधान के लिये समय-सीमा तय की जानी चाहिये तथा लोक अदालतों और ग्राम न्यायालयों की स्थापना की जानी चाहिये। इससे न केवल विचाराधीन मामलों की संख्या में आनुपातिक कमी आएगी बल्कि न्यायपालिका के मूल्यवान समय की बचत होगी। अधीनस्थ न्यायालयों के स्तर पर सर्वोत्तम उपलब्ध प्रतिभा को आकर्षित करने के लिये अखिल भारतीय न्यायिक सेवा का गठन किया जा सकता है। यह जजों की योग्यता व गुणवत्ता में सुधार करेगा। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के कुशलतापूर्वक उपयोग से न्यायिक डेटाबेस बनाया जा सकता है। अधिवक्ताओं के लिये आचार संहिता के अनुपालन को प्रभावी बनाया जाना चाहिये ताकि मामलों को जानबूझकर विलंबित न किया जा सके। उपर्युक्त सभी बातों को देखते हुए स्पष्ट है कि भारतीय न्याय तंत्र में विभिन्न स्तरों पर सुधार की दरकार है। यह सुधार न सिर्फ न्यायपालिका के बाहर से बल्कि न्यायपालिका के भीतर भी होने चाहिये। ताकि किसी भी प्रकार के नवाचार को लागू करने में न्यायपालिका की स्वायत्तता बाधा न बन सकें। न्यायिक व्यवस्था में न्याय देने में विलंब न्याय के सिद्धांत से विमुखता है, अतः न्याय सिर्फ होना ही नहीं चाहिये बल्कि दिखना भी चाहिये।

(ललित गर्ग)
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार
ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट 25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92

खड़गे की आशंका और मोदी का डंका

@ राकेश अचल
achalrakesh1959@gmail.com

कांग्रेस अध्यक्ष श्री मल्लिकार्जुन खड़गे को आशंका है कि यदि इस साल होने वाले आम चुनाव में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी फिर आ गए तो ये देश के लिए आखरी चुनाव होंगे, क्योंकि इसके बाद मोदी जी स्वयंभू हो जायेंगे। यानि मोदी जी रूस के राष्ट्रपति पुतिन या उत्तर कोरिया के राष्ट्रपति किम जोंग या चीन के राष्ट्रपति शी पिंग के रास्ते पर जाकर देश में तानाशाही थोप देंगे। खड़गे देश के वरिष्ठ नेता हैं। वे प्रधानमंत्री मोदी जी से भी उम्र और अनुभव में बड़े हैं इसलिए उनकी आशंका को हल्के में नहीं लिया जा सकता। देश की राजनीति में पिछले एक दशक से जो उठापटक हो रही है, उसकी वजह से ऐसी आशंकाएं जन्म लेती हैं और ये बहुत स्वाभाविक है। जो आशंका देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी के मन में है वही आशंका इस देश के आम आदमी के मन में भी हो ये जरूरी नहीं है, भले ही कांग्रेस की और खड़गे जी की आशंका निर्मूल न हो। निश्चित ही देश लोकतंत्र से एक तंत्र की और बढ़ रहा है। भारतीय लोकतंत्र पूर्व में इस तरह के घटनाक्रम से कभी नहीं गुजरा। 1975 में तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने एक बार लोकतंत्र को बंधक बनाने का प्रयास करते हुए देश में आपातकाल लगाया था किन्तु उसकी उम्र भी 19 महीने से ज्यादा नहीं रही। जनता ने वापस लोकतंत्र की बहाली कर दी थी, लेकिन आज स्थितियां एकदम भिन्न हैं।

भारत में आज लोकतंत्र को चुनौती देने के लिए किसी तरह का आपातकाल नहीं लगाया गया है लेकिन सरकार की जो गतिविधियां हैं वे आपातकाल से भी जायदा खतरनाक और भयावह हैं। सरकार ने एक दशक में तमाम संवैधानिक संस्थाओं को बंधुआ बना लिया है या उन्हें बधिया [नसबंदी] कर दिया है। आम जनता को धर्म का डबल डोज देकर 'हिस्टीरिया ' पैदा करने की कोशिशें भी लगातार जारी हैं। राजनीति में तोड़फोड़ का अनूठा दौर इसी दशक की देन है। जनादेश की धज्जियां उड़ने का नया कीर्तिमान इसी दशक में बना है। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के बाद बिहार में ये खेल होते पूरी दुनिया देख रही है। कोई इस खेल को रोकने वाला नहीं है। न संविधान और न जनता। सबके सब असहाय नजर आ रहे हैं।

देश की आजादी की और संविधान की स्थापना की हीरक जयंती वर्ष को देश का अमृतकाल कहा गया लेकिन अमृत पात्र में विष भरकर दे दिया गया और किसी को कानों-कान खबर भी न हुई। अदावत की राजनीति के चलते समूचे विपक्ष को लंगड़ा –लूला बनाने के लिए कहीं बिभीषणों का सहारा लिया तो कहीं पल्टूरामों का इस्तेमाल किया जा रहा है। हालाँकि ये सब निराश करने वाला घटनाक्रम है किन्तु जब कोई कुछ कर नहीं पा रहा तो इसे खुशी–खुशी स्वीकार कर लेना ही पहला और अंतिम विकल्प लगता है, किन्तु इस देश की जनता ने अलग–अलग समय में मुगलों और अंग्रेजों की दासता को झेला है, वो इतनी आसानी से देश में तानाशाही को अपना शिकंजा नहीं कसने देगी।

ये तथ्य है कि तानाशाही दबे पांव आती है, लेकिन उसकी आहट सुनने वाले सुन ही लेते है। आज खड़गे साहब ने, उनकी कांग्रेस ने सुनी है कल पूरा देश इस आहट को सुनेगा। देश यानि आम जनता यदि अपने वोट की ताकत से तानाशाही को नहीं रोकेगी तो और कोई दूसरा रास्ता है भी नहीं। वोट का हथियार भी मानव सृजित मशीनों ने मोथरा बना दिया है। चुनाव की प्रक्रिया दूषित और अविश्वसनीय हो चुकी है। जनता जनादेश से कुछ बदलना भी चाहे तो बदल नहीं सकती। बिहार इसका ताजा उदाहरण है। बिहार की जनता ने जो जनादेश दिया था उसकी धज्जियां धर्मपरायण भाजपा और धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देने वाली जेडीयू ने मिलजुलकर उड़ा दी हैं। इन हरकतों के खिलाफ जनता कहाँ जाये ? अदालतें इस तरह के अलोकतांत्रिक क्रियाकलापों को रोकने में असमर्थ है और अयोध्या के राम मंदिर में इस तरह के मामले सुने नहीं जाते। वहां सिर्फ जयकारे लगाए जाते हैं। अयोध्या में मंदिर सरकारी है इसलिए स्वाभाविक रूप से वहां विराजे रामलला भी सरकार के ही पक्षधर हैं ।

कुल मिलाकर स्थिति गंभीर है। अब लोकतंत्र की लड़ाई गैर भाजपा दलों के साथ ही आम जनता को ही लड़नी पड़ेगी। यदि जनता चाहती है कि –देश को भाड़ में जाने दिया जाये' तो जाने दिया जाये। जनता खुद भुगतेगी। और यदि जनता चाहती है कि जो देश हमें 1947 में बनाने के लिए मिला था उसे ही बचाया और बनाया जाये तो फिर सभी को जनता के साथ खड़े हो जाना चाहिए। जनता से बड़ा कोई नहीं है। न धर्म, न कानून और न कोई तानाशाह। ये मेरी मान्यता है। इसका खड़गे की और कांग्रेस की मान्यता से कोई लेना–देना नहीं है। क्योंकि एक आम आदमी किसी गठबंधन का हिस्सा नहीं होता। उसे अपनी पसंद से अपने लिए अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार अभी तक तो हासिल है। कल जब नहीं होगा, तब की बात और है। तब मुमकिन है कि हम और आप इस विषय पर बात ही न कर पाएं।

विधायक अब्बास अंसारी समेत पांच पर गैंगेस्टर

छापेमारी में नहीं मिले आरोपी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला जेल में गैर कानूनी ढंग से पत्नी से मिलने के मामले में पूर्वांचल के माफिया मुख्तार अंसारी के पुत्र विधायक अब्बास अंसारी समेत पांच आरोपियों पर गैंगेस्टर एक्ट की कार्रवाई पुलिस ने की है। विधायक की पत्नी निखत के वाहन चालक व चित्रकूट के सपा नेता तथा कैंटीन सप्लायर भी शामिल हैं।

पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने मंगलवार को बताया कि विधायक अब्बास

अब्बास, फराज, नियाज व नवनीत।

अंसारी आदि की बाबत सूचना मिली है कि गैंग बनाकर लोगों से अवैध वसूली करने की जुगत में है। उन्होंने कहा कि जेल मामले के दर्ज मुकदमे में विधायक समेत पांच पर गैंगेस्टर लगाया है। इसे लेकर लखनऊ व चित्रकूट पुलिस टीम ने सपा नेता फराज खान व नवनीत सचान के घरों पर छापेमारी की, दोनों नहीं मिले। टीम खाली हाथ लौट गई।

बांदा जेल में बंद माफिया मुख्तार अंसारी के पुत्र विधायक अब्बास अंसारी, पत्नी निखत के वाहन चालक नियाज, सहयोगी शहबाज आलम समेत चित्रकूट के सपा नेता फराज खान व कैंटीन संचालक नवनीत सचान पर गैंगेस्टर की कार्रवाई की है।सपा नेता व कैंटीन सप्लायर को पुलिस टीम पकडने गई थी। पहले से दर्ज मामलों में गैंगेस्टर की धारायें बढ़ाई गई। सोमवार को लखनऊ-चित्रकूट पुलिस समेत एसओजी ने छापेमारी कर सपा नेता व कैंटीन सप्लायर को पकड़ने का प्रयास किया था। दुकान व घर में किसी पुरूष के न मिलने पर पुलिस ने शक के आधार पर दुकान के दरवाजे का ताला खुलवा कर जांच की, वहां कोई नहीं मिला। पुलिस ने जेल कैंटीन के पूर्व सप्लायर नवनीत सचान के घर भी पहुंची, वहां भी कोई नहीं मिला। पुलिस की कार्रवाई बाद एक साल पहले का मामला सुर्खियों में आ गया। दस फरवरी 2023 को पुलिस प्रशासन ने मुखबिर की सूचना पर जेल में छापेमारी कर जेल में बंद विधायक अब्बास अंसारी व पत्नी निखत बानो को गैर कानूनी ढंग से जेल अधिकारी कक्ष में मिलते पकड़ा था। निखत व वाहन चालक को जेल भेजा था। इस मामले में सपा नेता फराज खान व कैंटीन सप्लायर नवनीत का जेल अधिकारियों व विधायक से पत्नी को मिलाने व महंगे गिफ्ट दिलाने में सहयोग रहा है।

गैंगेस्टर न लगाते तो बाहर होता अब्बास

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह आनन-फानन में विधायक अब्बास अंसारी गैंग पर गैंगेस्टर एक्ट न लगाते तो सभी मामलों में हाईकोर्ट से उसे जमानत मिल चुकी थी, वह आज जेल से बाहर होता।

ये खुलासा खास सूत्रों ने किया है। बताया गया कि पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह को सूत्रों से जानकारी मिली थी कि जेल से विधायक अब्बास अंसारी गैंग चला रहा है। गैंग में उसके गुर्गों समेत सपा नेता फराज खान व नवनीत सचान भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। इस गैंग को छिन्न-भिन्न करने को पुलिस अधीक्षक ने गैंगेस्टर एक्ट की कार्यवाही की है। उधर, लोगों का मानना है कि लोकसभा चुनाव

एसपी अरुण कुमार सिंह।

के निकट होने के चलते जेल से बाहर निकलकर विधायक अब्बास अंसारी अपने गुर्गों के साथ चुनाव में दखल देता। अब्बास के चुनाव में दखल से रोकने व अराजक गतिविधियों को नियंत्रित करने की गरज से पुलिस ने उस पर गैंगेस्टर एक्ट लगाया है। उसे व गुर्गों को जेल तक सीमित रखने को गैंगेस्टर एक्ट की कार्यवाही की गई है।

दुष्कर्म वांछित दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में थानाध्यक्ष भरतकूप सूबेदार बिन्द की टीम ने छेडछाड, मारपीट, गाली-गलौज, जान से मारने की धमकी व दुष्कर्म के वांछित राज किशोर पुत्र रामआसरे उर्फ सुमेरा निवासी बजनीपुरवा मजरा रौली कल्याणपुर हाल पता जीरो पॉइंट कस्बा भरतकूप को गिरफ्तार किया। टीम में थानाध्यक्ष भरतकूप सूबेदार बिन्द व सिपाही राकेश कुमार शामिल रहे।

गेहूं खरीद को खुले 40 क्रय केन्द्र

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला खाद्य विपणन अधिकारी अविनाश कुमार झा ने बताया कि गेहूं खरीद के तहत सरकारी गेहूं खरीद केन्द्रों पर किसानों से 15 मार्च से 15 जून तक खरीद की जाएगी।

मंगलवार को जिलाधिकारी के अनुमोदन बाद किसानों से गेहूं खरीद करने को 40 क्रय केन्द्र खाद्य विभाग कर्वी मण्डी स्थल, पहाडी मण्डी स्थल, बरगढ़ मण्डी स्थल, बसिला मण्डी स्थल एवं मानिकपुर मण्डी स्थल व पीसीएफ संस्था के बीपैक्स परसौंजा, बीपैक्स रामपुर बांधी, बीपैक्स रैपुरा, बीपैक्स पहाडी उत्तरी, बीपैक्स चकौंध, बीपैक्स बिहरवां, बीपैक्स सरधुआ, बीपैक्स मऊ, बीपैक्स रामनगर, बीपैक्स खपटिहा, बीपैक्स गाहुर, बीपैक्स खोही, बीपैक्स छीबों, बीपैक्स नांदिन कुर्मियान, बीपैक्स इटखरी, बीपैक्स भारतपुर, क्षेसस रसिन, बीपैक्स ऐंचवारा, बीपैक्स हरदौली, बीपैक्स रामपुर कल्याणगढ़, बीपैक्स बियावल, बीपैक्स किहुनियां, पीसीएफ राजापुर, खोह, कर्वी मण्डी, खण्डेहा, बरगढ़, पूरबपताई, भदेहदू एवं घुरेटनपुर तथा भारतीय खाद्य निगम के क्रय केन्द्र रसिन मण्डी, कर्वी मण्डी, पीईजी गोदाम रंगौली, मण्डी समिति कर्वी में क्रय केन्द्र बनाये हैं। गेहूं खरीद को आनलाइन पंजीयन एक जनवरी से शुरू है। खरीद केन्द्रों में गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2275 रुपए प्रति कुन्तल है।

गांव चलो से भाजपा साधेगी लोकसभा चुनावः अनिल यादव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाजपा के गांव चलो अभियान की जिला कार्यशाला कानपुर बुन्देलखण्ड क्षेत्र के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष/ जिला प्रभारी डॉ अनिल यादव के मुख्य आतिथ्य व भाजपा जिलाध्यक्ष लवकुश चतुवेर्दी की अध्यक्षता में जिला पंचायत सभागार में हुई। कार्यशाला में अनिल यादव ने कहा कि भाजपा गांव की ओर चलेगी। गांव-गांव में भाजपाई कार्यकर्ता जनसंवाद करेंगे। भाजपा को घर-घर व जन- जन तक पहुंचाना है।

मंगलवार को कार्यशाला में मुख्य अतिथि अनिल यादव ने कहा कि भाजपा अभियानों से प्रभावी जनसंवाद कर रही है। बेहतर

कार्यशाला में बोलते अनिल यादव।

प्रबंधन से अभियान को सफलता मिलेगी। भाजपा की मूल ताकत बूथ समिति है। भाजपा निरंतर जनसम्पर्क से मजबूत हुई है। गांव चलो से पदाधिकारी गांव में 24 घंटे रहकर जनता से जुडेंगे। कार्यकर्ता लाभार्थियों से मिलकर अनुभव जानेंगे। जो नये मतदाता बने हैं, उन युवाओं को दस साल पहले की सरकारों के भ्रष्टाचार के कार्यों को बताना है। मोदी सरकार की नीतियों से महिलाओं के जीवन में आए बदलाव की चर्चा करेंगे। किसानो-गरीबों के कल्याण को किये कार्यों की चर्चा करेंगे।

जिलाध्यक्ष लवकुश चतुवेर्दी ने कार्यशाला में कहा कि गांव चलो अभियान को सभी मिलकर पूरा करें। मोदी की अगुवाई में भाजपा की पुनः सरकार बने, सभी पदाधिकारी, कार्यकर्ता पार्टी के जारी अभियानों में समर्पित सहभागिता करनी है। जिला संयोजक/जिला महामंत्री आलोक पाण्डेय ने संचालन करते हुए कहा कि भाजपा कार्यकर्ता गांव-गांव में भाजपा का विस्तार करें। गांव के प्रवासी कार्यकर्ता बूथ समिति व पन्ना प्रमुखों की बैठक कर गांव में 24 घंटे प्रवास करें।

भाजपा की डबल इंजन सरकार की विकास यात्रा के अनुभव जन-जन से साझा करना है। गांव चलो अभियान की जिला टोली में जिला सह संयोजक के बतौर अखिलेश रैकवार व श्रीमती राजेश्वरी द्विवेदी हैं। बैठक में पूर्व मंत्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय, पूर्व सांसद भैरो प्रसाद मिश्र, नगर पालिका चेयरमैन नरेन्द्र गुप्ता, ब्लाक प्रमुख अरविंद मिश्रा, सुशील द्विवेदी, गंगाधर मिश्रा, मीडिया प्रभारी भागवत त्रिपाठी ने विचार व्यक्त किये। जिला कार्यशाला में पूर्व जिलाध्यक्ष दिनेश तिवारी, शिवशंकर सिंह, जयप्रकाश पांडे, जगदीश गौतम, राजीव त्रिपाठी, तीरथ तिवारी, राजेश जयसवाल, अश्वनी अवस्थी, बृजेश पांडे, निर्मलेन्द्र पाण्डेय, हीरो मिश्रा, सुरेश अनुरागी, मनोज तिवारी, प्रेमलाल बाल्मीक, पप्पू पाल, विपुल प्रताप, बाबूलाल पटेल, अर्पित जायसवाल, संजय पाण्डेय समेत सभी मंडल अध्यक्ष, मंडल प्रभारी, मोर्चा अध्यक्ष, महामंत्री मौजूद रहे।

चोर ने कार से पार की पिस्टल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कोतवाली कर्वी के पुरानी बाजार के पास अलबेग रेस्टोरेंट से ताराचन्द्र उर्फ बंटी गुप्ता पुत्र सुरेशचन्द्र गुप्ता निवासी त्रिमुहानी थाना विध्यांचल जिला मिजार्पुर की कार से अज्ञात चोर ने लाइसेंसी पिस्टल, सोने की अंगूठी, राडो की घड़ी, कुछ दस्तावेज व 45 हजार रुपये नकद चुरा ले गये। मंगलवार को इस बाबत कोतवाली कर्वी में मामला दर्ज हुआ। जांच व सीसीटीवी फुटेज से कार से चोरी करते समय चोर का फुटेज मिला है। फुटेज में चेहरा साफ समझ में नहीं आ रहा। पुलिस ने फुटेज से चोर का वीडियो जारी कर उसे पहचानने की लोगों से अपील की है। चोर को पहचानने वाले सीओ सिटी मोनं- 9305101116, 9454401356, कर्वी कोतवाल मोनं -9305101117 व 9454403205 तथा विवेचक निरीक्षक निशिकान्त राय क्राइम ब्रांच नं- 9453809884, 8299831365 पर सम्पर्क कर जानकारी दे सकते है। इसी क्रम में जिला मुख्यालय तमाम लोग मकान किराये से देते हैं। ऐसे लोग पुलिस से सत्यापन नहीं कराते, जिसके चलते तमाम बाहरी लोग यहां आकर किराये पर मकान लेकर बस गये हैं। ऐसे लोगों का सत्यापन हो तो चोर किस्म के लोगों का खुलासा हो सकता है।

सीसीटीवी फुटेज में चोर की तस्वीर।

नाबालिक से दुष्कर्मः एक को हुई दस वर्ष की सजा, 21 हजार जुमार्ना भी हुआ

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निदेर्शों के अनुपालन में प्रभारी निरीक्षक पहाड़ी श्याम प्रताप पटेल व पैरोकार अशोक कुमार यादव की पैरवी से न्यायालय ने नाबालिक का अपहरण कर दुराचार के आरोपी को दस वर्ष की सजा व 21 हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया। मंगलवार को मॉनिटरिंग सेल प्रभारी विनोद कुमार शुक्ला की टीम की पैरवी से अपर जिला शासकीय अधिवक्ता विशेष पॉक्सो एक्ट तेज प्रताप सिंह की प्रभावी बहस के चलते न्यायालय अपर सत्र न्यायाधीश विशेष पॉक्सो एक्ट विनीत नारायण पाण्डेय ने पहाड़ी थाने में दर्ज अपहरण-दुष्कर्म, पाक्सो एक्ट के आरोपी अशोक कुमार पुत्र संतोष कुमार निवासी नोनार को दस वर्ष की सजा व 21 हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया। ज्ञात है कि 21 जुलाई 2017 को वादी ने पहाड़ी थाने में मामला दर्ज कराया था कि अशोक कुमार ने नाबालिक पुत्री का अपहरण कर दुष्कर्म किया है। पुलिस ने मामला दर्जकर विवेचना पूर्व दरोगा प्रेमचन्द्र यादव ने कर 29 नवम्बर 2017 को न्यायालय में आरोपी के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया था।

दो शव मिलने से क्षेत्र में फैली सनसनी

एसपी ने दिये खुलासे के निर्देश

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले में अलग-अलग दो स्थानों पर दो शव मिलने से सनसनी फैल गई। इनमें एक शव बुजुर्ग किसान का है। दूसरा शव दो दिन से लापता युवक का है। मंगलवार को बहिलपुरवा थाना क्षेत्र के शीतलपुर तरौंहा गांव में अनुसूचित जाति के 62 वर्षीय लालजी सवेरे शौच को खेतों में गये थे। अज्ञात लोगों ने उनकी हत्या कर दी। सूचना मिलने पर पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह पुलिस बल समेत मौके पर पहुंचे। परिजनों के अनुसार किसी से रंजिश नहीं थी।

इसी क्रम में मानिकपुर थाने के सरैंया चैकी के गढचपा गांव के मजरा भौठीपुरवा के बच्चा (32) का शव मंगलवार को दोपहर जंगल में मिलने से सनसनी फैल गई। बच्चा रविवार की रात खेत की रखवाली करने गया था। फिर वह लापता हो गया था। मंगलवार को शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। पुलिस अधीक्षक ने दोनों मामलों का खुलासा कर हत्यारोपियों को जल्द गिरफ्तार करने के निर्देश थानाध्यक्षों को दिये हैं। दोनों शव पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजे गये हैं।

पीडीए को मजबूत कर सपा को जितायें: मान सिंह

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सपा प्रवक्ता अश्वनी यादव ने पीडीए के तहत चैपाल में लोगों को जागरूक किया। कहा कि सपा मुखिया अखिलेश यादव के निर्देश पर चैपाल में जातिगत जनगणना, दलित, अति पिछड़े व अल्पसंख्यकों पर हो रहे उत्पीड़न को लेकर जागरूक किया है।

मंगलवार को जिला मुख्यालय से सटे बनकट गांव में पीडीए की लगी चैपाल में सपा प्रवक्ता अश्वनी यादव ने कहा कि सूबे के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ही प्रदेश का सही ढंग से विकास कर सकते हैं। देश को तरक्की, खुशहाली के मार्ग पर अखिलेश ही ले जा सकते हैं। ऐसे में पीडीए को सभी लोग मजबूत करें। पूर्व प्रधान माता प्रसाद कुशवाहा ने कहा कि समाजवाद से ही तरक्की का रास्ता निकल सकता है। वह कार्य सपा मुखिया अखिलेश यादव कर सकते हैं। पीडीए चैपाल में सपा जिला उपाध्यक्ष नरेन्द्र यादव, सत्येन्द्र यादव बनकट, गुलाब खान, मौलवी वर्मा, ओमकार आदि मौजूद रहे।

इसी क्रम में सपा मुखिया अखिलेश यादव के निर्देश पर सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव समेत सपाइयों ने कर्वी विधानसभा के कसहाई गांव में जन चैपाल में मुख्य अतिथि/ अम्बेडकर वाहिनी राष्ट्रीय सचिव मान सिंह पटेल, मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड जिलाध्यक्ष निजाम सिद्दकी, जिला सचिव चंदन सिंह कोरी, बूथ अध्यक्ष उमाशंकर प्रजापति व पूर्व प्रधान राम प्रसाद वर्मा, पहलाद वर्मा, मोहन वर्मा, सुनील यादव, जगमोहन, रज्जन खान, शराफत अली, महेश कोरी, अजय कोरी, गुलाब प्रजापति, छोटा प्रजापति, जालिम वर्मा, शकुंतला, नथिया देवी, कंचनिया, मखनिया की मौजूदगी में लोगों से कहा कि पीडीए को मजबूत करें।

चौपाल में पीडीए को किया जागरूक।

गैंगेस्टर में दो को हुई सजा

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निदेर्शों के अनुपालन में प्रभारी निरीक्षक मऊ राजेश कुमार द्विवेदी व पैरोकार दीवान आनन्द कुमार की पैरवी से न्यायालय ने गैंगेस्टर के दो आरोपियों को दो-दो वर्ष की सजा व पांच-पांच हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया। मंगलवार को सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता सनद कुमार मिश्रा प्रभावी बहस के चलते न्यायालय अपर सत्र न्यायाधीश/ एफटीसी न्यू सुशील कुमार वर्मा ने मऊ थाने में दर्ज गैंगेस्टर एक्ट के आरोपी कमलेश केवट पुत्र शम्भू केवट निवासी बम्बुरा व मंगल केवट पुत्र लालमन केवट निवासी खुस्सू का डेरा मजरा रेड़ी भुसौली को दो-दो वर्ष की सजा व पांच-पांच हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया है। ज्ञात है कि 31 जनवरी 2006 को पूर्व थानाध्यक्ष सुमेश्वर सिंह ने मऊ थाने में कमलेश केवट व मंगल केवट आदि पर गैंगेस्टर एक्ट दर्ज किया था।

कोतवाल की पैरवी लाई रंगः दुष्कर्म में एक हो हुई सात वर्ष की सजा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निदेर्शों के अनुपालन में कर्वी कोतवाल अजीत कुमार पाण्डेय व पैरोकार अमरेन्द्र प्रताप सिंह तथा मॉनिटरिंग सेल प्रभारी विनोद कुमार शुक्ला की टीम की पैरवी से न्यायालय ने नाबालिक का अपहरण कर दुष्कर्म आरोपी को सात वर्ष की सजा व दस हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया।

मंगलवार को अपर जिला शासकीय अधिवक्ता विशेष पॉक्सो एक्ट तेज प्रताप सिंह की प्रभावी बहस के चलते न्यायालय अपर सत्र न्यायाधीश विशेष पॉक्सो एक्ट विनीत नारायण पाण्डेय ने कोतवाली कर्वी में दर्ज मामले में निक्की बौरिया उर्फ शुभम पुत्र गया प्रसाद बौरिया निवासी पसियाना मुहल्ला को सात वर्ष की सजा व दस हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया है।

ज्ञात है कि 15 फरवरी 2017 को वादिया ने कोतवाली कर्वी में रिपोर्ट लिखाई कि निक्की बौरिया उर्फ शुभम ने नाबालिक बहन को बहला-फुसला कर भगाकर ले जाकर दुष्कर्म किया है। पुलिस ने मामला दर्जकर विवेचना पूर्व दरोगा द्वारिका प्रसाद निरंजन ने कर 28 फरवरी 2017 को आरोपी को गिरफ्तार कर 25 अगस्त 2017 को न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था।

तुम मेरे शरीर को मार सकते हो, विचार नहीं: रामप्रसाद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाकपा ने महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर भाकपा कैंप कार्यालय में गांधी की हत्या के पीछे कौन सी विचारधारा थी- पर पूर्व विधायक का रामप्रसाद सिंह ने गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कहा कि आज गांधी के बारे में सोच-समझकर उनका कद कम करने की साजिश हो रही है। गांधी ने कहा था कि तुम मेरे शरीर को मार सकते हो, मेरे विचार को नहीं।

मंगलवार को गोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता सीपीआई जिला सचिव का अमित यादव एड ने कहा कि गांधी एक दर्शन व विचार हैं। विश्व गुरु भारत में गांधी की बाबत बात करना कठिन हो गया है। गांधी दर्शन के साथ प्राचीन मूल्यों की रक्षा करना आसान नहीं रहा। गोडसे गैंग घोर साम्प्रदायिक थे, ने गोली मारी तो वे हे-राम बोले- मतलब आज का रामराज नहीं, एक ईश्वरीय रामराज की परिकल्पना थी।

आज के दौर में स्वतंत्र रूप से न लिख सकते हैं, न बोल सकते हैं और न जी सकते हैं। यहां तक कि अपने व दूसरों के हक को आवाज उठा सकते हैं। गोष्ठी में का चंद्रपाल पाल, सुशील सिंह, रवि करण, कमलेश, महेंद्र सिंह समेत साथियों ने गांधी चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर हनुमान, शिवबरन, शिवनरेश सिंह, राजधर विश्वकर्मा, बल्देव भाई, रामस्वरूप, बिहारीलाल, रामकिशोर, रामभज, शिवमंगल समेत दर्जनों लोग मौजूद रहे।

गांधी पर गोष्ठी करते भाकपाई।

देश में भ्रष्टाचार के खिलाफ राहुल उठा रहे आवाजः रंजना

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कांग्रेस जिला कमेटी ने महात्मा गांधी के शहादत दिवस पर रंजना बरातीलाल पांडे के आवास पर जिला उपाध्यक्ष रंजना बरातीलाल पांडे की अध्यक्षता में कांग्रेसियों ने गांधी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर याद किया।

मंगलवार को संवाद कार्यक्रम में सेवादल अध्यक्ष चुनबाद प्रसाद ने कहा कि देश विषम हालातों से गुजर रहा है। लोकतंत्र संविधान खतरे में है, सभी कांग्रेसियों को एकजुट होकर संविधान व लोकतंत्र की रक्षा करना है। जिला उपाध्यक्ष अवधेश करवरिया ने कहा कि मौजूदा सरकार जिस ढंग से संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग कर रही है, एकाधिकार कर रही है, उसके विरोध में गांव-गांव में कांग्रेस को मजबूत करना है। जिला उपाध्यक्ष प्रशासन रंजना बरातीलाल पांडे ने कहा कि सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले महापुरुष राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की शहादत पर संकल्प लें कि मौजूदा भाजपा सरकार को 2024 में सत्ता से बाहर करें। राहुल गांधी के भारत जोड़ो में न्याय यात्रा लेकर मणिपुर से महाराष्ट्र तक संदेश पहुंचाना है। उप्र में भारत जोड़ों न्याय यात्रा प्रवेश करें तो भारी तादाद में यात्रा को सफल बनाना है। तानाशाही के खिलाफ केवल कांग्रेस देश में संघर्ष कर रही है। महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार के खिलाफ राहुल गांधी ही आवाज उठा रहे हैं। इस मौके पर कांग्रेस नेता अनिल गुप्ता, राकेश वर्मा, तीरथ सिंह, कालीचरण राजपूत, राजनारायण निषाद, यमुना शुक्ला, विजयमणि त्रिपाठी, महेंद्र निषाद, सविता पाल, ओमप्रकाश गुप्ता, राजेश सिंह, प्रदीप सिंह, अजीत शुक्ला, मानवेंद्र पटेल, अजय द्विवेदी, देव कुमार त्रिपाठी, कामता प्रसाद द्विवेदी, जगजाहिर पटेल, शिवशंकर खंगार, आशीष मिश्रा, शुभम त्रिपाठी, नवीन कुमार, हरिओम पांडे, रामेश्वर गौतम आदि मौजूद रहे।

गांधी की शहादत पर बोलती कांग्रेस नेत्री।

इमरान खान और महमूद कुरैशी को साइफर केस में 10 साल की सजा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में आज मुल्क के पूर्व प्रधानमंत्री और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान और पार्टी के नेता एवं पूर्व विदेशमंत्री शाह महमूद कुरैशी को साइफर केस में 10 साल जेल की सजा सुनाई गई। रावलपिंडी के स्पेशल कोर्ट के जज अबुल हसनत जुल्करनैन ने अदियाला जेल में इसका ऐलान किया।

पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और कुरैशी की मौजूदगी में जज ने यह फैसला सुनाया। पिछले साल से ही इस केस की सुनवाई अदियाला जेल में चल रही थी। उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान में आठ फरवरी को आम चुनाव हैं। ऐसे में नौ दिन पहले आया यह फैसला इमरान खान के राजनीतिक करियर के

लिए खतरनाक हो सकता है। साइफर का मतलब होता है सीक्रेट कीवर्ड में लिखा गया संदेश। साइफर गुप्त और प्रतिबंधित संदेश होता है। यह डिप्लोमेटिक कम्युनिकेशन का हिस्सा होता है। दो देशों के बीच होने वाली कई तरह की बातचीत को गुप्त रखा जाता है।

संघीय जांच एजेंसी के आरोप पत्र में कहा गया है कि इमरान ने इस संदेश को वापस नहीं किया। पीटीआई लंबे समय से कह रही है कि इस संदेश में इमरान को प्रधानमंत्री पद से हटाने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर से धमकी दी गई थी। इमरान और कुरैशी चुनाव से पहले जेल में बंद हैं। इमरान खान की उम्मीदवारी भी खारिज हो चुकी है। कुरैशी को जरूर चुनाव लड़ने की छूट मिली है लेकिन आज की सजा का मतलब है कि दोनों अगले पांच साल तक चुनाव नहीं लड़ पाएंगे।

इमरान खान को पिछले साल पांच अगस्त को तोशाखाना मामले में भी दोषी ठहराते हुए तीन साल की कैद की सजा सुनाई गई थी। पूर्व विदेशमंत्री कुरैशी को पहली बार सजा सुनाई गई है। रावलपिंडी स्पेशल कोर्ट के जज ने सुनवाई की शुरूआत में इमरान और कुरैशी को आपराधिक प्रक्रिया संहिता की धारा 342 (आरोपी से पूछताछ करने की शक्ति) के तहत एक प्रश्नावली दी। इमरान ने इस पर अपना बयान दर्ज कराया। इसके बाद उनसे गुप्त संदेश के बारे में पूछा। उस पर उन्होंने जवाब दिया: ह्यमैंने अपने बयान में वही कहा है जो मुझे नहीं पता है। गुप्त संदेश मेरे कार्यालय में था।" इसके बाद जज ने मामले में दोनों को 10 साल जेल की सजा सुनाई।

अबेई में हिंसा, 54 लोगों की गई जान, संरा महासचिव ने जताई चिंता

खार्तूम (सूडान)। संयुक्त राष्ट्र अंतरिम सुरक्षा बल ने कहा है कि सूडान और दक्षिण सूडान के बीच तेल समृद्ध क्षेत्र अबेई में अंतर-सांप्रदायिक हिंसक झड़पों में 52 नागरिक और दो शांति सैनिक मारे गए । संयुक्त राष्ट्र अंतरिम सुरक्षा बल अबेई की विज्ञप्ति में कहा गया है कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेश अबेई प्रशासनिक क्षेत्र में सप्ताहांत में हुई हिंसा से चिंतित हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेश ने कहा है कि अबेई में संयुक्त राष्ट्र अंतरिम सुरक्षा बल पर हुए हमले में दो शांति सैनिकों ने कर्तव्य की पंक्ति में अपना जीवन बलिदान कर दिया। कर्तव्य पथ पर अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले शांति रक्षकों में एक पाकिस्तान और एक घाना का है। महासचिव ने

मृतकों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने हिंसा की निंदा करते हुए अपराधियों को न्याय के कठघरे में लाने का आह्वान किया है। संयुक्त राष्ट्र अंतरिम सुरक्षा बल की विज्ञप्ति के अनुसार, अबेई में जारी हिंसा में शनिवार को एक और संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षक की मौत हो गई। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र शांति सेना की स्थापना 2011 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा विवादित अबेई क्षेत्र की निगरानी के लिए की गई थी। इस समय सूडान और दक्षिण सूडान की सीमा पर 5,326 शांति सैनिक तैनात हैं। संयुक्त राष्ट्र अंतरिम सुरक्षा बल अबेई ने आसन्न खतरे के मद्देनजर सभी व्यक्तियों को अपने कुछ शिविरों में शरण लेने की अनुमति दी है।

पाकिस्तान में चुनाव से पहले हिंसा का दौर, कराची में गोलीबारी में 1 की मौत, 3 घायल

कराची। पाकिस्तान में 8 फरवरी को होने वाले आम चुनाव से पहले कराची में पिछले कुछ दिनों में चुनावी हिंसा बढ़ गई है। इस वजह से राष्ट्रीय और प्रांतीय विधानसभा सीटों के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे दलों के बीच पहले से ही कई झड़पें हो चुकी हैं। ताजा घटनाक्रम में सोमवार को नाजिमानाड में हिंसक झड़पें हुईं, जिसमें पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के कार्यकताओं के साथ गोलीबारी के दौरान मुत्तहिदा कौमी मूवमेंट (एमक्यूएम पाकिस्तान) के एक कार्यकर्ता की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। इससे एक दिन पहले रविवार को क्लिफ्टन इलाके में जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी की एक चुनावी रैली पर पुलिस की भारी टुकड़ियों ने लाठीचार्ज किया, आंसू गैस के गोले दागे और जबरन तितर-बितर कर दिया। इस उपद्रव में कुछ पुलिसकर्मियों समेत कम से कम 25 लोग घायल हो गये।

दक्षिणी सिंध प्रांत, विशेष रूप से कराची - जो पाकिस्तान का वित्तीय केंद्र भी है, पर पीपीपी के गढ़ को एक चुनौती का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि आगामी चुनावों में विभिन्न पार्टियां जमकर प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। बिलावल जरदारी-भुट्टो के नेतृत्व वाली पीपीपी की सिंध और कराची पर पकड़ तब भी बनी हुई है, जब खान के नेतृत्व वाली पीटीआई ने 2018 में पिछले चुनावों में सरकार बनाई थी और अविश्वास प्रस्ताव के बाद 2022 में शाहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार के गठन के दौरान भी पीटीआई शासन को समाप्त कर दिया। पूर्व निर्वाचित एमक्यूएम सदस्यों और उससे अलग हुए समूहों के साथ-साथ स्वतंत्र उम्मीदवारों के रूप में चुनाव लड़ रहे पीटीआई सदस्यों की भागीदारी से कराची में चुनाव पूर्व हिंसा तेज हो गई है। पिछले सप्ताह चुनाव प्रचार शुरू होने के बाद से विभिन्न क्षेत्रों में पीपीपी, पीटीआई और एमक्यूएम-पी के समर्थकों के बीच झड़प की खबरें सामने आई हैं।

राष्ट्रपति बाइडन ने कहा, हमले का दिया जाएगा जवाब, ईरान से युद्ध नहीं चाहता अमेरिका

वाशिंगटन। जार्डन में अमेरिकी सैनिकों पर हमले के बाद व्हाइट हाउस ने सोमवार को कहा कि अमेरिका ईरान के साथ या क्षेत्र में व्यापक युद्ध नहीं चाहता। अमेरिकी प्रशासन का मानना है कि जॉर्डन में अमेरिकी सैनिकों को निशाना बनाने के लिए एक ड्रोन जिम्मेदार था। वहीं, जॉर्डन मामले को लेकर राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि अमेरिका इसका जवाब देगा। बाइडन ने साउथ कैरोलिना में कहा कि पश्चिम एशिया में हमारे लिए पिछली रात काफी कठिन गुजरी। हमने अपने तीन बहादुर सैनिकों को खो दिया। वहीं जार्डन में अमेरिकी सैन्य ठिकाने पर ड्रोन से हमले में तीन अमेरिकी सैनिकों की मौत पर ईरान के विदेश मंत्रालय ने जवाब दिया है। मंत्रालय का कहना है कि हमले में तेहरान का कोई हाथ नहीं है। उन्होंने कहा कि संघर्षरत समूह अपने खुद के सिद्धांत और प्राथमिकता के आधार पर फैसला लेते हैं। वह फलस्तीन

और वहां के लोगों का किस तरह समर्थन करेंगे यह फैसला उनका अपना है।

उन्होंने कहा कि अमेरिका अपने चुने गए तरीके और समय के हिसाब से उन्हें जवाबदेह ठहराएगा। इस बीच पूर्वी सीरिया में ईरान समर्थित आतंकियों की ओर से अपने ठिकानों को खाली कर दूसरी जगह जाने की बात सामने आ रही है। उन्हें भय है कि अमेरिका हवाई हमले कर उन्हें निशाना बनाएगा। ये क्षेत्र मयादीन और बौकामल के गढ़ हैं।गौरतलब है कि सात अक्टूबर के बाद इजरायल और हमास के बीच युद्ध छिड़ने के बाद से ईरान समर्थित आतंकियों की ओर से अमेरिकी सेना पर हमले बढ़ गए हैं। ये समूह इजरायल के गाजा पर हमले का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने युद्ध शुरू होने के बाद से अमेरिकी सैनिकों पर 150 से अधिक हमले किए हैं। पहला बड़ा हमला 18 अक्टूबर को इराक में मौजूद अमेरिकी सैनिकों पर बोला गया था। इसके बाद लगातार हमले जारी हैं। रविवार को किए गए घातक हमले से पहले 20 जनवरी को बड़ा हमला बोला गया था। इसमें ईरान के मिलिशिया समूह ने इराक में मौजूद अमेरिकी हवाई बेस पर कई मिसाइलें दागी थीं।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने सोमवार को कहा कि वह पश्चिम एशिया में तनाव को लेकर चिंतित हैं। उन्होंने सीरिया सीमा के पास पूर्वोत्तर जार्डन में अमेरिकी सैनिकों पर हुए हमले के बाद ईरान से तनाव कम करने का आग्रह किया है। सुनक ने कहा कि ब्रिटेन ड्रोन हमलों की च्नदा करता है। सुनक ने कहा कि हम क्षेत्र में स्थिरता और शांति के लिए अपने सहयोगियों के साथ द्रढ़ता से खड़े हैं।

काबुल में क्षेत्रीय सम्मेलन में भारत समेत 10 देश हुए शामिल

भारत समेत लगभग 10 देशों ने सोमवार को काबुल में तालिबान द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में भाग लिया. अफगान मीडिया के मुताबिक भारत उन 10 देशों में शामिल था, जिन्होंने क्षेत्रीय सहयोग के व्यापक उद्देश्य के साथ सोमवार को काबुल में तालिबान द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में भाग लिया. भारत ने अभी तक तालिबान की स्थापना को मान्यता नहीं दी है और काबुल में एक समावेशी सरकार के गठन की वकालत कर रहा है. विदेश मंत्रालय की ओर से बैठक पर कोई आधिकारिक बयान नहीं आया. भारत की तरफ से इस बैठक में दो प्रतिनिधि शामिल हुए.

अफगानिस्तान की समाचार एजेंसी खामा प्रेस ने बताया कि इस सम्मेलन में भाग लेने वाले देशों में भारत, कजाख्स्तान, तुर्की, रूस, चीन, ईरान, पाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, इंडोनेशिया और किर्गिस्तान शामिल थे. सम्मेलन में रूस का प्रतिनिधित्व अफगानिस्तान के लिए उसके विशेष प्रतिनिधि जमीर काबुलोव ने किया.

"क्षेत्रीय सहयोग पहल" बैठक को तालिबान शासन के कार्यवाहक विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी ने संबोधित किया. तालिबान के विदेश मंत्रालय के एक बयान में कहा गया है कि उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन देशों को अफगानिस्तान के साथ सकारात्मक बातचीत बढ़ाने और जारी रखने के लिए क्षेत्रीय बातचीत करनी चाहिए.

उन्होंने तालिबानी सरकार पर लगी पाबंदियों को हटाने की भी मांग की. 2021 में तालिबान के सत्ता में लौटने के बाद भारत समेत कई देशों ने अफगानिस्तान से सभी कूटनीतिक संबंध तोड़ लिए थे.

तालिबान विदेश मंत्रालय के उप प्रवक्ता हाफिज जिया अहमद ने बैठक में शामिल हुए भारतीय प्रतिनिधि के हवाले से कहा कि भारत अफगानिस्तान में स्थिरता लाने को लेकर होने वाली सभी पहलों का समर्थन करता है. अहमद एक्स पर एक पोस्ट में भारतीय प्रतिनिधियों के हवाले से लिखा, "भारत अफगानिस्तान से जुड़ी अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय पहलों में सक्रिय रूप से भाग लेता है और अफगानिस्तान की स्थिरता और विकास के लिए के लिए हर प्रयास का समर्थन करता है." सम्मेलन में मुत्तकी ने माना कि अफागनिस्तान में बरसों की घुसपैठ और अंदरूनी संघर्ष को लेकर कई तरह की चुनौतियां हैं पर वो इनका समाधान चाहते हैं. मुत्तकी ने सम्मेलन में भाग लेने वाले देशों से क्षेत्र के विकास के लिए अफगानिस्तान में उभरते अवसरों का लाभ उठाने और "संभावित खतरों के प्रबंधन में समन्वय" करने का आग्रह किया. वहीं इससे पहले संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में भारतीय दूतावास द्वारा अबू धाबी में गणतंत्र दिवस समारोह के लिए कार्यवाहक अफगान दूत बदरुद्दीन हक्कानी को आमंत्रित किया गया था. मीडिया में एक सरकारी सूत्र के हवाले से कहा गया था कि निमंत्रण उस देश में स्थित सभी मान्यता प्राप्त मिशनों को भेजा गया था और यह मानक राजनयिक प्रक्रिया का हिस्सा था. जून 2022 में भारत ने अफगानिस्तान की राजधानी में अपने दूतावास में एक "तकनीकी टीम" तैनात करके काबुल में अपनी राजनयिक उपस्थिति फिर से स्थापित की थी. तालिबान द्वारा सत्ता पर कब्जा करने के बाद उनकी सुरक्षा पर चिंताओं के बाद भारत ने दूतावास से अपने अधिकारियों को वापस बुला लिया था.

प्रिंसेस केट मिडलटन दो सप्ताह बाद अस्पताल से लौटी, किंग चार्ल्स के प्रोस्टेट का हुआ इलाज

लंदन। वेल्स की राजकुमारी केट मिडलटन सर्जरी के दो सप्ताह के बाद अस्पताल से वापस लौट आई हैं। यह जानकारी केंसिंग्टन पैलेस ने एक बयान में जानकारी दी। वहीं किंग चार्ल्स तृतीय भी प्रोस्टेट के इलाल के बाद अस्पताल से वापस लौट आए हैं। बयान में कहा गया प्रिंस विलियम की 42 वर्षीय पत्नी केट लंदन की क्लिनिक में एक अज्ञात बीमारी की सर्जरी के बाद घर वापस आ गईं। केट सर्जरी के बाद बेहतर महसूस कर रही हैं। हालांकि केट की बीमारी में कोई जानकारी नहीं दी गई है लेकिन यह यह कहा गया कि यह बीमारी कैंसर नहीं थी। लंदन की इस क्लिनिक में शुक्रवार को किंग चार्ल्स का भी प्रोस्टेट का इलाज हुआ है। चार्ल्स ने यहां तीन रातें बिताईं। इसके अलावा किंग चार्ल्स की पत्नी कैमिला भी यहां नियमित रूप से आती रहती थीं। केंसिंग्टन पैलेस ने कहा कि केट अब लंदन के पश्चिम में विंडसर एस्टेट स्थित घर पर

वापस आ गई हैं। उनके स्वास्थ्य में अच्छी प्रगति हो रही है। राजकुमार और राजकुमारी लंदन क्लिनिक की पूरी टीम, विशेष रूप से नर्सिंग स्टाफ को उनके द्वारा की गई देखभाल के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहते हैं।"

वहीं, राजकुमारी केट ईस्टर के बाद तक सार्वजनिक तौर पर नहीं लौट पाएंगी। उनके पति प्रिंस विलियम ब्रिटिश सिंहासन के उत्तराधिकारी हैं। उन्होंने अपने तीन बच्चों, दस साल के प्रिंस जॉर्ज, आठ साल की प्रिंसेस चार्लोट, और पांच साल के प्रिंस लुइस की देखभाल के लिए अपने कार्यक्रमों को स्थगित कर दिया। वहीं ब्रिटेन के महाराजा चार्ल्स तृतीय को ह्यप्रोस्टेटह्ल के उपचार के बाद सोमवार को अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। निजी लंदन क्लिनिक से बाहर निकलते हुए 75 वर्षीय चार्ल्स ने मुस्कुराते हुए जनता की ओर हाथ हिलाया। इस दौरान उनके साथ महारानी कैमिला पार्कर भी थीं। चार्ल्स ने अस्पताल में तीन रातें बिताईं और रविवार को महारानी ने उनसे दो बार मुलाकात की। चार्ल्स शुक्रवार को अस्पताल में भर्ती हुए थे। रविवार अपराह्न कार से मध्य लंदन स्थित ह्यद लंदन क्लिनिकह्ल पहुंची कैमिला करीब तीन घंटे से अधिक समय बाद अस्पताल से निकलते समय मुस्कुराई। बकिंघम पैलेस द्वारा जारी एक बयान में कहा गया कि चार्ल्स ने ह्वपूरी तरह से ठीक होने तक चार्ल्स ने आगामी सभी सार्वजनिक कार्यक्रमों को पुनर्निर्धारित कर दिया है। बयान के मुताबिक, चार्ल्स ने अस्पताल में अपने बिताए वक्त और उपचार में शामिल सभी लोगों को धन्यवाद दिया और कहा कि हाल के दिनों में उन्हें प्राप्त हुए सभी संदेशों के लिए वह आभारी हैं।

पूर्वी भू-मध्य सागर मार्ग पर 2024 की घातक शुरूआत, 100 लोगों ने गंवाई जान

जिनेवा। इस साल की शुरूआत पूर्वी भू-मध्य सागर मार्ग पर मानवीय क्षति के लिए घातक रही। जनवरी में इस मार्ग पर 100 लोगों ने जान गंवाई या लापता हो गए। यह खुलासा संयुक्त राष्ट्र प्रवासन एजेंसी (इंटरनेशनल ऑगेर्नाइजेशन फॉर माइग्रेशन 'आईओएम') ने किया है। एजेंसी के अनुसार, 2023 की समान अवधि, 2016 के बाद से यूरोप में समुद्र में प्रवासियों के लिए यह सबसे घातक वर्ष है।

एजेंसी की विज्ञप्ति के अनुसार,

आईओएम की महानिदेशक एमी पोप ने प्रवासियों की सुरक्षा पर रोम में आयोजित इटली-अफ्रीका सम्मेलन में दिए अपने वक्तव्य में इस पर चिंता जताई है। इस सम्मेलन में इटली के प्रधान मंत्री जियोर्जिया मेलोनी और यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन सहित 20 से अधिक राष्ट्राध्यक्ष और प्रधानमंत्री भाग ले रहे हैं।

एमी पोप ने कहा, "इटली-अफ्रीका सम्मेलन खतरनाक मार्गों पर मानव जीवन के अनावश्यक नुकसान को रोकने और यात्रा करने वाले लोगों की सुरक्षा के लिए एकीकृत और टिकाऊ तंत्र पर चर्चा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।" यूएन एजेंसी के अनुसार, इटली का लक्ष्य सहयोग, विकास और समान साझेदारी के मॉडल के माध्यम से यूरोप और अफ्रीका के बीच एक पुल के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत करना है। पिछले छह हफ्तों के भीतर लीबिया, लेबनान और ट्यूनीशिया से 158 लोगों को ले जाने वाले तीन जहाजों का पता नहीं चल पाया है। इनमें से 73 लोगों को लापता और मृत मान लिया है।

एजेंसी ने कहा है कि बुधवार को अधिकारियों ने साइप्रस के केप ग्रीको से 62 प्रवासियों के एक समूह को बचा लिया। इन लोगों ने 18 जनवरी को लेबनान छोड़ा था। अधिकांश अस्पताल में भर्ती हैं और उन्हें गंभीर रूप से बीमार बताया गया है। कई बच्चों की हालत गंभीर है। अब तक एक बच्चे की मौत हो चुकी है। माना जाता है कि हाल के दिनों में अंतायला, तुर्किये में तट पर आए सात शव 11 दिसंबर को लेबनान से रवाना होने के बाद से लापता 85 प्रवासियों के समूह के हैं। आईओएम के मिसिंग माइग्रेंट्स प्रोजेक्ट के अनुसार, पूरे भू- मध्य सागर में प्रवासी मौतों और लापता होने की वार्षिक संख्या 2021 में 2,048, 2022 में 2,411 और 2023 में 3,041 है।

भारतीय नागरिक ने अमेरिका में डार्क वेब के जरिये मादक पदार्थ बेचने का आरोप स्वीकारा

वाशिंगटन। अमेरिका में डार्क वेब के माध्यम से खतरनाक मादक पदार्थ बेचने के आरोप को 40 वर्षीय भारतीय नागरिक के स्वीकार करने के बाद मुश्किलें बढ़ गई है। ब्रिटेन से प्रत्यर्पित भारतीय नागरिक बनमीत सिंह इसके साथ ही क्रिप्टोकरेंसी में लगभग 15 करोड़ अमेरिकी डॉलर पर अपना अधिकार छोड़ देगा। अमेरिकी न्याय विभाग ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि अदालत के दस्तावेजों के अनुसार, उत्तराखंड के हल्द्वानी के बनमीत सिंह ने फेंटेनाइल, एलएसडी, एक्स्टसी, जैनैक्स, केटामाइन और ट्रामाडोल सहित नियंत्रित पदार्थों को बेचने के लिए डार्क वेब मार्केटप्लेस पर विक्रेता विपणन साइट बनाईं। विज्ञप्ति में कहा गया है कि ग्राहकों ने इन साइट का उपयोग करके और क्रिप्टोकरेंसी के माध्यम से भुगतान करके बनमीत सिंह से नियंत्रित पदार्थ का ऑर्डर दिया। विज्ञप्ति में कहा गया है कि इसके बाद सिंह ने व्यक्तिगत रूप से यूएस मेल या अन्य शिपिंग सेवाओं के माध्यम से यूरोप से अमेरिका तक दवाओं को भेजा या इसी व्यवस्था की। न्याय विभाग के आपराधिक प्रभाग के कार्यवाहक सहायक अटॉर्नी जनरल निकोल एम अर्जेंटीना ने कहा, बनमीत सिंह और उनके जैसे तस्कर सोचते हैं कि वे डार्क वेब पर गुमनाम रूप से काम कर सकते हैं और सजा से बच सकते हैं। इस दोष स्वीकारोक्ति याचिका में लगभग 15 करोड़ अमेरिकी डॉलर पर अधिकार छोड़ना शामिल है जो क्रिप्टोकरेंसी में है। यह अर्जी यह दशार्ती है कि न्याय विभाग अमेरिकी कानून का उल्लंघन करने वाले अपराधियों को जवाबदेह ठहराएगा, चाहे वे अपनी गतिविधि कैसे भी छिपायें। अप्रैल 2019 में बनमीत को लंदन में गिरफ्तार किया गया था और 2023 में उसे अमेरिका प्रत्यर्पित किया गया। उसे आठ वर्ष जेल की सजा भुगतनी होगी। हालांकि सजा को लेकर अभी कोई तिथि निर्धारित नहीं की गई है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।